बैंक ऑफ़ बड़ौदा
Bank of Baroda
विजया VIJAYA | देना DENA

अक्षय्यम्

अक्तूबर – दिसंबर 2020

BNOWW
बॉब नाऊ (BOB-NOWW)

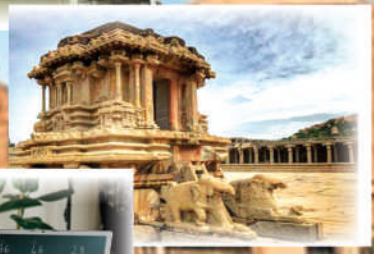

बैंक ऑफ़ बड़ौदा की हिन्दी पत्रिका

संसदीय राजभाषा समिति की आलेख एवं साक्ष्य उपसमिति द्वारा 'विचार – विमर्श' कार्यक्रम का आयोजन

17 नवंबर 2020 को संसदीय राजभाषा समिति की आलेख एवं साक्ष्य उपसमिति द्वारा दिल्ली नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति के –10– सदस्य बैंकों के कार्यालय प्रमुखों के साथ 'विचार – विमर्श' कार्यक्रम का आयोजन किया गया. कार्यक्रम में अंचल प्रमुख, दिल्ली अंचल श्रीमती सम्मिता सचदेव ने अंचल कार्यालय का प्रतिनिधित्व किया. बैठक की अध्यक्षता माननीय सांसद (लोक सभा) श्री भर्तहरि महताब ने की. माननीय सांसद श्री भर्तहरि महताब जी ने समिति के अन्य सदस्यों – माननीय सांसद (राज्य सभा) श्री राम गोपाल यादव, सांसद (लोक सभा) श्री श्रीरंग आप्पा बारणे, सांसद (राज्य सभा) श्री प्रदीप टम्टा के साथ सभी –10– बैंकों की समीक्षा की.

प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी की अध्यक्षता में तिमाही राजभाषा बैठक संपन्न

बैंक के प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी श्री संजीव चड्ढा की अध्यक्षता में दिनांक 05 दिसंबर, 2020 को बैंक की केंद्रीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की तिमाही बैठक का आयोजन किया गया. इस अवसर पर बैंक के कार्यपालक निदेशकगण श्री मुरली रामास्वामी, श्री शांतिलाल जैन, श्री विक्रमादित्य सिंह खीची, श्री अजय के खुराना, मुख्य महाप्रबंधकगण, महाप्रबंधकगण तथा उच्च कार्यपालक उपस्थित रहे. इस बैठक में बैंक में तिमाही के दौरान राजभाषा कार्यान्वयन की संक्षिप्त प्रस्तुति और भविष्य में बेहतर राजभाषा कार्यान्वयन की दिशा पर विस्तृत चर्चा की गई. महाप्रबंधक (राजभाषा, संसदीय समिति एवं का.प्र) श्री के आर कनोजिया ने राजभाषा विभाग की ओर से महत्वपूर्ण प्रस्तुति दी.

बैंक ऑफ़ बड़ौदा Bank of Baroda

अक्षय्यम्

बैंक ऑफ़ बड़ौदा की तिमाही हिन्दी पत्रिका

वर्ष – 17 ✻ अंक – 64 ✻ अक्तूबर – दिसंबर 2020

कार्यकारी सम्पादक
वेणुगोपाल मेनन
मुख्य महाप्रबंधक (राजभाषा, संसदीय समिति एवं का.प्र.)

सम्पादक
पारुल मशर
सहायक महाप्रबंधक (राजभाषा)

सहायक सम्पादक
अम्ब्रेश रंजन कुमार
वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा)

अमित बर्मन
प्रबंधक (राजभाषा)

–: संपर्क :–
राजभाषा विभाग
बैंक ऑफ़ बड़ौदा, बड़ौदा भवन,
पांचवी मंजिल, आर सी दत्त रोड
अलकापुरी, बड़ौदा – 390007
फोन : 0265-2316580
ईमेल : rajbhasha.ho@bankofbaroda.com
bobakshayyam@gmail.com

बैंक ऑफ़ बड़ौदा के लिए **पारुल मशर**, सहायक महाप्रबंधक (राजभाषा) द्वारा बड़ौदा भवन, बैंक ऑफ़ बड़ौदा, पांचवी मंजिल, आर सी दत्त रोड, अलकापुरी, बड़ौदा – 390007 से संपादित एवं प्रकाशित.

रुपांकन एवं मुद्रण
जयंत प्रिन्टरी एलएलपी, मुंबई
प्रकाशन तिथि : 12-02-2021

अनुक्रमणिका

इस अंक में

प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी का संदेश 04

कार्यपालक निदेशकों की डेस्क से 05-06

कार्यकारी संपादक का संदेश / अपनी बात 07

भारतीय भाषाएं भारत को समझने का अहम जरिया 08

बॉब नाऊ : (BOB-NOWW) बेहतर बैंकिंग की ओर 11-13

आत्मनिर्भर भारत : एक सशक्त पहल लोक-संस्कृति 14-16

बिहार : विविधताओं का प्रदेश.....18-20

कार्यालय में सौहार्दपूर्ण व्यवहार 21-22

बक्सा दहेज का 29-30

दक्षिण भारत की स्थापत्य कला 36-37

ऑनलाइन शिक्षा: फायदे और नुकसान 38-40

भारतीय कला एवं संस्कृति का मौजूदा स्वरूप 42-43

अक्षय्यम्, बैंक ऑफ़ बड़ौदा की सभी शाखाओं/कार्यालयों में नि:शुल्क वितरण के लिये प्रकाशित की जाती है. इसमें व्यक्त विचारों से बैंक का सहमत होना आवश्यक नहीं है.

मैं हमारे एक ऐसे साथी का उल्लेख यहां जरूर करना चाहूंगा जिसने अपने कार्यदायित्व के निर्वाह में असामान्य साहस का परिचय दिया. हमारे साथी श्री प्रज्ञेशकुमार रावल, जिन्होंने अत्यंत साहस का परिचय देते हुए छः सशस्त्र लुटेरों की धमकी से बिना डरे, अपनी जान का खतरा मोल लेते हुए सीसीटीवी डीवीआर उनके हवाले नहीं किया और घटना के तीन घंटों में उन सीसीटीवी फूटेज की सहायता से पुलिस उन लुटेरों को पकड़ पाई और लूटी गई नकद राशि वापिस प्राप्त कर पाई. हमें अपने ऐसे हिम्मतवान साथियों पर गर्व है. ये ऐसे गुण हैं जो आपको एक अलग पहचान देते हैं, जो आपको दूसरों से विशिष्ट बनाते हैं.

प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी का संदेश

प्रिय साथियो,

'अक्षय्यम्' के माध्यम से आपसे संवाद करने में मुझे सुखद अनुभूति हो रही है. एक प्रगतिशील मानव समाज में अलग-अलग माध्यमों के जरिए विचारों को आपस में साझा करना अत्यंत आवश्यक है. निरंतर नए विचारों के संपर्क में आना हमारी समझ को विकसित करने के साथ-साथ हमारे ज्ञान-अर्जन के दायरे को बढ़ाता है.

विगत कुछ माह का दौर हम सभी के लिए मुश्किल रहा, परंतु सभी बड़ौदियन ने एक योद्धा की तरह डट कर परिस्थितियों का सामना किया. इस मुश्किल दौर ने हमें यह सिखाया कि हमें पूरी प्रतिबद्धता और दृढ़ निश्चय के साथ आगे बढ़ते रहना है. हमें यह भी ध्यान रखना है कि प्रगति और सफलता के सफर में अनुशासन अत्यंत महत्वपूर्ण है. इतिहास इस बात का गवाह है कि वे ही व्यक्ति, संगठन या देश सफल हुए हैं या प्रगति कर पाए हैं, जिन्होंने नियमों के अनुपालन, अनुशासन और आचार-संहिता को आधार बनाया है. इसके साथ ही एक महत्वपूर्ण गुण है साहस. कई बार नियमों के अनुपालन और अनुशासन के संदर्भ में हमारे साहस और धैर्य की कसौटी भी होती है. मैं हमारे एक ऐसे साथी का उल्लेख यहां जरूर करना चाहूंगा जिसने अपने कार्यदायित्व के निर्वाह में असामान्य साहस का परिचय दिया. हमारे साथी श्री प्रज्ञेशकुमार रावल, जिन्होंने अत्यंत साहस का परिचय देते हुए छः सशस्त्र लुटेरों की धमकी से बिना डरे, अपनी जान का खतरा मोल लेते हुए सीसीटीवी डीवीआर उनके हवाले नहीं किया और घटना के तीन घंटों में उन सीसीटीवी फूटेज की सहायता से पुलिस उन लुटेरों को पकड़ पाई और लूटी गई नकद राशि वापिस प्राप्त कर पाई. हमें अपने ऐसे हिम्मतवान साथियों पर गर्व है. ये ऐसे गुण हैं जो आपको एक अलग पहचान देते हैं, जो आपको दूसरों से विशिष्ट बनाते हैं. हमें अपनी कार्य-संस्कृति में ऐसी विशिष्टताओं को महत्व देते हुए, अपने कार्य में मानवीय पक्षों और मूल्यों को लगातार महत्व देते हुए मुस्तैदी और सचेत होकर आगे बढ़ना है.

वित्तीय वर्ष 2021 की तीसरी तिमाही में बैंक के वित्तीय नतीजे सकारात्मक रहे हैं. बैंक का घरेलू एवं ग्लोबल अग्रिम क्रमशः 8.31 प्रतिशत तथा 6.30 प्रतिशत बढ़ा है. घरेलू कासा जमाराशि में भी वर्ष-दर-वर्ष 13.21 प्रतिशत की वृद्धि हुई है. इसके साथ ही एनपीए के अनुपात में भी कमी आई है. यह खुशी की बात है कि बैंक भविष्य की बैंकिंग की आवश्यकताओं के अनुसार स्ट्रैटेजिक ट्रांसफॉर्मेशन पहलें कर रहा है. हम कार्य के नए उन्नत तरीके और अपने ग्राहकों को अधिक से अधिक डिजिटल आधारित सेवाएं प्रदान करने तथा विकास की नई संभावनाओं को तलाशने में लगातार प्रयासरत हैं. इस दिशा में ग्राहकों को भी लगातार जागरूक करना है. एक प्रशिक्षक के रूप में ग्राहकों को नई बैंकिंग के बारे में शिक्षित करना समाज और राष्ट्रसेवा से कम नहीं है. हमारी यह विशेषता ग्राहकों के बीच हमारी लोकप्रियता को बढ़ाएगी और हमारा ग्राहक आधार भी बढ़ेगा.

मुझे विश्वास है कि आप सभी के सहयोग से हमारा बैंक निरंतर नई परिस्थितियों के अनुसार अपेक्षित बदलाव को आत्मसात करते हुए श्रेष्ठ ग्राहक सेवाएं प्रदान करेगा. इसके साथ ही हम अपने समाज, संस्कृति, भारतीय भाषाओं के विकास के लिए अपना श्रेष्ठतम योगदान देंगे ताकि हम बैंकिंग व्यवसाय के साथ-साथ अन्य महत्वपूर्ण क्षेत्रों के विकास में भी अहम योगदान दे सकें.

शुभकामनाओं सहित,

संजीव चड्ढा

कार्यपालक निदेशक की डेस्क से...

प्रिय साथियो,

विभिन्न साहित्यिक विधाओं और सृजनात्मकता से सम्पन्न हिन्दी पत्रिका 'अक्षय्यम्' के माध्यम से आपसे संवाद करना मेरे लिए अत्यंत सुखद अनुभूति है. पत्रिका के जरिए मैं आपसे न केवल अपने विचार साझा कर सकता हूं, बल्कि आपकी गतिविधियों से भी अवगत होता हूं.

हम सभी एक ऐसे बैंक का हिस्सा हैं जिसकी अपनी एक ऐतिहासिक एवं समृद्ध विरासत है. बैंक की इस उत्कृष्ट विरासत और परंपरा को बनाए रखने में हमारे स्टाफ सदस्यों का महत्वपूर्ण योगदान रहा है. हमारा बैंक सफलता के पथ पर अग्रसर रहते हुए शीर्ष पर पहुंचने के लिए निरंतर प्रयासरत रहता है. अपने प्रबंधन-दर्शन के आधार पर बैंक ऑफ़ बड़ौदा अपने परिचालन एवं सेवाओं के लिए नया और प्रगतिशील दृष्टिकोण बनाने तथा ग्राहकों के विकास में योगदान देने के लिए प्रतिबद्ध है.

बैंक की सबसे मूल्यवान संपत्ति हमारे स्टाफ सदस्य हैं जो बैंक में सम्मानित ग्राहकों को निर्बाध बैंकिंग सेवाएं प्रदान करते हैं. इसलिए हमेशा से हमारा यह लक्ष्य रहा है कि कर्मचारियों को उनकी बौद्धिक समृद्धि और सफलता के अधिक से अधिक अवसर मिलें. इसके लिए हम अपने कर्मचारियों के कौशल और क्षमताओं के आधार पर उन्हें आगे बढ़ने के अवसर प्रदान करते हैं. हमने अपने शेयरधारकों, ग्राहकों, आपूर्तिकर्ताओं, समुदायों और कर्मचारियों की अपेक्षाओं को पूरा करने की कोशिश करते हुए अपने कॉर्पोरेट मूल्यों एवं मुनाफे को भी बनाए रखा है. दिसंबर, 2020 तिमाही के दौरान बैंक के परिचालन लाभ, अग्रिम, कासा औसत एवं जमाओं आदि में हुई बढ़ोत्तरी अपने कर्तव्य के प्रति हमारी प्रतिबद्धता को दर्शाती है.

बैंकिंग व्यवसाय में विकास के लिए ग्राहकों को बैंक से जोड़कर रखना एवं बैंकिंग संबंधी उनकी जरूरतों का ध्यान रखना बहुत अहम् होता है और ग्राहकों से जुड़ाव का प्रमुख माध्यम भाषा ही है. अत: हम अपने ग्राहकों की आशाओं के अनुरूप अपने उत्पादों और सेवाओं में नई उन्नत सूचना प्रौद्योगिकी और नवोन्मेषिता के साथ-साथ विभिन्न भाषाओं का समावेश भी बनाए रखते हैं. व्यवसाय और सेवा क्षेत्र से जुड़े होने के नाते हमारे मजबूत अस्तित्व और भविष्य के लिए निरंतर विकास जरूरी है. बैंकिंग व्यवसाय के अलावा हम समाज-कल्याण में भी योगदान करते हैं और अपने समकक्ष बैंकों के लिए एक मिसाल पेश करते हैं. हमने उच्चतम गुणवत्ता वाले उत्पादों को विकसित करने और प्रदान करने के लिए एक लंबा इतिहास स्थापित किया है. हमारी सफलता हमारे ग्राहकों और समर्पित कर्मचारियों के योगदान के बिना संभव नहीं होगी जो हमारी अनवरत यात्रा के सहयोगी रहे हैं.

मुझे विश्वास है कि जिस प्रकार हमने इस वैश्विक महामारी कोविड-19 के दौर का बड़ी ही सहजता और सजगता से सामना किया है और अपने ग्राहकों की सुरक्षा का ध्यान रखते हुए उन्हें निर्बाध सेवाएं प्रदान की हैं, उसी प्रकार आगे भी हम इन चुनौतियों को अवसर मानकर उत्कृष्टता के साथ ग्राहकों तक अपनी सेवाएं पहुँचाते रहेंगे और बैंक की उत्तरोत्तर प्रगति के लिए प्रयासरत रहेंगे.

शुभकामनाओं सहित,

शांति लाल जैन

कार्यपालक निदेशक की डेस्क से...

प्रिय साथियो,

'अक्षय्यम्' के माध्यम से आपसे संवाद करना मेरे लिए विशेष अवसर होता है. डिजिटल युग में हमें कई आवश्यक सुविधाएं कुछ सेकेंड में ही उपलब्ध हो रही हैं. ऑनलाइन सुविधाओं से हमारे लिए कई ज्ञानवर्धक पाठ्य-सामग्रियां आसानी से उपलब्ध हुई हैं. हम अपनी सुविधा और पसंद के अनुसार इन सामग्रियों के पठन का लाभ उठा सकते हैं. परंतु बीते कुछ वर्षों से लोगों में पुस्तकों को पढ़ने-लिखने की रूचि में कमी आई है. इसका कारण हमारा सोशल मीडिया एडिक्शन और पुस्तकों एवं पत्र-पत्रिकाओं की कम खरीद भी हो सकता है.

शोध भी यही दर्शाते हैं कि विशेषकर युवाओं के बीच पुस्तकों को पढ़ने की आदतों में कमी आई है. जबकि, एक बेहतर दुनिया के लिए हमारे जीवन में अच्छी पुस्तकों और पत्र-पत्रिकाओं का होना और इन्हें नियमित पढ़ना जरूरी है. ये पाठ्यसामग्रियां हमारी पीढ़ियों के बीच विचारों के संप्रेषण का काम करती हैं. कई बार घर के बड़े अपने बच्चों में कहानियों के जरिए अच्छे विचारों का संप्रेषण करते हैं जो कि बच्चों के मानसिक विकास के लिए बहुत ही उपयोगी है. आज के दौर में ऐसी आदतें कम होती जा रही हैं.

अध्ययन के जरिए ही हम अपने समाज और संस्थान की अच्छी समझ रख सकते हैं और अपने लक्ष्य के लिए बेहतर कार्यनिष्पादन कर सकते हैं. बैंकिंग संस्थान में कार्य करते हुए हमें कई मोर्चों पर एक साथ जागरूक रह कर काम करना होता है. हमें अपनी स्थिति मजबूत रखने के लिए अपने बैंक के व्यवसाय में भी निरंतर वृद्धि करनी है. इसके साथ हमें समाज और देश के आर्थिक विकास के लिए भी अहम योगदान देना है. हमें देश की जनता की भलाई के लिए भारत सरकार की आर्थिक नीतियों को भी आगे बढ़ाना है. हमें श्रेष्ठ ग्राहक सेवाएं भी प्रदान करनी है. इस प्रकार हम देखते हैं कि देश के आर्थिक मोर्चे के सैनिक के रूप में एक बैंकर लगातार अपनी जिम्मेदारियों को बखूबी निभाता आया है. बैंक में कार्य करते हुए हम अपनी आर्थिक जागरूकता और कार्य के स्वरूप से देश के आर्थिक विकास में अहम भूमिका निभा रहे हैं. बदले हुए दौर में हम अपने प्रत्येक वर्ग के ग्राहकों को विभिन्न आवश्यक डिजिटल सेवाएं प्रदान कर रहे हैं. पिछले दिनों बैंक ने एमएसएमई क्षेत्र की ऋण रिस्ट्रक्चर की डिजिटल प्रस्तुति के लिए सिडबी के साथ समझौता किया है. हमने अपने रिटेल ग्राहकों को पेपरलेस प्रक्रिया की सुविधा देते हुए उनके लिए 'डिजिटल लेंडिंग प्लेटफॉर्म' का भी शुभारंभ किया है. पिछले दिनों हमने देश के सैनिकों के लिए विभिन्न सुविधाओं से लैस 'बड़ौदा मिलिट्री सैलरी पैकेज' को भी शुरू किया है.

इस प्रकार हम बैंककर्मी देश की उन्नति और समाज के विभिन्न वर्गों की बढ़ोतरी के लिए पूरी प्रतिबद्धता से कार्य कर रहे हैं. बात चाहे देश में शैक्षणिक जागरूकता की हो, वित्तीय साक्षरता की हो, आर्थिक विकास की हो या डिजिटल साक्षरता की हो, हम हर क्षेत्र में अपने सम्मानित ग्राहकों को बेहतर बैंकिंग अनुभव दे रहे हैं. मैं आशा करता हूं कि आप सभी बड़ौदियन इसी तरह अपनी यात्रा आगे भी जारी रखेंगे.

शुभकामनाओं सहित,

विक्रमादित्य सिंह खीची

कार्यपालक निदेशक की डेस्क से

प्रिय साथियो,

आप सभी को नव वर्ष की हार्दिक शुभकामनाएं. नूतन वर्ष पर अक्षय्यम् के इस नवीनतम अंक के माध्यम से आप सभी से सम्प्रेषण करते हुए मुझे अत्यधिक हर्ष की अनुभूति हो रही है. नया वर्ष हमेशा प्रगतिशीलता का सूचक होता है, यह नए अवसर प्रदान करने के साथ-साथ संभावित रणनीतियों को कार्यान्वित करने का सबसे बढ़िया समय होता है. हमारा बैंक वर्षों से विभिन्न चुनौतियों के बावजूद विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता रहा है. भारत एक उभरता हुआ बाजार है जहां बैंकिंग के लिए अभी भी आपार संभावनाएं हैं.

मौजूदा परिदृश्य में भारतीय अर्थव्यवस्था कोविड-19 से पहले की स्थिति में पहुँचने का प्रयास कर रही है. मौजूदा परिवेश में हम इन्फ्रास्ट्रक्चर, औद्योगिक क्षेत्र तथा रियल एस्टेट जैसे विभिन्न खंडों में ऋण प्रवाह बढ़ाकर अपनी लाभप्रदता को बेहतर बनाने के लिए प्रयासरत हैं. हम विकसित बाजारों के साथ-साथ उभरते बाजारों में अपने वृद्धिशील उत्पादों का उपयोग कर अपने व्यापार में निरंतर वृद्धि कर रहे हैं. विभिन्न चुनौतियों के बावजूद भी हम दिसंबर तिमाही में सकारात्मक परिणाम दर्ज करने में सफल रहे हैं. हम पूंजी और लिक्विडिटी संबंधी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए खुदरा बैंकिंग, धन प्रबंधन, शुल्क सृजन सेवाओं यथा आस्ति प्रबंधन, सरकारी व्यवसाय आदि पर ध्यान केंद्रित कर लाभ दर्ज कर रहे हैं. वर्तमान में बैंक अपने व्यवसाय का विस्तार कर रहा है, ऐसे में हम उत्तम तकनीक के प्रयोग से और ग्राहक सेवा के साथ बेहतर तालमेल कर बैंकिंग इंडस्ट्री में अपनी एक अलग पहचान बना सकते हैं.

बैंक नयी अवधारणाओं, प्रथाओं और प्रक्रियाओं को अपनाने और कुछ नया करने में हमेशा अग्रणी रहा है. चूंकि बैंक एक सेवादायी सार्वजनिक संस्थान है और व्यवसाय वृद्धि में भाषा की अहम भूमिका होती है, अत: बैंक में राजभाषा कार्यान्वयन सांविधिक प्रावधानों के अनुपालन के साथ-साथ व्यवसाय विकास की दृष्टि से भी बहुत महत्वपूर्ण है. हम भाषाई प्रशिक्षण प्रदान कर तथा राजभाषा के प्रगामी प्रयोग को बढ़ावा देकर बैंक के एक महत्वपूर्ण पहलू राजभाषा कार्यान्वयन में नित्य नए सोपान तय कर रहे हैं. हम अपने व्यवसाय में क्षेत्रीय तथा हिन्दी भाषा को अपनाकर सफलता प्राप्त कर रहे हैं. आप सभी से अनुरोध है कि सहज स्वीकार्य रूप में हिन्दी और क्षेत्रीय भाषाओं को अपनाते हुए बैंकिंग कारोबार में नित्य नई सफलता प्राप्त करें तथा इसे लक्ष्य तक पहुंचाएं.

मुझे पूर्ण विश्वास है कि हम सभी के समन्वित प्रयास और नीतिपरक कार्यप्रणाली निश्चित रूप से आने वाले समय में हमारे लक्ष्यों को प्राप्त करने में सहायक सिद्ध होगी.

शुभकामनाओं सहित,

अजय के खुराना

कार्यकारी संपादक की कलम से...

प्रिय साथियो,

बैंक की तिमाही हिन्दी पत्रिका अक्षय्यम् के माध्यम से पहली बार आपसे संवाद करना मेरे लिए एक सुखद घड़ी है. यह पत्रिका राजभाषा के साथ-साथ क्षेत्रीय भाषाओं के प्रचार-प्रसार को लेकर बैंक में हो रही विविध गतिविधियों की सूचनाएं एक साथ प्रदान करती है. इसके साथ ही स्टाफ-सदस्यों में लिखने-पढ़ने में रूचि जगाए रखने में भी उपयोगी भूमिका निभाती है. इस प्रकार से यह पत्रिका हम सभी स्टाफ-सदस्यों को आपसी संवाद के जरिए आपस में जोड़े रखने के लिहाज से भी महत्वपूर्ण है.

विगत वर्ष हम सभी ने बड़ी हिम्मत और एकजुटता के साथ चुनौतीपूर्ण समय का सामना किया और आज हम नए वर्ष 2021 में प्रवेश कर चुके हैं. कहते हैं मुश्किल घड़ी में ही हमें अपनी क्षमताओं का बोध होता है. जिस तरह से हमारे बैंक के कर्मचारियों ने इस मुश्किल घड़ी में भी ग्राहकों को बैंकिंग सेवाएं प्रदान की हैं. उसके लिए उनके साहस की जितनी भी तारीफ की जाए वह कम है.

आप सभी जानते हैं कि बीते दिनों में हम सभी के जीवन में उत्पन्न संकट के समय में सुधार होने के साथ-साथ बैंकिंग उद्योग में भी निरंतर परिवर्तन आते जा रहे हैं. हमें इन परिवर्तनों को आत्मसात करते हुए ही आगे बढ़ना है एवं इनमें समाज हित में बेहतर अवसर तलाश कर संस्थान को नई ऊंचाइयों तक ले जाना है. आज लोगों का विश्वास डिजिटल उत्पादों में बढ़ा है और वे डिजिटल उत्पाद की सुविधाओं का लाभ उठा रहे हैं. हमें कैशलेस बैंकिंग के माध्यम से डिजिटल भारत के विजन को भी चरितार्थ करना है. इसके लिए हमें लगातार जागरूक रहने की जरूरत है.

हमने हर परिस्थितियों में राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य करने की कोशिश की है एवं भाषा के विकास के अपने लक्ष्य को आगे बढ़ाया है. विभिन्न स्तरों पर पुरस्कार प्राप्त करने की परंपरा को बनाए रखते हुए बैंक नराकास, बड़ौदा और वाराणसी ने हाल ही में भारत सरकार के क्षेत्रीय पुरस्कार भी प्राप्त किए हैं.

हम जानते हैं कि भाषा और व्यवसाय का सीधा संबंध है. हमने बैंक की व्यवसाय वृद्धि के परिप्रेक्ष्य में भारतीय भाषाओं के महत्व को समझते हुए लगातार इन्हें ग्राहक सेवा से जोड़ा है. मुझे विश्वास है कि आने वाले दिनों में प्रगति और उन्नति की दिशा में हमारी यात्रा जारी रहेगी. नये वर्ष में हमें और भी जोश और उत्साह से बैंक के सभी क्षेत्रों में कार्य करना है और हम सहकर्मियों और ग्राहकों समेत सभी रिश्तों को और बेहतर बनाएंगे एवं हम पूरी निष्ठा और समर्पण के साथ उत्कृष्ट ग्राहक सेवा का उदाहरण प्रस्तुत करेंगे.

अंत में यही कहना चाहूंगा :-

सर्वे भवन्तु सुखिन: सर्वे सन्तु निरामया:।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दु:ख भाग्भवेत्।।

सभी सुखी हों, सभी निरोगी हों, सभी को शुभ दर्शन हों और कोई दु:ख से ग्रसित न हो.

शुभकामनाओं सहित,

वेणुगोपाल मेनन
मुख्य महाप्रबंधक

इस अंक में विशेष

'भारतीय भाषाएं भारत को समझने का अहम जरिया'

8

बिहार : विविधताओं का प्रदेश

18

भारतीय कला एवं संस्कृति का मौजूदा स्वरूप

42

स्थायी स्तंभों में

26 आइये सीखें भारतीय भाषाएँ

28 अनुभव–अभिव्यक्ति

41 बैंकिंग शब्द – मंजूषा

45 अपने ज्ञान को परखिए

46 पुस्तक–समीक्षा

50 चित्र बोलता है

अपनी बात

प्रिय साथियो,

''शब्द नाराज होते हैं,
जब हम उनका इस्तमाल करना छोड़ देते हैं,
अर्थ भी तब रूठने लगते हैं
और साथ छोड़ जाते हैं।
भाषा तब कुछ नहीं करती, नहीं कर पाती
बस! चुपचाप आंसू बहाती है और
केवल पन्नों में कैद हो कर रह जाती है।''

श्री अजित वडनेरकर लिखित 'शब्दों का सफर' पुस्तक की भूमिका में डॉ. सुरेश वर्मा ने लिखा है– ''**अर्थ के कारण शब्द में चेतना का संचार होता है**'' वे आगे कहते हैं– ''**शब्द अपनी यात्रा में सभ्यता और संस्कृति को वहन करके चलता है**''. इसलिए भाषाओं का विलुप्त होना एक अभिशाप है. भाषा के साथ–साथ संबद्ध संस्कृति भी नष्ट होने लगती है. पहले शब्द विलुप्त होने लगते हैं, फिर धीरे–धीरे भाषाएं विलुप्त होने लगती हैं. जब हम भाषाओं के प्रति संवेदनशील नहीं रहते तब प्राय: ऐसा होता है.

भाषा–विद्रोबर्ट फिलिप्सन ने अपनी पुस्तक "Linguistic imperialism' में भाषाई साम्राज्यवाद की बात कही है. जब राजनैतिक एवं आर्थिक आदि कारणों से किसी देश में किसी विदेशी भाषा का प्रभुत्व स्थापित हो जाता है तब उस देश की भाषाओं का अस्तित्व खतरे में पड़ जाता है. शिक्षा, रोजगार और दफ्तरों में उस विदेशी भाषा का अधिपत्य हो जाता है. ऐसे में अपनी भाषा और उसके ज़रिए अपनी संस्कृति का संरक्षण चिंता का विषय बन जाता है.

इस परिप्रेक्ष्य में मातृभाषा दिवस के उपलक्ष्य में आयोजित समारोह में बोलते हुए भारतीय भाषा सर्वेक्षण के बृहद्कार्य से जुड़े भाषाविद् एवं आदिवासी अकादमी के पूर्व निदेशक सामाजिक व सांस्कृतिक कार्यकर्ता प्रो. कानजी पटेल ने एक और महत्वपूर्ण बात कही. उनके अनुसार 'भाषाओं के संरक्षण के साथ ही भाषाओं के बोलने वालों का संरक्षण भी उतना ही जरूरी है. अगर बोलने वाले ही नहीं बचेंगे तो भाषा कैसे बचेगी'

इस अंक में वर्ष 2019 के लिए ''**सयाजीराव लोकभाषा सम्मान**'' प्राप्त डॉ. विक्रम चौधरी जी ने भी 'अक्षय्यम्' की टीम के साथ बातचीत में भाषा, साहित्य, जनजातीय भाषा व साहित्य एवं संस्कृति संबंधी कई महत्वपूर्ण बातें साझा की हैं, जिसका सारांश है 'भारतीय भाषाएं भारत को समझने का अहम ज़रिया है.'

पाठकों को जानकारी देने के साथ ही सोचने एवं चिंतन करने के लिए मुद्दे उपलब्ध कराना 'अक्षय्यम्' का प्रमुख लक्ष्य रहा है. मुझे उम्मीद है पाठक इन मुद्दों पर विचार करेंगे और अपनी राय से हमें अवगत कराएंगे.

शुभकामनाओं सहित,

पारुल मशर

भारतीय भाषाएं भारत को समझने का अहम जरियाः डॉ. विक्रम चौधरी

डॉ. विक्रम चौधरी ने अपने संघर्ष और लगन से गुजरात की स्थानीय भाषाओं और बोलियों जैसे कि चौधरी, धोडिया, गामित और कुंकणा के लिए उल्लेखनीय कार्य करते हुए जनजातीय समूहों को शिक्षित करने में अहम योगदान दिया है. आपने आदिवासी लोक साहित्य, जनजातीय शिक्षा और संस्कृति, जनजातीय संगीत और कला, परंपरा, इतिहास आदि में विशेषज्ञता हासिल की है. आपने आदिवासी संस्कृति विमर्श और बाल साहित्य पर गहन कार्य किया है जिसके लिए आपको रमणिका फाउंडेशन, नई दिल्ली से बिरसा मुंडा सम्मान भी प्राप्त हुआ है. भाषा और शिक्षा के क्षेत्र में आप अपने विद्यार्थी जीवन से ही जुड़े रहे. अपनी इस रूचि के कारण आप जनजातीय चौधरी भाषा की प्रथम जर्नल सह पत्रिका – *ढोल* तथा *बोल* के संपादन कार्य से जुड़े. ये दोनों पत्रिकाएं जनजातीय बच्चों के बीच शिक्षा प्रसार के माध्यम को रोचक बनाने में उपयोगी साबित हुईं. इस विलक्षण क्षेत्र में आपका कार्य जारी है. आपकी इस प्रतिभा और भाषा विकास के योगदान के लिए बैंक ने आपको वर्ष 2019 के लिए महाराजा सयाजीराव लोकभाषा सम्मान से सम्मानित किया है. हम 'अक्षय्यम्' की टीम और उनके बीच हुई बातचीत के प्रमुख अंश पाठकों के लिए प्रस्तुत कर रहे हैंः

1. **कृपया अपने प्रारंभिक जीवन के बारे में बताएं.**

मेरा जन्म सूरत के एक सुदूरवर्ती गांव पदमडूंगरी में हुआ. मैंने कक्षा 1 से 5 तक की अपनी प्रारंभिक शिक्षा गांव के ही विद्यालय से शुरू की. इसी स्कूल में मैंने पहली बार गुजराती भाषा के शब्द सुने. मेरे गांव में प्राथमिक विद्यालय की स्थापना वर्ष 1952 में हुई. 6ठी और 7वीं की पढ़ाई मैंने दूसरे गाँव से पूरी की. उसके बाद 8वीं से 12वीं की पढ़ाई मैंने ऊनाई से पूरी की जो मेरे घर से लगभग 8 से 10 किमी दूर था जहां मुझे रोज़ पैदल जाना पड़ता था. उसके बाद मैंने कॉलेज की पढ़ाई सूरत के नजदीक एक कॉलेज में गुजराती विषय के साथ पूरी की. मैं वहां हॉस्टल में रहा करता था. पढ़ाई के दौरान मुझे नौकरी मिल गई जिससे मेरी पढ़ाई में थोड़ा व्यवधान भी आया. परंतु मैंने अपनी पढ़ाई जारी रखी. आगे चलकर मुझे लगा कि मुझे पीएचडी करनी चाहिए. मैंने दक्षिण गुजरात विश्वविद्यालय, सूरत में पीएचडी में प्रवेश के लिए कोशिश की. इस दौरान मुझे काफी संघर्ष भी करना पड़ा और गाइड की संख्या कम होने के कारण मुझे कठिनाई भी महसूस हुई. आखिरकार मैंने 2010 में अपनी पीएचडी पूरी की.

2. **भाषाओं के संरक्षण के क्षेत्र में कार्य करने की आपकी प्रेरणा के बारे में बताएं?**

मैं वर्ष 2000 से चौधरी भाषा की ढोल पत्रिका से जुड़ा हुआ था. यह मेरे लिए काम करने का एक अच्छा प्लेटफॉर्म था. मेरा आत्मविश्वास इस बात को लेकर भी बढ़ा कि लोग चौधरी भाषा को सहज स्वीकार रहे हैं. ढोल पत्रिका के संपादन ने मुझे आगे भाषा के क्षेत्र में कार्य करने के लिए प्रेरित किया. ढोल पत्रिका के विमोचन के समय भी मुझे लोगों, मीडिया और भाषाविदों से सराहना मिली. इससे मुझे और भी अधिक प्रेरणा और ऊर्जा मिली. मुझे लगा कि यह काम हमारे लिए बहुत आवश्यक है.

मैं यह जिक्र करना चाहूंगा कि हमारे देश के सुदूर प्रांतों में आज भी राज्य की मुख्य भाषाएं ही शिक्षा का माध्यम हैं. देश के सुदूरवर्ती इलाकों के बच्चे जनजातीय या क्षेत्रीय बोलियां जानते हैं जिससे उन्हें शिक्षा ग्रहण करने में बहुत मुश्किलें आती हैं. देश की प्रमुख भाषाओं से उन्हें जोड़ना हमारे लिए एक चुनौती है. भाषा के क्षेत्र में कार्य करते हुए सेंट्रल इंस्टीट्यूट ऑफ इंडियन लेंगुएज में मेरा प्रशिक्षण शुरू हुआ. यह गौर करने वाली बात है कि शिक्षा के दौरान स्कूलों के बच्चों को शिक्षा की भाषा ठीक से समझ में आनी चाहिए और शिक्षकों को भी बच्चों की भाषा समझ में आनी चाहिए. जनजातीय इलाकों में नियुक्त हुए शिक्षक को अगर जनजातीय भाषा नहीं आती है तो शिक्षक और जनजातीय बच्चों के बीच संवाद नहीं हो सकता क्योंकि शिक्षक की भाषा बच्चे नहीं समझते और शिक्षक जनजातीय भाषा नहीं समझते. उनके बीच संवाद के बेहतर माध्यम को तैयार करने के लिए हमने चित्र-पोथी तैयार की जिसमें चौधरी-गुजराती-अंग्रेजी और हिन्दी के शब्दों और वाक्यों को शामिल किया गया. इस चित्र-पोथी को पढ़ कर संवाद किया जाना आसान हुआ. इस तरह यह संवाद का एक माध्यम बना. इस दिशा में और काम किया जाए तो आने वाले समय में बच्चों को शिक्षा ग्रहण करने में सहूलियत जरूर होगी.

3. **भाषा और बोली के संबंध में आपके क्या विचार हैं?**

यह थोड़ा विचारणीय प्रश्न है. इसकी व्याख्या अलग-अलग हो सकती है. प्रायः भाषा को दायरे और व्यापकता की दृष्टि से देखा जाता है. हमारे संविधान में अनुसूचित भाषाएं 22 हैं उनमें 10 ऐसी भाषाएं हैं जिनकी लिपि देवनागरी है इसमें भाषा और बोली के कारण विभाजन नहीं है. उदाहरण के लिए बोडो, संथाली और डोगरी आदि जनजातीय भाषाओं को ही लें. अनुसूचित भाषाओं में शामिल होने पर उनकी संरचना में कोई परिवर्तन नहीं हुआ है वे अब भी जनजातीय भाषाएं ही हैं. इसलिए एक भाषा को बोली और दूसरी भाषा को भाषा कहने के अलग-अलग मत हो सकते हैं. इस आधार पर हम एक भाषा को अव्वल और दूसरी भाषा को कमतर नहीं आंक सकते हैं.

4. **भारत की भौगोलिक और संस्कृतिक विविधताओं और इनमें एकता स्थापित करने में स्थानीय भाषाओं की भूमिका को आप कैसे देखते हैं?**

भारत भौगोलिक और सांस्कृतिक विविधताओं वाला देश है. वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार देश में कुल मातृभाषाओं की संख्या 19569 है. हमारे देश के संबंध में यह विशेष बात है कि भाषाई विविधता के बावजूद हम देश के अलग-अलग क्षेत्रों के लोगों की समझ और उनकी संस्कृति की जानकारी रखते हैं. देश के विभिन्न वर्गों और समाजों की जानकारी ही हमें आपस में जोड़े रखती है जो अंततः देश में अनेकता में एकता का काम करती है. आखिरकार स्थानीय लोगों की संस्कृति को उनकी अपनी भाषा के माध्यम से ही हम समझ पाएंगे और जरूरत पड़ने पर बाद में इसे अन्य भाषाओं में लिपिबद्ध कर सकते हैं और अन्य भाषा-भाषी लोगों तक इसकी जानकारी पहुंचा सकते हैं.

5. **मौजूदा दौर में आदिवासी साहित्य और भाषा का अध्ययन क्यों जरूरी है?**

हमारे देश में शिक्षा का उद्देश्य मुख्यतः रोजगार प्राप्त करना रहा है. पेशे के अनुसार ही पाठ्यक्रम बनाए जाते हैं. समाज के सभी वर्ग की समझ के लिए हमारे मन में पढ़ने की संकल्पना को बदलने की जरूरत है. नई शिक्षा नीति में भाषा और संस्कृति को महत्व दिया जा रहा है. देश के हर हिस्से की अच्छी जानकारी और समझ के लिए हमें हर समाज के साहित्य और भाषा का अध्ययन

करना होता है. आज के दौर में प्रकृति संरक्षण पर विशेष बल दिया जा रहा है. नगरीकरण के कारण देश के बड़े भूभाग में प्राकृतिक परिवर्तन हुए हैं वहीं देश का एक बड़ा हिस्सा आज भी जंगलों, पहाड़ों, नदियों से शुशोभित है और हम लगातार उनके संरक्षण की दिशा में भी कार्य कर रहे हैं. हमारे इस लक्ष्य के लिए जनजातीय साहित्य और संस्कृति का अध्ययन जरूरी है.

6. **कृपया भारत में आदिवासी लोक साहित्य और भाषा के स्वरूप से अवगत कराएं.**

आज का दौर आदिवासी लोक साहित्य के हिसाब से काफी अच्छा है. इसका कारण यह है कि पहले आदिवासी संस्कृति पर गैर-आदिवासी ज्यादा कार्य किया करते थे. अंग्रेजों ने आदिवासी संस्कृति पर काफी कार्य किया. परंतु अब आदिवासी संस्कृति पर आदिवासी लोग स्वयं भी कार्य कर रहे हैं, वे इस विषय पर शोध कर रहे हैं. उनकी संस्कृति, आर्थिक पहलुओं और भाषा पर शोध का काम प्रगति पर है और उनके ही द्वारा ऐसे शोधों को किया जाना बेहतर कार्य साबित होगा.

7. **बाल साहित्य बच्चों के लिए किस प्रकार लाभप्रद है?**

पुराने दौर में बच्चों को दादा-दादी, नाना-नानी कहानियां और कथाएं सुनाया करते थे. अब वो दौर नहीं रहा. बच्चों के मानसिक और सामाजिक विकास के लिए यह सब जरूरी है. बाल साहित्य की संकल्पना इसलिए उभरी कि बच्चा अपनी संस्कृति के बारे में भी जाने और साथ ही अपने देश - समाज और दूसरी संस्कृति को भी जाने. इससे उसके सोचने का दायरा भी बढ़ेगा. यह बच्चों के विकास के लिए बहुत जरूरी है. आज के इस प्रतिस्पर्धा के दौर में बच्चे पहले अपनी संस्कृति, समाज, देश आदि को जानने के स्थान पर दूसरी संस्कृति, समाज, देश आदि को जानने लगते हैं, जबकि स्वयं के बारे में जानना भी अति आवश्यक है. बाल साहित्य बच्चों को अपने समाज को जानने के लिए प्रेरित और प्रोत्साहित करता है. इससे बच्चों का आत्मविश्वास भी बढ़ता है.

8. **आज तेजी से प्रगति करती दुनिया की मुख्यधारा से आदिवासी इलाके के लोगों को हम कैसे जोड़ सकते हैं?**

मुझे लगता है कि हम मुख्यधारा किसे मानें? आज तेजी से हो रही प्रगति को मुख्यधारा मानें या हम अपनी मूलधारा को मुख्यधारा मानें? मेरे हिसाब से समाज के प्रत्येक वर्ग को विकास का हिस्सा बनाने के लिए लोगों को उनके स्थान, उनके क्षेत्र में ही रोजगार, शिक्षा और स्वास्थ्य की सुविधाएं प्रदान की जाए तो लोगों को विकास का लाभ मिल सकेगा. इसके अलावा जो खेती करते हैं या मजदूरी करते हैं उन्हें उनके क्षेत्रों में आगे बढ़ने और उनकी आय बढ़ाने के साथ उनके जीवनयापन के स्तर को विकसित करने का प्रयास करना चाहिए. इस प्रकार हम जिसे मुख्य धारा और अन्य धारा में बांटते हैं तो पहला सवाल होगा कि मुख्यधारा है क्या? मुख्यधारा ऐसी होनी चाहिए जिससे कि हम अपनी ज़मीन, समाज और संस्कृति और जड़ों से भी जुड़े रहें.

9. **आज के दौर में तकनीक ने ग्रामीण इलाकों में साक्षरता के स्वरूप को कैसे प्रभावित किया है?**

तकनीक के आगमन से पाठ्यसामग्री की सुलभ उलब्धता सुनिश्चित हुई है. आज इंरनेट के माध्यम से उपयोगी पाठ्यसामग्री नगरों के साथ-साथ सुदूर गावों में भी चंद सेकेंड में उपलब्ध हो सकती है. इसके अलावा आज कई उपयोगी पाठ्यक्रम ऑनलाइन माध्यम में भी उपलब्ध हैं जिनका हम घर बैठे ही लाभ उठा सकते हैं.

10. **आज के युवाओं को आप क्या संदेश देना चाहेंगे?**

मैं आज के युवाओं से कहना चाहूंगा कि पहले अपने आपको समझें. वैश्विक परिप्रेक्ष्य में जो बदलाव आ रहे हैं उन प्रभावों में बिना सोचे मत आइये. इससे हमारे सोचने का नजरिया बदल जाता है. उसके प्रभाव को भी समझिए. आप अपने आप को समझें, क्षमताओं को पहचानें, अपनी संस्कृति, समाज और परिवेश का सम्मान करें. चीजों को समझने का दायरा भी बढ़ाएं.

11. **बैंक ऑफ़ बड़ौदा से महाराजा सयाजीराव लोक भाषा समान पाकर आप कैसा महसूस कर रहे हैं?**

बैंक ऑफ़ बड़ौदा से यह सम्मान पाकर मैं काफी रोमांचित हूं. मैं काफी गौरवान्वित महसूस कर रहा हूं. यह सम्मान पाकर मैं अपने अंदर नई ऊर्जा महसूस कर रहा हूं. अगर मेरे काम को स्वीकार किया जाता है तो यह भाषा के लिए बहुत महत्वपूर्ण है.

बॉब नाऊ (BOB-NOWW) : बेहतर बैंकिंग की ओर

पिछले कुछ वर्षों में भारत सरकार ने देश में बैंकिंग व्यवस्था को विश्व स्तरीय प्रतिस्पर्धात्मक क्षमता प्रदान करने के लिए कई पहलें की हैं, इसी चरण में वित्त मंत्रालय द्वारा बैंकों के समामेलन की घोषणा की गई. इस प्रक्रिया के पहले चरण में सर्वप्रथम बैंक ऑफ़ बड़ौदा, विजया बैंक और देना बैंक को समामेलन हेतु चुना गया. 17 सितंबर 2018 को भारत सरकार द्वारा बैंक ऑफ़ बड़ौदा, विजया बैंक और देना बैंक के समामेलन की घोषणा की गई. गौरतलब है कि वर्ष 2017 में भारतीय स्टेट बैंक के 5 सहयोगी बैंकों और भारतीय महिला बैंक को भारतीय स्टेट बैंक में मिला एक इसे एक बड़ा बैंक बनाया गया. समामेलन की इन दोनों प्रक्रियाओं से बैंकिंग जगत और ग्राहकों के बीच यह भरोसा जगा कि देश की वित्तीय व्यवस्था को विश्व स्तर पर प्रतिस्पर्धा देने लायक बनाने के लिए इस दिशा में और भी ठोस कदम उठाए जा सकते हैं और आगे चलकर बड़े बैंक बनाए जा सकते हैं. इसी दिशा में यूनियन बैंक, आंध्रा बैंक, कॉर्पोरेशन बैंक तथा पंजाब नैशनल बैंक, ओरियेंटल बैंक ऑफ़ कॉमर्स, यूनाइटेड बैंक ऑफ़ इंडिया तथा इंडियन बैंक और इलाहाबाद बैंक तथा केनरा बैंक और सिंडिकेट बैंक के समामेलन की भी घोषणा की गई.

हमारे लिए यह गौरव की बात है कि भारत सरकार के निर्णय पर कार्रवाई करते हुए हमने तीन बैंकों के समामेलन की प्रक्रिया को समय पर और बिना किसी बाधा के पूरा कर बैंकिंग जगत के लिए एक श्रेष्ठ उदाहरण प्रस्तुत किया. एक समामेलित इकाई के रूप में हमने वैश्विक महामारी के बीच भी अत्यंत चुनौतीपूर्ण समय के दौरान पूरी प्रतिबद्धता और समर्पण के साथ कार्य करते हुए ग्राहकों को उत्कृष्ट सेवाएँ प्रदान की हैं और साथ-साथ तीनों बैंकों के तकनीकी एकीकरण जैसे जटिलतम कार्य को भी सफलतापूर्वक सम्पन्न किया है. तीनों बैंकों के तकनीकी एकीकरण की प्रक्रिया दिनांक 12 दिसंबर 2020 को सम्पन्न हुई. इस सफल समामेलन के पश्चात हमारा बैंक एक नए आकार, मानदंड और अपनी विस्तृत पहुँच के साथ अद्भुत रूप में उभर आया है. उत्कृष्टता की दिशा में अपने प्रयासों को जारी रखते हुए, सम्पूर्ण बैंकिंग उद्योग में हमारे बॉब ने अग्रणी एवं कर्मचारी अनुकूल विभिन्न पहलें आरंभ करने और अपनी कार्यशैली को रूपांतरित करने हेतु खुद को पूर्णतः तैयार कर लिया है. हम सबके लिए यह अत्यंत हर्ष की बात है कि हमारे प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी महोदय ने नए वर्ष की सौगात के रूप में 01 जनवरी 2021 को बैंक स्तरीय रूपांतरण कार्यक्रम 'बॉब-नाऊ (BOB-NOWW)' की घोषणा की है.

''बॉब- नाऊ (BOB-NOWW)'' क्या है?

''बैंक ऑफ़ बड़ौदा - न्यू ऑपरेटिंग मॉडल एवं वेज़ ऑफ वर्किंग'' - टू क्रिएट द बैंक ऑफ़ बड़ौदा ऑफ द फ्यूचर.

इसके नाम में ही इसकी पूरी यात्रा का संक्षिप्त वर्णन है. यह एक नए परिचालन मॉडल और कार्य प्रणाली के साथ बैंक ऑफ़ बड़ौदा को पुनर्गठित करने की दिशा में हमारे रूपांतरण यात्रा का अगला चरण है. यह हमारे भविष्य की यात्रा की ओर एक कदम है जिसमें अब हम सभी बड़ौदियन्स साथ मिलकर बड़ौदा परिवार को और भी समृद्ध एवं सशक्त बना सकेंगे और अपनी कार्य प्रणाली को रूपांतरित करते हुए अपने ग्राहकों को उत्कृष्ट सेवा प्रदान कर सकेंगे.

नए बैंक ऑफ़ बड़ौदा में हम अपने हितधारकों और अपने बैंक की अहमियतता को उच्चतम स्तर की ओर ले जाना जारी रखेंगे. बैंक अब डिजिटल एवं कागज़रहित परिचालन हेतु तैयार है. इससे ग्राहकों को सुविधाजनक बैंकिंग सुविधाएं मिल सकेंगी जिससे वे और आसानी से अपनी स्वेच्छा अनुसार हम से जुड़ सकेंगे. बैंक अपने बड़ौदा परिवार के लिए प्रतिबद्ध है, आगे इस रूपांतरण यात्रा में बैंक अपनी प्रतिबद्धता जारी रखेगा और हम सभी पहले से ज्यादा सशक्त एवं अभिप्रेरित महसूस कर सकेंगे एवं गर्व से कह सकेंगे कि हम सभी बड़ौदियन्स हैं, बड़ौदा परिवार से हैं और बैंक ऑफ़ बड़ौदा हमारी मातृसंस्था है.

बॉब-नाऊ (BOB-NOWW) की आवश्यकता एवं उपयोगिता

''एक अच्छा लीडर वह होता है जो नयी राह बनाता है एवं भविष्य की राह दिखाता है.'' हम कभी भी दूसरों का अनुसरण करने वाले न होकर हमेशा अधिनायक की भूमिका में रहना पसंद

करते हैं. भारत के अग्रणी सार्वजनिक उपक्रम के बैंक होने के नाते हम एक नई दूरदर्शिता के साथ अपने व्यवसाय एवं ग्राहक के अनुभवों को नए मूल्य प्रदान करना चाहते हैं. इससे हम दूसरे बैंकों को अपनी रूपांतरण यात्रा के जरिए एक नई राह दिखा सकेंगे.

इसके तहत बैंक ने त्वरित एवं ग्राहक अनुकूल लोन हेतु डिजिटल लेंडिंग विभाग का गठन किया है एवं उसका परिचालन शुरू कर दिया है. बैंक अपने डिजिटल डिलीवरी चैनल्स को प्रबल एवं निर्बाध बनाने के लिए काम कर रहा है. हमें आगे चलकर अपने सूक्ष्म एवं लघु उद्योग, कॉर्पोरेट बैंकिंग, अंतर्राष्ट्रीय व्यवसाय एवं अन्य व्यवसायों को डिजिटल रूप देना है. भारत के कोने-कोने में होने के साथ-साथ विश्व स्तर पर भी बैंक ऑफ़ बड़ौदा की अच्छी उपस्थिति है. हमें ग्राहकों को वैकल्पिक व्यवस्था प्रदान करते हुए उनकी सहूलियत की जगह और समय पर अपने उत्पादों को डिजिटल माध्यम से पेश करना है.

कोरोना महामारी जिसने पूरे विश्व को हिला कर रख दिया, उसने हमें सीखा दिया है कि कठिन परिस्थितियों में हम अपने कर्मचारियों की सुरक्षा करते हुए अपने ग्राहकों तक अपनी सेवाएँ कैसे पहुंचा सकते हैं इस पर हमें और निरंतर कार्य करने की जरूरत है. इस लक्ष्य पर कार्य करने हेतु डिजिटलीकरण की आवश्यकता अत्यंत महत्व रखती है. हम अब एक सशक्त बैंक के रूप में खुद को तैयार कर चुके हैं और अपनी संचालन दक्षता के साथ अपने ग्राहकों के पसंद के अनुसार उत्पादों को उन्हें प्रदान करने हेतु तत्पर है. तेजी से बदलते विश्व को देखते हुए हमारा बैंक नए अवसर को टार्गेट करने की महत्वकांक्षा रखता है.

बॉब-नाऊ (BOB-NOWW) हम कैसे करेंगे?

इस यात्रा का नेतृत्व एक अंतर-कार्यात्मक एवं सशक्त टीम द्वारा किया जाएगा. बॉब-नाऊ के अंतर्गत पाँच स्तम्भ हैं. यह विशेष टीम पांचों स्तंभों में से प्रत्येक पहल का नेतृत्व करेगी. यह टीम आने वाले सप्ताह और महीनों में सुनियोजित पहलों पर सभी कर्मचारियों के सुझाव और अभिमत मांगेगी, हमारे प्रश्नों के उत्तर देगी और हमारी सहभागिता आमंत्रित करेगी. हम अपने सपनों को तभी साकार कर पाएंगे जब हम सभी इन पहलों की ज़िम्मेदारी लेंगे.

इसके अंतर्गत पाँच रूपांतरण स्तंभ बनाए गए हैं-

स्तम्भ-1: नई कार्य प्रणाली (New Ways of Working) - इसके माध्यम से एक नई कार्य प्रणाली के तहत हमारे अनुभवों को और सुखद बनाया जाएगा. इन सबको ध्यान में रखते हुए हमारे बैंक ने 'वर्क फ्रॉम एनीवेयर' (Work From Anywhere) की विचारधारा की ओर कार्य करने की शुरुआत की है. जिसके तहत विभिन्न संवर्ग के लिए अलग-अलग आयामों को परिलक्षित किया गया है. कार्यप्रणाली को कर्मचारी हितैषी बनाने हेतु विभिन्न पहलुओं पर विचार किया जा रहा है जिससे हमें नए कार्यनुभव की अनुभूति होगी. इसके लिए एक नया अभियान 'लेट्स सिंप्लिफ़ाई' शुरू किया गया है. इसके तहत कर्मचारियों के अनुभवों को साझा करते हुए एक सरलीकृत कार्यप्रणाली को विकसित किया जाएगा जिसके निम्नलिखित उद्देश्य हैं:-

- त्वरित व्यवसाय पद्धति
- कार्यकुशलता का विकास
- सरलीकृत मानव संसाधन नीति
- त्वरित संवाद

स्तम्भ-2 : डिजिटल संचालित अनुभूति (Digital-led Experience) - इसके अंतर्गत तीनों बैंकों के एकीकरण के उपरांत तकनीक का उन्नत उपयोग करते हुए हमारे बैंक ने तकनीक का उच्चतर उपयोग करने हेतु इस क्षेत्र को चुना है. वैश्विक महामारी ने जहाँ मौजूदा कार्यप्रणाली को एक नए रूप में रूपांतरित किया गया है जिसके तहत डिजिटल आधारित सेवाएँ बाजार में प्रमुखता के साथ बढ़ता ही जा रही है. हमारे बैंक ने डिजिटल टूल को एक नया ग्राहक अनुभव देते हुए कागज़रहित, बाधारहित, ग्राहक की सुविधा अनुरूप डिजिटल उत्पादों को बाजार में उतारा है.

स्तम्भ-3 : मोबाइल प्रथम (Mobile First) - भारतीय एवं अंतर्राष्ट्रीय बाजार मोबाइल के आने से हथेली में आ गया है. आज के दौर में हर नागरिक सब कुछ 'वन क्लिक' में चाहता है. जहाँ भारत में एण्ड्रायड एवं आईओएस मोबाइल की पहुँच हर वर्ग तक है वहीं दुनिया में सबसे सस्ता इंटरनेट डाटा हमारे देश में ही उपलब्ध है. इसी का व्यवसायिक फ़ायदा उठाते हुए बॉब-नाऊ के अंतर्गत विभिन्न मोबाइल ऐपों के द्वारा अपने उत्पादों एवं सेवाओं को आसानी से परिचालित किया जा सकेगा.

स्तम्भ–4 : पुनर्कल्पित नेटवर्क (Reimagined Network) – इसके माध्यम से भारतीय बाज़ारों में अपनी उपलब्धता बढ़ाने हेतु मॉल, एयरपोर्ट, रेलवे स्टेशन एवं अन्य सार्वजनिक स्थानों पर अपनी पहुँच को बढ़ाना है. अपने उत्पादों को अधिक एवं वंचित क्षेत्रों में पहुँचाने हेतु डिजिटल शाखाओं के द्वारा अपनी सेवाओं एवं उत्पादों का विस्तार किया जाएगा. भारत सरकार ने EASE–3 के माध्यम से उपर्युक्त संदेश दिया है जिसका अनुपालन हमारा बैंक स्तंभ–4 के माध्यम से कर सकेगा.

स्तम्भ–5 : उन्मुक्त भावी समृद्धि (Unlocked Growth Potential) – इसके अंतर्गत कॉर्पोरेट, सूक्ष्म, लघु उद्योग एवं अंतर्राष्ट्रीय व्यवस्याओं में छुपी हुई क्षमताओं को पहचानकर उनका विकास करके न केवल हम अपनी लाभप्रदता बढ़ाएँगे बल्कि एक विश्वसनीय ग्राहक–हितैषी संस्था की ओर अग्रसर होंगे. इसे प्राप्त करने के लिए विभिन्न लक्ष्य को रखा गया है. इसके अंतर्गत–4–आईसीएफएस शाखाओं में फी बूस्टर चैंपियनशिप (Fee Booster Championship) की शुरुआत की जा चुकी है.

अब तक बॉब नाऊ (BOB NOWW)?

1. **फी–बूस्टर कैम्पेन इन आईसीएफएस (ICFS) शाखाओं –** इसके अंतर्गत निम्न कार्य बिन्दुओं पर कार्य किया जा रहा है:–

- विदेशी विनिमय व्यवसाय वृद्धि
- नई बीसीएमएस (BCMS) व्यवसाय सक्रियन
- कार्यशैली पूँजी संबद्धता
- ट्रेड व्यवसाय वृद्धि (LC/BG)

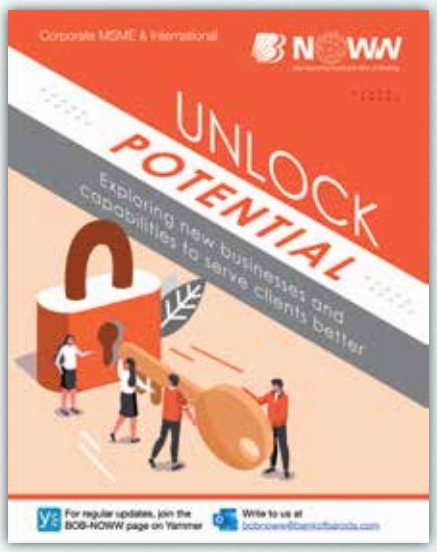

2. **3–डे कैपेबिलिटी वर्कशॉप (3-Day Capability Workshop)** – हाल ही में तीन दिन की कार्यशाला आयोजित की गई जिसमें क्षेत्रीय प्रमुख, वरीय रिलेशनशिप मैनेजर्स, 4 – उत्पाद विशेषज्ञ के साथ फी इन्कम बूस्टर कैम्पेन पर विस्तृत चर्चा की गई है.

3. **उत्पाद उपलब्धता –** इसके तहत चयनित स्थानों पर हम अपने खुदरा उत्पादों की उपलब्धता हर जगह सुनिश्चित कर सकेंगे. आने वाले दिनों में ग्राहकों के लिए हर जगह बैंकिंग सेवाएँ उपलब्ध होंगी एवं कर्मचारियों को भी कहीं से भी कार्य करने का अवसर प्रदान किया जाएगा. हमारे यैमर (धराशी) पेज पर विभिन्न कार्यक्रमों एवं अभियानों को साझा किया गया है जिसके माध्यम से हम सभी बॉब नाऊ की यात्रा को समय–समय पर जान सकेंगे.

4. **आओ करें सरलीकरण (Let's Simplify)** – इसके तहत हमें अपने विचारों को साझा करने का अवसर प्रदान किया गया है जिससे प्राप्त अनुभवों के आधार पर एक नई कार्य संस्कृति को कार्यान्वित किया जाएगा.

कोरोना महामारी ने हमें प्रतिकूल परिस्थितियों से सामना करने के लिए शीघ्रतापूर्वक तैयार रहने और नए आयामों को अपनाने के महत्व को रेखांकित किया है. इससे हमारे परिचालनगत कार्यनिष्पादन में सुधार हुआ है और ग्राहक संबद्ध गतिविधियों को फिर से गति प्राप्त हुई है. परिणामस्वरूप यह आशा की जाती है कि हमारी वृद्धि स्थिर है और हमारा यह मानना है कि एक बैंक के रूप में हमें अपने प्रतिफल में अभिवृद्धि करनी चाहिए.

हम इसे चरितार्थ करने के लिए प्रतिबद्ध हैं. बॉब–नाऊ पहल के गति पकड़ते ही यह परियोजना हम सभी के लिए अनुकूल होगी और इस दिशा में आगे बढ़ने के लिए सहयोग प्रदान करेगी. ये हमारी यात्रा के शुरुआती दिन हैं और हम सभी के लिए व्यक्तिगत एवं संस्थागत रूप में आगे आने वाली अपार संभावनाओं के लिए हम अति उत्साहित एवं रोमांचित हैं. हमने व्यक्तिगत एवं पेशेवर चुनौतियों को अवसर के रूप में लेते हुए पिछले वर्ष समर्पण के साथ बैंक में ग्राहकों की सेवा की है और इसी पर विश्वास रखते हुए हम सभी अपने सपनों को साकार कर सकेंगे.

यह हम सभी के लिए एक सुअवसर है कि हम सभी एक साथ मिलकर इस रोमांचकारी यात्रा पर चलते हुए नया बैंकिंग इतिहास बनाएँ. हमारे भविष्य की शुरुआत अभी से है – बॉब–नाऊ (BOB-NOWW).

तो आइए, हम सब खुद को खुशकिस्मत मानते हुए साथ में मिलकर कहते हैं कि हम सभी बड़ौदियन्स इस नए यात्रा पर चलने के लिए तैयार हैं.....

किसी भी नए बदलाव के लिए यदि चार बातों का पालन किया जाए कि – एक महान लक्ष्य बनाया जाए, ज्ञान अर्जित किया जाए, कड़ी मेहनत की जाए और दृढ़ मजबूत रहा जाए तो इस जीवन में कुछ भी हासिल किया जा सकता है. ❑❑❑

– प्रियंका कुमारी
अधिकारी
अंचल कार्यालय, पटना

आत्मनिर्भर भारत – एक सशक्त पहल

''आदमी के लिए आजादी एक बेशकीमती मोती है. वह आजादी तभी हासिल हो सकती है जब हम अनेक तरह की फिकर और चिंता से निर्द्वन्द हों और हमारी तबीयत में आत्मनिर्भरता ने दखल कर लिया हो.''

– पंडित बालकृष्ण भट्ट

'आत्मनिर्भरता' मनुष्य को अपने भरोसे रहने की शिक्षा देती है जो व्यक्ति आत्मनिर्भर नहीं होता उसे अपने जीवन में कई तरह की मूलभूत जरूरतों के लिए दूसरों पर निर्भर रहना पड़ता है. इस तरह की निर्भरता व्यक्ति के विकास में बाधक होती है. वहीं अपने भरोसे से जीने वाले व्यक्ति सदा उन्नति करते हैं. आत्मनिर्भरता से मनुष्य के अन्दर आत्मबल आता है जो सभी शक्तियों से श्रेष्ठ है. यही बात यदि किसी देश के संदर्भ में करें तो आत्मनिर्भरता के अभाव में दूसरे देश की सहायता के भरोसे रहना उस देश की उन्नति और प्रगति के लिए सबसे बड़ी बाधा है. विदेशी राज अथवा पुरानी रूढ़िवादिताओं को ही अपनी वर्तमान दुर्दशा का कारण मा न लेना भी बेमानी होती है. हम अपनी आने वाली पीढ़ी को स्वावलम्बी बनाकर और उनके अन्दर आत्मनिर्भरता के गुण विकसित करके ही अपनी और अपने देश की उन्नति कर सकते हैं. आज स्वयं में विश्वास करने की आवश्यकता है तभी किसी व्यक्ति, वर्ग, समाज और देश की उन्नति संभव है.

हम सभी इसके साक्षी हैं कि पूरी दुनिया वैश्विक संकट कोरोना महामारी से जूझ रही थी और सभी व्यापारिक, आर्थिक, सामाजिक गतिविधियों का पहिया लगभग थम गया था. इस आधुनिक और संसाधन युक्त दुनिया में सभी कारखाने और उद्योग-धन्धे बंद हो गए थे, चारों तरफ घोर निराशा की आंधी चल रही थी, आवागमन भी पूरी तरह से रुक गया था. सड़कें सुनसान थीं, गलियां विरान थी, यहां तक कि जंगली जानवर भी सड़कों पर देखे जा रहे थे. हर आदमी केवल जान बचाने की जंग लड़ रहा था. इस वैश्विक महामारी ने मजदूरों का रोजगार छिन लिया था. लाखों मजदूर पलायन कर रहे थे. ऐसे कठिन समय में अर्थव्यवस्था को पुनर्जीवित करने के लिए और जनसमुदाय के विभिन्न वर्गों को सहारा प्रदान करने के लिए 12 मई, 2020 को हमारे माननीय प्रधानमंत्री द्वारा रु. 20 लाख करोड़ के वित्तीय पैकेज की घोषणा की गई. यह राहत पैकेज भारत के कुल सकल घरेलू उत्पाद का लगभग 10% था. सरकार की इस अत्यंत सराहनीय पहल से आत्मनिर्भर भारत अभियान की शुरूआत हुई.

'आत्मनिर्भर भारत' अभियान समाज के विभिन्न वर्गों के साथ व्यापक और गहन विचार-विमर्श पर आधारित है. इस अभियान की मूल भावना में स्वदेशी को बढ़ावा देना समाहित है. यहां आत्मनिर्भरता का मतलब भारत की प्रगति के साथ दुनिया से कट जाना और वैश्वीकरण को मानव केंद्रित बनाना नहीं है. यह हमारे स्थानीय उद्योगों के वैश्वीकरण को दर्शाता है. इसका मुख्य उद्देश्य भारत

को एक समृद्ध देश बनाना है. 'आत्मनिर्भर भारत' अभियान किसानों, गरीब नागरिकों, प्रवासी मजदूरों, लघु उद्योग, कुटीर उद्योग, मछुआरों, पशुपालकों, मध्यम वर्ग के उद्योगों, संगठित या असंगठित क्षेत्र में काम कर रहे लोगों और समाज के प्रत्येक तबके के लिए है.

आत्मनिर्भरता एक सकारात्मक शब्द है. यह किसी व्यक्ति, परिवार या देश के लिए बहुत महत्वपूर्ण है. यदि व्यक्ति आत्मनिर्भर है, तो उसे दूसरों की मदद की कम आवश्यकता होगी. दूसरे शब्दों में हम यह भी कह सकते हैं कि आत्मनिर्भरता किसी व्यक्ति और देश दोनों के लिए आवश्यक है.

आत्मनिर्भर भारत अभियान निम्नलिखित 5 स्तंभों पर आधारित है

1. **अर्थव्यवस्था –** एक ऐसी अर्थव्यवस्था जो वृद्धिशील परिवर्तन (इन्क्रीमेंटल चेंज) नहीं बल्कि बड़ा उछाल (क्वांटम जंप) लाए.

2. **आधारभूत संरचना (इंफ्रास्ट्रक्चर) –** एक ऐसा इंफ्रास्ट्रक्चर जो आधुनिक भारत का प्रतीक बने. सरकार आधारभूत संरचना में जरूरी निवेश कर सुधार करेगी जिससे कि स्वदेशी वस्तुएं बाहर से आने वाले उत्पादों का मुकाबला कर सकें.

3. **प्रौद्योगिकी संचालित प्रणाली –** यह प्रणाली 21 वीं सदी की प्रौद्योगिकी संचालित व्यवस्था पर आधारित होगी. आने वाले समय में ऑनलाइन सेवाओं को बढ़ावा दिया जायेगा. जिससे सरकारी काम में पारदर्शिता बढ़ जाये और लोगों का सरकार पर विश्वास स्थापित रहे .

4. **जनसंख्या संरचना (वाइब्रेंट डेमोग्राफी) –** भारत की जनसंख्या में 18 से 35 वर्ष की आयु के लोग सबसे ज्यादा है. हमारे पास युवा शक्ति का विशाल भंडार है. इस जनसंख्या के भार को मुनाफे में तब्दील करने के लिए हमें लोगों को ज्यादा से ज्यादा रोजगार उपलब्ध कराना होगा. उन्हें रोजगार तभी मिल सकता है जब हम स्थानीय निर्मित वस्तुओं को बढ़ावा दें. एक गतिशील जनसांख्यिकी ही आत्मनिर्भर भारत के लिये ऊर्जा का स्रोत बनेगी.

5. **मांग –** भारत की मांग और आपूर्ति श्रृंखला की पूरी क्षमता का उपयोग किया जाना चाहिये. 137 करोड़ की जनसंख्या वाले भारत देश में वस्तुओं की मांग की कोई कमी नहीं है. हमें इस भारी मांग का उपयोग अपने देश में निर्मित चीज़ों की बिक्री बढ़ाने के लिए करना है. हमें अपनी सप्लाई चेन को मजबूत करना होगा.

'आत्मनिर्भर भारत' अभियान का उद्देश्य

आत्मनिर्भर भारत अभियान का उद्देश्य भविष्य के भारत को विकसित करना है. एक नई प्राणशक्ति, नई संकल्पशक्ति के साथ आगे बढ़ना है. सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम वर्गीय गृह उद्योगों को बढ़ावा देकर भारत से बेरोज़गारी और गरीबी का उन्मूलन करना है.

आत्मनिर्भर भारत अभियान 1.0

आत्मनिर्भर भारत अभियान 1.0 की घोषणा 12 मई, 2020 को की गई जिसमें 20.97 लाख करोड़ के पैकेज की घोषणा हुई. इस अभियान के अंतर्गत लॉन्च की गई कुछ महत्त्वपूर्ण योजनाएं इस प्रकार हैं :

वन नेशन वन राशन कार्ड : इस योजना के अंतर्गत पूरे भारत में एक ही राशन कार्ड से राशन की किसी भी दुकान से राशन खरीद की व्यवस्था है. वन नेशन वन राशन कार्ड 1 सितंबर 2020 से लॉन्च किया गया है.

पीएम स्वनिधि योजना : इस योजना के तहत शहरी क्षेत्रों के रेहड़ी-पटरी वालों को एक साल के लिए 10,000 रुपये का ऋण बिना किसी गारंटी के उपलब्ध कराया जा रहा है. इस स्वनिधि योजना को प्रधानमंत्री स्ट्रीट वेंडर्स आत्मनिर्भर निधि के नाम से भी जाना जाता है. देश में ग्रामीण और शहरी सड़कों के किनारे स्ट्रीट वेंडर जो फल, सब्जियाँ बेचते हैं या रेहड़ी पर छोटी-मोटी दुकान लगाते हैं वे इस योजना का लाभ उठा सकते हैं.

किसान क्रेडिट कार्ड योजना : पैसे के अभाव में कोई किसान खेती न छोड़े और वह अपनी कृषि संबंधी आवश्यकताओं को पूरा कर सके इस उद्देश्य से आत्मनिर्भर भारत योजना के तहत 2.5 करोड़ किसानों को किसान क्रेडिट कार्ड के तहत लोन देने का ऐलान किया गया है.

प्रधानमंत्री मत्स्य संपदा योजना : मत्स्य उत्पादन में अतिरिक्त 70 लाख टन की वृद्धि करने और मछुआरों और मत्स्य किसानों की आय को दोगुनी करने के लक्ष्य के साथ आत्मनिर्भर भारत पैकेज के तहत वित्त वर्ष 2020-21 से वित्त वर्ष 2024-25 तक (5 वर्ष की अवधि के दौरान) प्रधानमंत्री मत्स्य संपदा योजना को सभी राज्यों/संघ शासित प्रदेशों में कार्यान्वित किया जाना है.

नाबार्ड के माध्यम से किसानों के लिए इमरजेंसी वर्किंग कैपिटल फंडिंग : आत्मनिर्भर भारत योजना के तहत ग्रामीण सहकारी बैंक और क्षेत्रीय ग्रामीण बैंकों द्वारा लोन के माध्यम से नाबार्ड किसानों के लिए रु. 30,000 करोड़ की इमरजेंसी वर्किंग कैपिटल और वित्तपोषण की व्यवस्था की गई है.

इसीएलजीएस 1.0 : 'आत्मनिर्भर भारत पैकेज' के तहत आपातकालीन क्रेडिट लाइन गारंटी योजना (इसीएलजीएस) 1.0 की घोषणा की गयी है इसके तहत एमएसएमई सहित 45 लाख से अधिक व्यवसायों के लिए 3 लाख करोड़ रुपए की गिरवीमुक्त गारंटीड ऋणों की आपातकालीन क्रेडिट लाइन गारंटी योजना 31 मार्च 2021 तक लागू रहेगी.

आंशिक ऋण गारंटी योजना 2.0 : निम्न साख वाले एनबीएफसी, एचएफसी और एमएफआई को लोगों तथा एमएसएमई को कर्ज देने के लिए नकदी की जरूरत को देखते हुए 45,000 करोड़ रुपए की आंशिक ऋण गारंटी (पार्शियल क्रेडिट गारंटी) योजना 2.0 की घोषणा की गई है. इस पहल का मकसद है कि ये कंपनियां व्यक्तियों तथा एमएसएमई (सूक्ष्म, लघु एवं मझोले उद्यम) क्षेत्र की इकाइयों को अधिक कर्ज सहायता दे सकें.

आत्मनिर्भर भारत अभियान 2.0

आत्मनिर्भर भारत अभियान 2.0 की घोषणा 12 अक्तूबर, 2020 को की गई जिसमें 73 हजार करोड़ रुपये के पैकेज की घोषणा गई.

एलटीसी, कैश वाउचर और फेस्टिवल एडवांस : अर्थव्यवस्था में मांग में बढ़ोतरी करने के एक उपाय के रूप में कंज्यूमर स्पेंडिंग को बढ़ाने के प्रयोजन से सरकार ने एलटीसी, कैश वाउचर और फेस्टिवल एडवांस योजनाओं का एलान किया. योजना के तहत जो केंद्रीय कर्मचारी कोविड के चलते एलटीसी नहीं ले पा रहे हैं वे एलटीसी के बदले कैश ले सकते हैं.

मिनिस्ट्री ऑफ रोड ट्रांसपोर्ट तथा मिनिस्ट्री ऑफ डिफेंस को 25000 करोड़ रुपये अतिरिक्त कैपिटल एक्सपेंडिचर के तौर पर प्रदान किए गए.

देश के 11 राज्यों को कैपिटल एक्सपेंडिचर के लिए 3621 करोड़ रुपये का लोन प्रदान किया गया.

आत्मनिर्भर भारत अभियान 3.0

अभियान के पहले और दूसरे चरण की सफलता को देखते हुए माननीय प्रधानमंत्री द्वारा 12 नवम्बर, 2020 को आत्मनिर्भर भारत अभियान के तीसरे चरण 3.0 की घोषणा की गई जिसमें 2.65 लाख करोड़ का पैकेज लाया गया और इस अभियान के अंतर्गत 12 योजनाओं की शुरूआत की गई.

आत्मनिर्भर भारत रोजगार योजना

कोविड-19 महामारी के दौरान रोजगार सृजन को प्रोत्साहित करने के लिए यह योजना शुरू की गई है. योजना के तहत अगर ईपीएफओ-पंजीकृत प्रतिष्ठान ऐसे नए कर्मचारियों को लेते हैं जो पहले पीएफ के लिए रजिस्टर्ड नहीं थे या जो नौकरी खो चुके हैं, तो इस योजना में उनके कर्मचारियों को लाभ प्रदान किया जाएगा. इस योजना के अंतर्गत संगठित क्षेत्र में रोजगार देने पर बल दिया जाएगा तथा ज्यादा से ज्यादा लोगों को कर्मचारी भविष्य निधि से जोड़ा जाएगा. इस योजना के अंतर्गत केवल वही संस्थाएं लाभ प्राप्त कर सकती हैं जो ईपीएफओ के अंतर्गत रजिस्टर्ड हैं. इस योजना के अंतर्गत उन सभी संस्थाओं, जिसमें 1000 से कम कर्मचारी हैं, के मामले में कर्मचारी के हिस्से का 12% तथा नियोक्ता का 12% कुल मिलाकर 24% केंद्र सरकार योगदान देगी. जिस संस्था में 1000 से ज्यादा कर्मचारी हैं वहां केंद्र सरकार कर्मचारियों के हिस्से का 12% योगदान देगी. 1 अक्टूबर, 2020 से प्रभावी होगी और 30 जून, 2021 तक लागू रहेगी और नए पात्र कर्मचारियों के संबंध में 2 वर्ष तक सब्सिडी प्रदान की जाएगी.

आपातकालीन क्रेडिट लाइन गारंटी योजना (इमरजेंसी क्रेडिट लाइन गारंटी स्कीम)

आपातकालीन क्रेडिट लाइन गारंटी योजना को सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उपक्रमों, व्यवसायों, मुद्रा ऋणकर्ताओं और व्यक्तिगत ऋणों (व्यावसायिक उद्देश्यों के लिए ऋण) के लिए 31 मार्च 2021 तक के लिए बढ़ाया गया है. जिससे कि ज्यादा से ज्यादा लोग इस योजना का लाभ उठा पाएं. इस योजना का उद्देश्य कोविड-19 के कारण हेल्थकेयर सेक्टर और 26 संकटग्रस्त सेक्टरों को क्रेडिट गारंटी सहायता प्रदान करना है. इन संस्थाओं को बकाए का 20 फीसदी तक अतिरिक्त क्रेडिट के तौर पर दिया जाएगा जिसका पुनर्भुगतान पांच साल में किया जा सकता है.

उत्पादन लिंक्ड प्रोत्साहन योजना (प्रोडक्शन लिंक्ड इंसेंटिव स्कीम)

उत्पादन को बढ़ावा देने के लिए उत्पादन लिंक्ड प्रोत्साहन योजना आरंभ की गई है ताकि अर्थव्यवस्था, निवेश, निर्यात और रोजगार सृजन को बड़ा बढ़ावा मिले. इस योजना के अंतर्गत घरेलू विनिर्माण को बढ़ावा दिया जाएगा जिससे कि देश में निर्यात बढ़े तथा आयात कम हो. इस योजना में 10 प्रमुख सेक्टरों को कवर किया गया है जिसमें एडवांस केमिकल सेल बैटरी, इलेक्ट्रॉनिक एंड टेक्नोलॉजी प्रोडक्ट्स, ऑटोमोबाइल और ऑटो पार्ट्स, फार्मास्यूटिकल ड्रग्स, टेलीकॉम एंड नेटवर्किंग प्रोडक्ट, टेक्सटाइल उत्पादन, फूड प्रोडक्ट, सोलर पीवी माड्यूल, व्हाइट गुड्स तथा स्पेशलिटी स्टील को शामिल किया गया है. इन सेक्टरों में अगले पांच वर्षों में लगभग 1.5 लाख करोड़ की राशि लगाई जाएगी.

प्रधानमंत्री आवास योजना (शहरी)

प्रधानमंत्री आवास योजना (शहरी) के अंतर्गत 18000 करोड़ रुपये का अतिरिक्त योगदान करने का निर्णय लिया गया है. ये 18000 करोड़ रुपये 2020-21 के 8000 करोड़ के बजट से अलग होंगे. इस योजना के अंतर्गत 12 लाख मकानों का काम शुरू करने के साथ ही 18 लाख घरों का कार्य पूरा करने में मदद मिलेगी.

निर्माण तथा इंफ्रास्ट्रक्चर सेक्टर को सहायता

आत्मनिर्भर भारत अभियान 3.0 में व्यापार सुगमता और सरकारी ठेकों से जुड़ी निर्माण और ढांचागत कंपनियों के लिए राहत का

ऐलान किया गया है. सरकारी निविदा के लिए अग्रिम जमा रकम और परफॉर्मेंस सिक्योरिटी में छूट प्रदान करते हुए इसे 5-10% से घटाकर 3% कर दिया गया है.

घर खरीदने वालों और डेवलपर्स को आयकर में छूट

आयकर अधिनियम की धारा 43सीए के अंतर्गत डिफरेंशियल (सर्किल रेट और एग्रीमेंट वैल्यू के बीच अंतर) को 10% से बढ़ाकर 20% तक कर दिया गया है. यह बदलाव इस योजना की घोषणा की तारीख से 30 जून 2021 तक पहली बार बेची जाने वाली केवल ऐसी आवासीय इकाइयों के लिए लागू है, जिनकी वैल्यू दो करोड़ रुपये तक है. इस आयकर राहत से मध्यम वर्ग को घर खरीदने के लिए प्रोत्साहन मिलेगा.

एग्रीकल्चर उर्वरक सब्सिडी

प्रतिवर्ष उर्वरक की खपत तेजी से बढ़ती जा रही है. खेत में पानी के बाद सबसे ज्यादा जरूरत उर्वरक की पड़ती है. इसी बात को ध्यान में रखते हुए किसानों को आगामी फसल सत्र के दौरान उर्वरकों की पर्याप्त उपलब्धता सुनिश्चित करने के लिए 65000 करोड़ रुपये फर्टिलाइजर सब्सिडी प्रदान करने के लिए दिए जाएंगे.

प्रधानमंत्री गरीब कल्याण योजना

प्रधानमंत्री गरीब कल्याण योजना 116 जिलों में चलाई जा रही है. जिसके अंतर्गत अब तक 37543 करोड़ रुपये खर्च किए गए हैं. अब 10000 करोड़ रुपये के अतिरिक्त प्रावधान का ऐलान किया गया है जो ग्रामीण रोजगार प्रदान करने के लिए प्रधानमंत्री गरीब कल्याण रोजगार योजना के अंतर्गत खर्च किए जाएंगे. इससे ग्रामीण अर्थव्यवस्था को गति मिलेगी और देश के प्रत्येक नागरिक तक रोजगार पहुंचाने में मदद मिलेगी.

निर्यात परियोजना को बढ़ावा (बूस्ट फॉर प्रोजेक्ट एक्सपोर्ट्स)

भारतीय विकास और आर्थिक सहायता योजना के तहत कर्ज सहायता के जरिए निर्यात को बढ़ावा देने के लिए एक्जिम बैंक को 3,000 करोड़ रुपये का प्रोत्साहन दिया जा रहा है. इससे एक्जिम बैंक को निर्यात को बढ़ावा देने के लिए लाइन ऑफ क्रेडिट को सुविधाजनक बनाने और भारत से निर्यात को बढ़ावा देने में मदद मिलेगी.

कैपिटल और इंडस्ट्रियल व्यय

सरकार द्वारा कैपिटल तथा इंडस्ट्रियल खर्च के लिए 10200 करोड़ रुपये का अतिरिक्त बजट निर्धारित किया गया है. यह सहायता घरेलू रक्षा उपकरण, औद्योगिक इंसेंटिव, औद्योगिक इंफ्रास्ट्रक्चर, ग्रीन एनर्जी आदि के लिए प्रदान की जाएगी ताकि उत्पादन के क्षेत्र में हमारा देश आगे बढ़ सके.

भविष्य में आत्मनिर्भर भारत के फायदे

यदि हमारा भारत आत्मनिर्भर बनता है तो इससे अनेक फायदे होगें जो न केवल जन समुदाय की, बल्कि देश की उन्नति में बहुत सहायक होंगें :

- इससे देश को बेरोजगारी के साथ-साथ गरीबी से मुक्ति मिलेगी.
- आत्मनिर्भर भारत से हमारे देश में उद्योगों की संख्या में वृद्धि होगी.
- आत्मनिर्भर बनने के साथ भारत चीजों का भंडारण काफी अधिक कर सकता है.
- हमारे देश को अन्य देशों से कम सहायता लेनी होगी.
- देश में रोजगार के अधिक अवसरों का सृजन होगा.
- भारत की आर्थिक स्थिति काफी मजबूत हो सकेगी.
- देश आगे चलकर अन्य देशों से आयात कम और निर्यात ज्यादा कर सकेगा.
- आपदा की स्थिति में बाहरी देशों से मदद की मांग कम होगी.

भारत एक कृषि प्रधान देश है और आत्मनिर्भर भारत योजना के तहत खेती को देश भर में व्यापक रूप से प्रोत्साहन दिया जा सकता है. इसके लिए अनाज का बेहतर संग्रहण करने व उसे अधिक दिनों तक गुणवत्तायुक्त बनाए रखने के लिए अधिक संख्या में कोल्ड स्टोरेज का निर्माण और फसल कटाई के उपरांत के प्रबंधन जैसे उपायों को अमल में लाकर कृषि क्षेत्र को प्रोत्साहित किया जा सकता है. माइक्रोफूड इंटरप्राइजेज क्षेत्र को विधिवत करने और 10 हजार करोड़ रुपये के आबंटन से डेयरी प्रोसेसिंग, हर्बल खेती और मधुमक्खी पालन के क्षेत्रों के विकास में भी सहायता मिलेगी.

हमें यह भी समझना होगा कि आत्मनिर्भर होने का मतलब अपने ही दायरे में खुद को समेटना नहीं है, बल्कि इसका व्यापक अर्थ वैश्विक सोच के साथ स्थानीय गतिविधियों को संपन्न करना है. बिना भारतीय हितों से समझौता किए, अंतरराष्ट्रीय सहयोग की भावना रखकर काम करना इसका अर्थ है. शुरुआती दौर में कठिनाइयों और चुनौतियों का सामना भी करना पड़े, लेकिन देश हित के लिए एक दीर्घकालीन लक्ष्य मानकर हमें इस कार्य को अंजाम देना जरूरी है. यह काम अपने आप में मुश्किल जरूर हो सकता है परंतु नामुमकिन नहीं. ❑❑❑

– महीपाल
मुख्य प्रबंधक
प्रधान कार्यालय, बड़ौदा

बिहार : विविधताओं का प्रदेश

बहुरंगी, बहुआयामी, बहुपक्षीय- ये सभी विशेषताएं हमारे देश की लोक संस्कृति की हैं, यही विशेषताएं हमारी संस्कृति को विश्व की अन्य संस्कृतियों से अलग करती हैं. वैश्विक स्तर पर हमारे देश की लोक संस्कृति का महत्वपूर्ण स्थान है. हर वर्ष विश्व के अलग-अलग कोनों से अनेक लोग हमारे देश की लोक संस्कृति को समझने के लिए आते हैं तथा इससे प्रभावित हुए बिना नहीं रह पाते हैं. देश के अलग - अलग शिक्षण संस्थानों में भी ऐसे विदेशी विद्यार्थी अध्ययनरत हैं जो हमारे देश की लोक संस्कृति को समझना और आत्मसात करना चाहते हैं.

भौगोलिक रूप से हमारा देश विभिन्न राज्यों में बंटा हुआ है तथा प्रत्येक राज्य की संस्कृति भिन्न है. देश के सभी राज्यों की लोक संस्कृति में भिन्नता होने के बावजूद हमारे देश में एकता का बोध होता है और इसीलिए कहा भी जाता है कि भारत की संस्कृति में विविधता में एकता है. ऐसी ही देश की एकता का बोध कराने वाली संस्कृति है - **बिहार राज्य की संस्कृति.**

बिहार भारत के उत्तरी भाग में स्थित एक प्रसिद्ध ऐतिहासिक राज्य है और इसकी राजधानी पटना है. 'बिहार' नाम का प्रादुर्भाव बौद्ध संन्यासियों के ठहरने के स्थान 'विहार' शब्द से हुआ है. यह प्राचीन काल में विशाल साम्राज्यों का गढ़ रहा है. यह प्रदेश, वर्तमान में भी देश की अर्थव्यवस्था में अपना अहम योगदान दे रहा है. बिहार का ऐतिहासिक नाम मगध है और यह आधुनिक पश्चिमी क्षेत्र में लगभग एक हजार वर्षों के लिए शिक्षा, शक्ति और संस्कृति का मुख्य केंद्र बिंदु रहा है. बिहार की संस्कृति भोजपुरी, मैथिली, मगही, तिरहुत तथा अंग संस्कृतियों का मिश्रण है.

चाहे बिहार की बोली हो, लोक संगीत व कला हो, रहन-सहन या वेशभूषा हो, लोक नृत्य व संस्कृति या इसकी विरासत हो....यहाँ की संस्कृति हर मायने में अनूठी है. इस राज्य का अतीत भी बहुत गौरवशाली रहा है. बिहार की संस्कृति ने देश की संस्कृति को समग्र रूप से समृद्ध करने में भी अतुलनीय योगदान दिया है. आइए ऐसी अनूठी लोक संस्कृति पर एक दृष्टि डालते हैं:

भाषा - बिहार राज्य की आधिकारिक भाषा 'हिन्दी' है. मैथिली और उर्दू बिहार राज्य की अन्य मान्यता प्राप्त भाषाएं हैं. राज्य की भाषाओं में भोजपुरी, मैथिली, अंगिका और मगही प्रमुख हैं. बिहारी भाषाओं में हिन्दी और उर्दू के अलावा 'मैथिली' को ही संविधान के आठवीं अनुसूची के तहत मान्यता प्राप्त है. हिन्दी, बिहार में शैक्षिक और आधिकारिक मामलों के लिए इस्तेमाल की जाने वाली भाषा है.

हिन्दी साहित्य में योगदान : रामधारी सिंह 'दिनकर', रामबृक्ष बेनीपुरी, फणीश्वर नाथ 'रेणु', गोपाल सिंह नेपाली और बाबा नागार्जुन सहित कई बिहारी लेखकों ने हिन्दी साहित्य में अपना बहुमूल्य योगदान दिया है. भिखारी ठाकुर को भोजपुरी के शेक्सपियर के रूप में जाना जाता है. विद्यापति मैथिली के सबसे प्रसिद्ध कवि रहे हैं.

चित्रकला : बिहार में चित्रकला की कई पारंपरिक शैलियाँ हैं. एक मिथिला चित्रकारी है, जो बिहार के मिथिला क्षेत्र में उपयोग की जानेवाली भारतीय चित्रकला की शैली है. आमतौर पर, मिथिला क्षेत्र के परिवारों में मुख्य रूप से महिलाओं द्वारा मिथिला चित्रकारी का पीढ़ी दर पीढ़ी निर्वहन किया जाता रहा है. मिथिला चित्रकारी त्यौहारों, धार्मिक आयोजनों, जन्म, उपनयन (मुंडन) और विवाह के दौरान दीवारों पर की जाती है.

मिथिला चित्रकारी परंपरागत रूप से झोपड़ियों की ताजा मिट्टी की दीवारों पर की जाती थी, लेकिन आज यह कपड़े, हाथ से बने कागज और कैनवास पर भी की जाती है. श्रीमती भारती दयाल, महासुंदरी देवी, दिवंगत गंगा देवी और सीता देवी का नाम प्रसिद्ध मिथिला चित्रकारों में शामिल है.

मिथिला चित्रकारी को मधुबनी कला भी कहा जाता है. इसमें ज्यादातर इंसानों और प्रकृति के साथ उनके जुड़ाव को दर्शाया जाता है तथा इस चित्रकारी में आमतौर पर कोई स्थान खाली नहीं रहता है. मिथिला चित्रकारी अब बिहार ही नहीं अपितु देश के साथ-साथ पूरे विश्व में भी मशहूर हो चुकी है. भारतीय रेल मंत्रालय के निर्देशानुसार बिहार के मिथिला क्षेत्र की अधिकांश रेलगाड़ियों और स्टेशन को मिथिला चित्रकारी से सजाया गया है जो इस चित्रकारी के महत्व को दर्शाता है.

संगीत : बिहार ने भारतीय शास्त्रीय संगीत में भी काफी योगदान दिया है. विद्यापति ठाकुर जैसे कवियों के साथ भारत रत्न उस्ताद

बिस्मिल्ला खान, ध्रुपद और मिश्र जैसे संगीतकारों ने संगीत के क्षेत्र में अपना योगदान देकर बिहार का नाम रोशन किया है. बिहार का लोक संगीत मूलतः धार्मिक आयोजन के इर्द-गिर्द ही घूमता है जैसे - सोहर गीत - बच्चे के जन्म के दौरान गाया जाता है, सुमंगली - शादी के उत्सव के दौरान गाया जाता है, रोपनी गीत - धान की बुवाई के मौसम के दौरान तथा कटनी गीत - धान की कटाई के मौसम के दौरान गाया जाता है.

जिस भोजपुरी संगीत की शुरुवात भिखारी ठाकुर ने की थी उसे महेंद्र मिसिर, राधमोहन चौबे 'अंजान', लक्ष्मण पाठक प्रदीप और शारदा सिन्हा ने आगे बढ़ाया और अब भोजपुरी संगीत धीरे-धीरे आम जनमानस में अपना अलग स्थान बना चुका है.

खान-पान : बिहार में ज्यादातर शाकाहारी खाना पसंद किया जाता है. भोजन में दाल, भात, रोटी, सब्जी, अचार, पापड़, सत्तू पसंद किया जाता है. बिहारी भोजन के रूप में लिट्टी-चोखा को वैश्विक पहचान मिली हुई है.

पर्व एवं त्यौहार : अन्य प्रदेशों की भाँति बिहार में भी सभी उत्सव धूमधाम से मनाए जाते हैं परन्तु बिहार के लोकप्रिय पर्व निम्नलिखित हैं :

छठ महापर्व : छठ पर्व, जिसे डाला छठ भी कहा जाता है, बिहार में मनाया जाने वाला एक प्राचीन और प्रमुख वैदिक त्यौहार है. यह वर्ष में दो बार मनाया जाता है: एक बार ग्रीष्मकाल में, जिसे 'चैती छठ' कहा जाता है, और दीपावली के लगभग एक सप्ताह बाद जिसे 'कार्तिक छठ' कहा जाता है. कार्तिक छठ अधिक लोकप्रिय है, छठ पूजा के दौरान व्रती 42 घंटे या उससे अधिक समय तक बिना पानी के उपवास करती है जो अपने आप में कठिन तपस्या से कम नहीं है. छठ पर्व इकलौता ऐसा पर्व है जिसमें उगते हुए सूर्य के साथ साथ डूबते हुए सूर्य की भी अराधना की जाती है इसलिए भी छठ पर्व को महापर्व का दर्जा प्राप्त है. बिहार के लोग जहां भी गए हैं, वे अपने साथ छठ की परंपरा साथ लेकर गए हैं. यह एक अनुष्ठान, स्नान-पर्व है जो वैदिक काल से लगातार मनाए जाने वाले सबसे पुराने त्यौहारों में से एक है.

श्रावणी मेला : श्रावणी मेला एक महीने भर का महत्वपूर्ण अनुष्ठान है, जिसे सुल्तानगंज और देवघर (अब झारखंड राज्य में स्थित) के शहरों को जोड़ने

वाले 108 किलोमीटर के मार्ग के साथ आयोजित किया जाता है. यह हर साल श्रावण महीने में आयोजित किया जाता है. तीर्थयात्री, जिन्हें कांवरिया के रूप में जाना जाता है, भगवा रंग के कपड़े पहनते हैं और सुल्तानगंज में एक पवित्र घाट में स्नान करके जल भरते हैं तथा देवघर शहर (झारखंड राज्य) में स्थापित पवित्र शिव-लिंग पर चढ़ाने के लिए नंगे पैर 108 किमी तक चलते हैं. यह आयोजन पूरे भारत के हजारों लोगों को देवघर शहर की ओर खींचता है.

सरस्वती पूजा : यह भी बिहार के प्रमुख त्यौहारों में से एक है जो मुख्यतः छात्रों द्वारा मनाया जाता है. छात्र इस त्यौहार की तैयारी लगभग एक महीने पहले शुरू कर देते हैं. यह मुख्य रूप से स्कूल और कॉलेजों में मनाया जाता है. अब घरों और इलाकों में भी सरस्वती पूजा की जाती है. इस त्यौहार में, छात्र अपनी पुस्तकों और अध्ययन सामग्री के साथ-साथ संगीत वाद्ययंत्र देवी सरस्वती के सामने प्रस्तुत करते हैं.

पितृ पक्ष मेला : यह, हर साल पितृ पक्ष के दौरान गया में फल्गु नदी के तट पर आयोजित 15 दिवसीय मेला है. भारत के सभी हिस्सों से तीर्थयात्री अपने पूर्वजों का सम्मान करने के लिए पिंड भेंट करते हैं. बिहार पर्यटन विभाग के अनुमानों के अनुसार, पितृपक्ष मेला के दौरान प्रत्येक वर्ष लगभग 500,000 से 750,000 तीर्थयात्री गया में आते हैं.

पशु मेला सोनपुर – सोनपुर पशु मेला, दीपावली के लगभग आधे महीने बाद शुरू होकर लगभग एक महीने तक चलने वाला एशिया में सबसे बड़ा पशु मेला माना जाता है. यह गंगा और गंडक नदियों के जंक्शन पर, सोनपुर शहर में आयोजित किया जाता है. यहां पर देश-विदेश से व्यापारी अपने पशुओं को बेचने और खरीदने के लिए आते हैं.

दर्शनीय स्थल : बिहार में हिन्दू, मुसलमान, बौद्ध, जैन एवं सिख धर्म के अनेक महत्वपूर्ण तीर्थ स्थल हैं. इनमें गया (हिन्दू); मनेर एवम फुलवारी शरीफ (मुसलमान); राजगीर, वैशाली व बोध गया (बौद्ध); पावापुरी (जैन) और पटना साहिब (सिख); गोल घर आदि उल्लेखनीय धार्मिक एवं भ्रमणीय स्थल हैं.

यह विडंबना है कि एक समय में बिहार सबसे समृद्ध प्राचीन भारतीय राज्यों में से एक होने के बाबजूद आज पर्यटन की दृष्टि से बिहार की गिनती भारत में नगण्य के रूप में होती है. जबकि इतिहास में मगध साम्राज्य का उद्गम यही हुआ था जिसने दुनिया को दो महत्वपूर्ण धर्म – बौद्ध और जैन धर्म दिए.

बिहार की ऐतिहासिक भूमि के कुछ महत्त्वपूर्ण दर्शनीय स्थल निम्नलिखित हैं :

1. **गया :** बिहार में सबसे प्रसिद्ध स्थानों में से एक है गया, जो फल्गु नदी के तट पर स्थित है, हिन्दू के साथ साथ बौद्ध धर्म के अनुयायी के लिए महत्वपूर्ण तीर्थस्थान है. माना जाता है कि बोधगया में ही वह पेड़ स्थित है जिसके नीचे भगवान बुद्ध को आत्मज्ञान की प्राप्ति हुई थी. हिन्दू धर्म के लोग हर वर्ष अपने पूर्वजों के पिंडदान करने के लिए फल्गु नदी के तट पर आते हैं. ऐसी मान्यता है की प्रभु श्रीराम 14 वर्षों के वनवास के उपरांत अपने पिता महाराजा दशरथ जी का पिंडदान करने के लिए गया के फल्गु तट पर आए थे.

2. **नालंदा विश्वविद्यालय :** संभवतः भारत के सबसे पुराने विश्वविद्यालयों में से एक नालंदा विश्विद्यालय बिहार में घूमने के लिए एक महत्वपूर्ण स्थल है. यह माना जाता है कि सबसे प्रसिद्ध और अंतिम जैन तीर्थंकर महावीर ने यहां 14 वर्षा–ऋतुएं बिताई. कहा जाता है कि बुद्ध ने नालंदा में आम के पेड़ के पास व्याख्यान दिया था. इस शिक्षा केंद्र की प्रसिद्धि इस हद तक थी कि प्रसिद्ध चीनी यात्री ह्वेन त्सांग ने यहां का दौरा किया था और कुछ समय तक इस विश्विद्यालय में रुके रहे.

3. **वैशाली :** वैशाली, जो कभी लिच्छवी शासकों की राजधानी थी, महत्वपूर्ण पुरातात्विक स्थल है. वैशाली अंतिम जैन तीर्थंकर भगवान महावीर की जन्मभूमि के रूप में जाना जाता है. भगवान बुद्ध ने अपना आखरी उपदेश वैशाली में ही दिया था.

4. **जल मंदिर, पावापुरी :** जलमंदिर, बिहार के पावपुरी में स्थित जैन धर्मावलंबियों का महत्वपूर्ण तीर्थस्थल है. ऐसा माना जाता है कि यह वह स्थान है जहां भगवान महावीर ने 500 ईसा पूर्व में अंतिम सांस ली थी.

5. **विश्व शांति स्तूप, राजगीर :** विश्व शांति स्तूप भारत में निर्मित 7 शांति स्तूपों में से एक है जिसे शांति और अहिंसा के संदेश को फैलाने के लिए 1969 में बनाया गया था. बुद्ध की चार मूर्तियों द्वारा चिह्नित, जो बुद्ध के जीवन के चार महत्वपूर्ण चरणों को दर्शाता है – जन्म, ज्ञान, शिक्षा और मृत्यु, भारत में जापानी वास्तुकला के बेहतरीन उदाहरणों में से एक है.

6. **शेरशाह सूरी का मकबरा, सासाराम :** 1545 ईस्वी में सम्राट शेरशाह सूरी की याद में निर्मित, यह मकबरा भारत में इस्लामी वास्तुकला का एक उत्कृष्ट उदाहरण है. यह शानदार और कृत्रिम झील के मध्य में खड़ा बलुआ पत्थर से निर्मित है और दर्शनीय है.

7. **विक्रमशिला विश्वविद्यालय :** विक्रमशिला विश्वविद्यालय बिहार के भागलपुर जिले जो कि रेशम वस्त्र उद्योग के लिए प्रसिद्ध है, में स्थित है, जिसकी स्थापना राजा धर्मपाल ने की थी. विक्रमशिला जो खंडहर बन चुका था, उसके नवीनीकरण का काम शुरू हो गया है. खुदाई के दौरान यहां बौद्ध मठों, स्तूपों और कई दीवारों पर नक्काशी के अवशेष पाए गए हैं.

8. **जानकी मंदिर, सीतामढ़ी :** जानकी मंदिर बिहार के सीतामढ़ी में स्थित है. सीतामढ़ी को भगवान राम की पत्नी सीता का जन्मस्थान माना जाता है. यहां एक मंदिर का निर्माण किया गया था. जानकी कुंड के पास स्थित एक तालाब श्रद्धालुओं के साथ–साथ पर्यटकों के लिए भी रुचि का स्थान है.

इस प्रकार हम देखते हैं कि बिहार राज्य की भाषा, बोली, साहित्य, चित्रकारी, ऐतिहासिक व दर्शनीय स्थलों की अपनी अलग ही खूबियाँ हैं तथा यह राज्य अपनी खूबियों के कारण भारत के मानचित्र पर अपना अलग स्थान रखता है. ❑❑❑

– गौतम कुमार
अधिकारी
अंचल कार्यालय, नई दिल्ली

कार्यालय में सौहार्द्रपूर्ण व्यवहार

हम अपने दैनिक जीवन के अधिकांश घंटे कार्यालय में व्यतीत करते हैं. जिस प्रकार हम अपने घर के सदस्यों के साथ एक परिवार के रूप में रहते हैं. उसी प्रकार कार्यालय के सभी कनिष्ठ/ वरिष्ठ एवं समकक्ष सदस्य हमारे परिवार की ही भांति हैं. इस परिवार में परस्पर सहयोग, स्वस्थ प्रतिस्पर्धा, खुशनुमा वातावरण, समानुभूति, मित्रता, प्रोत्साहन की भावना प्रत्येक सदस्य में होना जरूरी है और परिवार के मुखिया का यह नैतिक दायित्व है कि आपस में परस्पर तालमेल बनाने और एक स्वस्थ वातावरण के निर्माण में उपयोगी भूमिका निभाएं. एक स्वस्थ वातावरण में ही कोई भी व्यक्ति अपना सर्वश्रेष्ठ योगदान दे पाता है. यदि किसी कार्यालय के आंतरिक मूल्य श्रेष्ठ हैं तो लक्ष्य प्राप्ति हेतु बनाई गई कोई भी नीति कभी विफल नहीं हो सकती. स्वस्थ वातावरण में व्यक्ति 'मैं' की भावना से ऊपर उठकर एक टीम के रूप में 'हम' की भावना से सोचता है. वह कभी भी किसी सफलता का श्रेय स्वयं नहीं लेता बल्कि अपने अथक प्रयासों से प्राप्त सफलता का श्रेय भी अपनी टीम को दे देता है. इसलिए कार्यालय में सौहार्दपूर्ण वातावरण होना आवश्यक है और यही किसी संस्थान के अनवरत उच्च शिखर तक पहुँचने की धुरी भी है.

सौहार्दपूर्ण वातावरण का अभाव काम और उत्पादकता दोनों को प्रभावित करता है और इस पर तत्काल कार्रवाई करने की जरूरत होती है. हमें अपने सहयोगियों के प्रति समानुभूति की भावना रखकर प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से उनकी निजी समस्याएँ ज्ञात होने पर उन्हें सुलझाने में भी सहयोग करने का प्रयास करना चाहिए. अन्यथा कार्यालय में निजी समस्याएं सहकर्मी की उत्पादकता और उनके जीवन को प्रभावित करने लगती हैं.

संगठन को समझें

संगठन से जुड़ते ही हमें उसके बारे में ढेर सारी चीजों पर ध्यान देने की जरूरत होती है. तीन बुनियादी बातें जिनकी मदद से हम अपने संगठन को समझ सकते हैं:

1. संगठन का उद्देश्य
2. सहकर्मी
3. कार्य संबंधी विभिन्न पद्धतियां और प्रक्रियाएं

संगठन में लंबे समय तक अस्तित्व और विकास के लिए इन आधारभूत चीजों के बारे में अधिक से अधिक जानने का प्रयास करना चाहिए. एक बार जब आप इन पहलुओं से परिचित हो जाते हैं, तो कार्यालय का वातावरण स्वतः ही सकारात्मक बनने लगता है.

सहकर्मियों एवं वरिष्ठ अधिकारियों से बातचीत करें

अपने सहकर्मियों एवं वरिष्ठ अधिकारियों से बातचीत करना और उन्हें समझना दीर्घकालिक सफलता के लिए बहुत महत्वपूर्ण है. ये लोग पेशेवर उन्नति में मददगार हो सकते हैं. अपने सहकर्मियों से अच्छे संबंध, काम के समय आ रही समस्याओं के समाधान में आपके लिए लाभदायक सिद्ध होंगे. इनमें से कुछ लोग मूल्यांकन के दौरान आपके कार्यनिष्पादन का आकलन भी कर सकते हैं. अच्छे पेशेवर संबंध बनाना भी कार्यनिष्पादन के मूल्यांकन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है. अपने सहकर्मियों एवं वरिष्ठ अधिकारियों के साथ अच्छे संबंध बनाए रखना चाहिए.

1. **लक्षित समूह की आवश्यकताओं को समझें**

   अच्छे संबंध और बेहतर समन्वय स्थापित करने और संगठन की कार्य संस्कृति को समझते समय लक्ष्य के बारे में जानकारी हासिल करना भूलना नहीं चाहिए. आखिरकार, हम संगठन में लक्ष्य की अपेक्षाओं और आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए ही जुड़े हैं.

   इसलिए लक्ष्य हासिल करने की आवश्यकताओं और उपायों के बारे में जानकारी प्राप्त करनी चाहिए. इसके बाद अपनी कार्य की रूपरेखा पर काम करने के लिए कार्य-योजना तैयार करनी चाहिए.

2. 'स्मार्ट' लक्ष्य सेट करें

स्व-मूल्यांकन के लिए उपयुक्त लक्ष्य निर्धारित करना बेहद ज़रूरी है. खासकर तब जब हम अपने वरिष्ठ सहकर्मियों के साथ अच्छा तालमेल बनाना चाहते हों. जो भी काम हमें सौंपा गया है उसके लिए ऐसी कार्य-योजना तैयार करें जिससे हम अपना काम निर्धारित समय में पूरा कर लें.

उपर्युक्त तथ्य हमें संस्थान की कार्य-संस्कृति और नीतियों के लिए सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित करने में सहायक होते हैं. यहाँ यह उल्लेख किया जाना आवश्यक है कि वर्तमान प्रतिस्पर्धा के दौर में कठोर परिश्रम से अधिक स्मार्ट कार्य को प्राथमिकता देना अधिक आवश्यक माना जाता है. यहाँ SMART शब्द को निम्नलिखित रूप से परिभाषित कर सकते हैं:-

S- **स्पेसिफिक** - अपने काम की विशिष्ट आवश्यकताओं को समझें.

M- **मेजरेबल** - आपके कार्यालय प्रमुख जिन मानदंडों से आपके कार्यनिष्पादन का आंकलन करेंगें, उनके अनुसार अपने कार्यों को पूरा करना चाहिए.

A- **अटेनेबल** - उस कार्य को पूरा करने का वादा न करें जिसे आप पूरा करने में सक्षम नहीं हैं.

R- **रिलेवेंट** - उन कार्यों को न करें जो आपकी वर्क प्रोफ़ाइल में शामिल न हों.

T- **टाइम बाउंड** - काम समाप्त करने के लिए समय-सीमा निर्धारित करें और उन्हें समय-सीमा के भीतर पूरा करने का प्रयास करें.

अपनी स्मार्ट कार्य-योजना से आप अपने कार्यनिष्पादन की ओर अपने वरिष्ठों को आकर्षित कर सकते हैं. नीतिपरक कार्य और दृढ़संकल्प, एक पेशेवर के लिए दूसरों के मन में सम्मान पैदा करते हैं. अगर हम उपर्युक्त पांच कार्यों को शरूआती दौर में ही पूरा करने में सक्षम हैं तो इस बात की बहुत संभावना है कि हमें संगठन के लिए एक परिसंपत्ति के रूप में देखा जाएगा और कार्यालय में सकारात्मक ऊर्जा के साथ सौहार्दपूर्ण वातावरण विकसित होगा.

3. कार्यालय के सभी कर्मचारियों को समान महत्व दें

अक्सर देखने में आता है कि कार्यालय में वरिष्ठ अधिकारी और कनिष्ठ अधिकारियों के बीच उचित तालमेल का अभाव होता है. हमें यह कोशिश करनी चाहिए कि कार्यालय में स्टाफ सदस्यों के बीच आपसी समझ से बेहतर तालमेल बिठाया जाए और निरंतर आपसी व्यवहार में संतुलन को कायम रखा जाए. कार्यालय के कार्यनिष्पादन में हर कोई अपने-अपने स्तर से यथोचित योगदान देता है. कार्यालय में किसी भी स्थिति में हमारे बीच किसी भी स्टाफ-सदस्य की उपेक्षा की स्थिति स्वीकार्य नहीं होनी चाहिए. हमें अपना काम निष्ठापूर्वक करते हुए वरिष्ठ और कनिष्ठ कर्मचारियों के साथ मित्रवत व्यवहार रखना चाहिए.

4. कार्यालय में शिष्टाचार का पालन

कार्यालय में शिष्टाचार का पालन करना अति महत्वपूर्ण है. संस्थान में कर्मचारियों के लिए तैयार की गई आचरण संहिता का सख्ती से पालन किया जाना चाहिए. कार्यालय में 'क्या करें, क्या न करें' संबंधित बातों और समय-समय पर जारी दिशानिर्देशों, निर्देशों पर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए और इनका अनुपालन करना चाहिए. देश-दुनिया के कारोबार और कार्यालय परिवेश में अच्छी आदतें जैसे कि अनुशासन, स्मार्ट कार्य, ईमानदारी और समय की पाबंदी पेशेवर सफलता और व्यवसाय के निरंतर विकास का आधार होती हैं.

5. कार्यालय में अपने काम के प्रति नकारात्मक रवैया न अपनाएं

किसी भी संगठन में कार्य करते हुए यह जरूरी है कि हम अपने कार्य के प्रति सकारात्मक रवैया अपनाएं और नकारात्मक बातों से दूर रहें. अपने कार्य के प्रति उत्साहहीनता और निराशा जाहिर करना या किसी कार्य में टालमटोल करना कार्यालय में एक स्वस्थ परंपरा को बनाए रखने में बाधक है. कार्य के प्रति नकारात्मक रवैया हमारे व्यक्तिगत और संगठन के कार्यनिष्पादन को प्रभावित करता है.

6. **उचित रिकॉर्ड प्रबंधन**

कार्यालय में रिकॉर्ड प्रबंधन का कार्य करना उतना ही महत्वपूर्ण है जितना कि दिन प्रतिदिन किसी कार्य को अंजाम देना. हमें अपने द्वारा किए गए कार्य संबंधी दस्तावोजों के समुचित रखरखाव की व्यवस्था करनी चाहिए ताकि भविष्य में किसी भी संदर्भ या आवश्यकता के लिए हमें जरूरी कागजात तत्काल मिल सकें. ये कागजात हमारे द्वारा भविष्य में किए जाने वाले कार्यों का आधार हैं. इसलिए इनका रिकॉर्ड रखना अत्यंत जरूरी है.

7. **कार्यालय में उचित वेशभूषा धारण करना**

कई लोग कार्यालय जाते समय अपने कपड़ों की ज्यादा परवाह नहीं करते और अति आधुनिक दिखने के लिए अनौपचारिक वेशभूषा पहनकर कार्यालय आ जाते हैं. दरअसल हमारा पहनावा हमारी और संस्थान की पहचान और अनुशासन को भी दर्शाता है. अतः हम सभी के लिए जरूरी है कि हम कार्यालय में उचित परिधान में ही आएं और साफ-सफाई का भी पूरा ध्यान रखें.

8. **सोशल मीडिया एडिक्ट न रहें और नेट सर्फिंग में अधिक समय न बिताएँ**

वर्तमान में इंटरनेट और मोबाइल हमारे जीवन का अभिन्न अंग बन गया है. हम दिन के 24 घंटे इससे जुड़े रहते हैं. यदि हम अपने कार्यालय के समय में नेट-सर्फिंग करते रहेंगे और सोशल मीडिया में व्यस्त रहेंगे तो सौपें गए काम को समय पर नहीं कर सकेंगे और सभी सहकर्मियों का ध्यान हम पर रहेगा. इससे हमारा कार्यनिष्पादन और स्वयं की छवि प्रभावित होगी.

कार्यालय में सौहार्दपूर्ण वातावरण विकसित करने के लिए निम्नलिखित बातें अपनाई जा सकती हैं:

अपने सहकर्मियों से मेलजोल रखें एवं कार्येत्तर गतिविधियों में,

- बढ़-चढ़ कर हिस्सा लें.
- समय के पाबन्द रहें.
- कार्यालयीन कामकाज समय पर पूरा करें.
- सोच-समझकर टिप्पणी करें या ईमेल भेजें.
- कार्ययोजना बनाकर कार्य करें.
- अपने काम में लापरवाही न बरतें.

अपने स्वास्थ्य को नज़रंदाज़ न करें और अस्वस्थ होने पर आराम करें क्यूंकि स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मस्तिष्क निवास करता है.

- ऊंची आवाज़ में बातचीत से परहेज करें.
- अपनी टीम के साथ समन्वय स्थापित करें और अपने वरिष्ठों से अपने सहकर्मियों अथवा अधीनस्थों की शिकायत करने की बजाय उनकी क्षमताओं का आंकलन कर उन्हें अपना सर्वश्रेष्ठ देने हेतु प्रोत्साहित एवं मार्गदर्शित करें.

इस प्रकार एक पेशेवर के लिए कार्यालय में व्यवस्थित कार्यनिष्पादन बहुत ही जरूरी है और इसके लिए उपर्युक्त बातों पर अमल करना उसके लिए निजी तौर पर एवं संस्थान स्तर पर भी उपयोगी है. अपने कार्यों में इन्हीं बातों को शामिल कर हम परस्पर मेलजोल की भावना एवं स्वस्थ प्रतिस्पर्धा का सृजन कर तरक्की की राह पर आगे बढ सकते हैं. ❑❑❑

– आलोक सिंघल

सहायक महाप्रबन्धक एवं क्षेत्रीय प्रमुख

कोटा क्षेत्र

बड़ौदा मेधावी पुरस्कार सम्मान

क्षेत्रीय कार्यालय, सूरत शहर

सूरत शहर क्षेत्र द्वारा 27 अक्तूबर 2020 को बड़ौदा मेधावी पुरस्कार सम्मान योजना के तहत वीर नर्मदा दक्षिण गुजरात विश्वविद्यालय के एम.ए. (हिन्दी) के विद्यार्थियों को विश्वविद्यालय स्तर पर प्रथम एवं द्वितीय स्थान प्राप्त करने पर उप क्षेत्रीय प्रमुख श्री रोहित कुमार द्वारा प्रशस्ति-पत्र एवं स्मृति चिह्न भेंट कर सम्मानित किया गया.

कार्यशालाएं / अभिप्रेरणा कार्यक्रम

चेन्नई अंचल

मुंबई अंचल

पटना अंचल

चंडीगढ़ अंचल

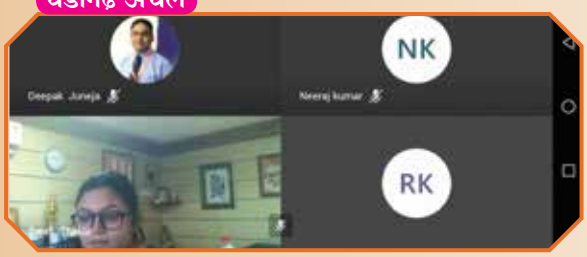

लखनऊ अंचल

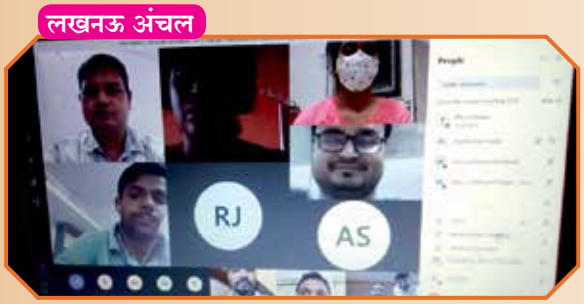

दुर्ग एवं धमतरी क्षेत्र

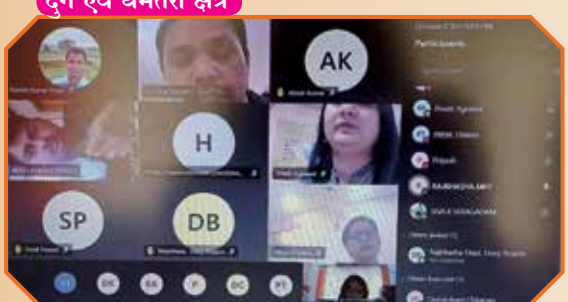

कोलकाता अंचल

पूर्णिया क्षेत्र

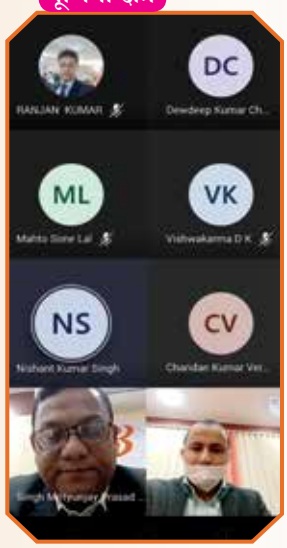

जमशेदपुर क्षेत्र

गया क्षेत्र

बृहत्तर कोलकाता क्षेत्र

बर्द्धमान क्षेत्र

जयपुर अंचल

जबलपुर व सागर क्षेत्र

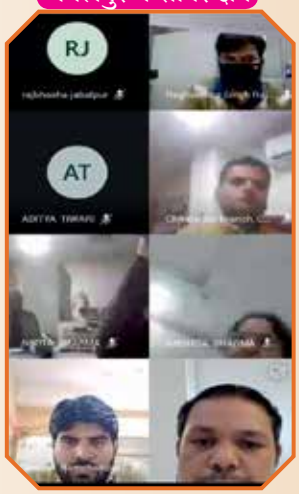

रतलाम एवं इंदौर क्षेत्र

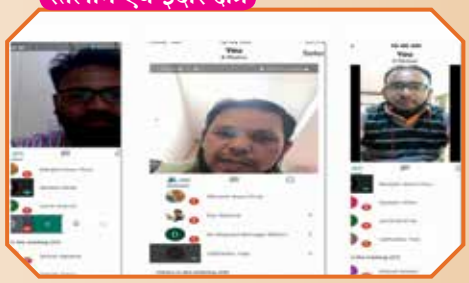

रायपुर एवं बिलासपुर क्षेत्र

संगोष्ठियां

कोलकाता अंचल द्वारा बांग्ला भाषा में ई-संगोष्ठी

कोलकाता अंचल द्वारा दिनांक 18.12.2020 को अंचल के शाखा प्रमुखों-हेतु व्यवसाय वृद्धि में क्षेत्रीय भाषा (बांग्ला) की उपयोगिता विषय पर बांग्ला भाषा में ई-संगोष्ठी का आयोजन किया गया. अंचल प्रमुख श्री देबब्रत दास ने संगोष्ठी को संबोधित किया.

क्षेत्रीय कार्यालय, रायपुर द्वारा संगोष्ठी

क्षेत्रीय कार्यालय, रायपुर द्वारा दिनांक 22 दिसंबर 2020 को 'कोरोना काल में बैंकिंग क्षेत्र का महत्व' विषय पर संगोष्ठी का आयोजन किया गया. कार्यक्रम की अध्यक्षता रायपुर क्षेत्रीय प्रमुख श्री सत्यरंजन महापात्र ने की.

भुवनेश्वर क्षेत्र द्वारा संगोष्ठी का आयोजन

भुवनेश्वर क्षेत्र एवं भुवनेश्वर क्षेत्र II के संयुक्त संयोजन में दिनांक 09 नवंबर 2020 को क्षेत्रीय प्रमुख, भुवनेश्वर क्षेत्र-II श्री अन्मय कुमार मिश्रा की अध्यक्षता में 'राजभाषा कार्यान्वयन में चुनौतियाँ एवं समाधान' विषय पर संगोष्ठी का आयोजन किया गया. कार्यक्रम में सहायक निदेशक, भारत सरकार, राजभाषा विभाग श्री निर्मल कुमार दूबे तथा श्री नित्यानंद बेहेरा, अंचल प्रमुख, पटना रहे.

आइये! सीखें

'मुहावरेदार

क्र.	हिंदी	तेलुगु	तमिल	मलयालम	
1.	आपने फिजूल में ही यह झमेला मोल लिया.	मीरु उत्ति पुण्यानिकि कष्टालु कोनि तेच्चुकुन्नारु.	नींगळ् अनावसिय-माग-तोन्दिरवै विलैक्कु वांगि इरुक्किरीर्गळ्.	वेरुते वय्यावेलि वलिच्चु वच्चु.	
2.	हर एक अपना उल्लू सीधा करना चाहता है.	अंदरू स्वाभिमानुले/अंदरू अंदरे.	एल्लोरुमे सुयनल - वादिगळ् तान्.	ऐल्लार्कुम् अवनवन्टे कार्यम्.	
3.	जो हुआ सो हुआ, बीती ताहि बिसार दे.	जरिगिंदेदो जरिगिपोयिंदि. गतम गुरिन्चि चिंतिन्चकू।	पोनदु पोगट्टुम्/पोनदै मरन्दु विडुवोम्.	कषिञ्ञतोक्के कषिञ्ञु.	
4.	वह मस्त मौला है.	अतनु षोकिल्ला रायुडु/पैला पच्चीसुगाडु	अवन् कुशाल् पेर्वळि.	अवनोरु रसिकनाणु.	
5.	दोनों भाइयों में आकाश पाताल का अंतर है.	इद्दरि अन्नदम्मुल्ल मध्य आकाशं- भूमि अंत भेदं उंदि.	अण्णन् तम्बिगळुक्कुळ् आकाशत्तुक्कुम् भूमिक्कुम् उळ्ळ-वित्तियासम् इरुक्किरदु.	रण्डु सहोदरनमारुं तम्मिल् आकाशवुं पातालवुं पोलाणु.	
6.	हवाई किले बनाने से कोई लाभ नहीं.	गालि लो पेक मेडलु कट्टडं वल्ल प्रयोजनं उंडदु.	आकाय-कोट्टै कट्टु वदिल् एन्द बलनुम् इल्लै.	आकाशक्कोट केट्टिय्यिट्टु कार्यमिल्ला.	
7.	जहां चाह वहां राह.	मनसु उंटे मार्गम उंटुंदी.	मनमिरुन्दाल् मार्गमुण्डु.	वेणमेंकिल् चक्क वेरिलुं काय्कुं.	
8.	अंत भले का भला.	मुगिंपु मंचिगा अइते अंता मंचिगा अइनट्ल	मुडिवु नल्लदेन्राल् मुळुदुम् नल्लदे.	फलं नन्नेंकिल् एल्लां नन्नु.	
9.	हर चीज़ का वक्त होता है.	प्रति दानिकी समयं वस्तुन्दी	एल्लावट्टुक्कुम् नेरम्-कालम् उण्डु.	एल्लात्तिनुं ओरो समयमुण्डु.	
10.	संसार में हर प्रकार के लोग होते हैं.	लोकंलो भिन्न रुचुलु गल वाळ्ळु अनेकुलु उंटारु.	उलगम् पल-विदम्.	बहुजनं पलविधं	
11.	ताली दोनों हाथों से बजती है.	रेंडु चेतुलतोने चप्पट्लु म्रोगुतायि.	इरण्डु कैयैयुम् तट्टिनाल् तान् ओसै वरुम्.	रण्डु कैयुं कोट्टियाले शब्दं उण्डाकू.	
12.	गया वक्त फिर हाथ आता नहीं.	गडचिन कालं मरल तिरिगि रादु.	पोनदु तिरुम्बि- वरुवदिल्लै/ पोनदु पोनदु दान्.	कालं कात्तुनिल्किल्ला.	
13.	जो हो गया सो हो गया.	जरिगिंदेदो जरिगिपोयिन्दी/	नडन्ददु नडन्दु विट्टदु.	नडन्नतिने कुरिच्चु दुः खिक्यरुतु.	
14.	चुप माने आधी मरजी.	मौनं अर्धागीकारमु.	मौनम् पादि सम्मदम्	मौनं पाति सम्मतं.	
15.	सफलता ने उसका सर फेर दिया है.	विजयं वल्ल अतनिकि गर्वं तलकेक्किंदि.	वेट्रि अवनै तलै किरंग-वैत्तुविट्टदु.	अल्प्पनु अर्थम् किट्टिय्याल अर्धरात्रियिलुम् कोडपिडिक्कुम्.	

भारतीय भाषाएं

	कन्नड	गुजराती	बांग्ला	मराठी
	नीनु विना कारणा तोन्द्रेगे सिक्किकोण्डे.	तमे अमस्ता ज आ उपाधी व्होरी लीधी.	आपनि अकारणे झामेलाय जोड़ियेछेन.	तुम्ही विनाकारण हा गोंधळ ओढवून घेतला.
	प्रतियोब्बरू तम्म-तम्म बेले बेयिसिकोळ्ळ बयसुत्तारे.	दरेकने पोतानो कक्को खरो कराववो होय छे.	प्रोत्येकेइ निजेर स्वार्थो सिद्धि कोरते चाय.	प्रत्येकाला आपला स्वार्थ साधायचा असतो.
	आदद्दायितु, चिन्तिसि फलविल्ल.	गई गुजरी भूली जाओ.	जा जाबार ता जेते दाओ/जेते दाओ ग्यालो जारा.	जे झालं ते झालं, जुन्या गोष्टी विसरून जा.
	आता तुम्बा खुशियागिरुवा व्यक्ति.	ते खुशमिजाज माणस छे.	से बेश मजार लोक/आमुदे लोक.	तो स्वच्छंद प्राणी आहे.
	इब्बरु सोदररिगू स्वभावदल्लि अजगजान्तरदा व्यत्यासा.	बन्ने भाईओना स्वभावमां आभ जमीननो फेर छे.	दुइ भाई-एर मोघ्ये आकाश-पाताल तफात.	दोन्हीं भावंडामध्ये आकाश-पाताळाचे अंतर आहे.
	गालि गोपुर कट्टि प्रयोजनविल्ला.	शेखचल्ली जेवा विचारो करवाथी कोई फायदो नथी.	शूण्ये सौधो निर्मान कोरे लाभ नेइ.	हवा महाल बांधण्यात काही फायदा नाही.
	मनस्सिद्दल्लि मार्गा.	मन होय तो माळवे जवाय.	इच्छा थाकलेइ उपाय हय.	इच्छा तिथे मार्ग
	चेन्नगि कोनेगोन्डिद्देल्लवू चेन्नवे.	अंत सारो तो सौ सारूं.	सब भालो जार शेष भालो.	शेवट गोड तर सर्व गोड
	प्रतियोन्दक्कू काला बरबेकु.	दरेकनो समय आवे छे.	सब किछुरइ एकटा सोमोय-असोमोय आछे.	प्रत्येक वस्तुची वेळ असते.
	जगत्तिनल्लि बगे-बगेया जनरिरुत्तारे.	संसारमां दरेक प्रकारना माणस होय छे.	सब रकोम लोक नियेइ जगोत/संसार.	जगात सर्व प्रकारचे लोक असतात.
	एरडु कै सेरिदरे चप्पाळे.	बे हाथ विना ताळी न पडे.	एक हाते तालि बाजेना.	दोन्हीं हाताशिवाय टाळी वाजत नाही.
	विधि यारन्नू कायदु.	गयो वखत पाछो आवतो नथी.	सोमोय एवं नदीस्रोत कखोनो फिरे आसेना.	गेलेली वेळ परत येत नाही.
	मिंचिहोदा कार्यक्के चिन्तिसि फलविल्ला.	थयुं ना थयुं थतुं नथी.	जा होये गेछे ता निये बिबाद कोरे लाभ नेइ.	जे झाले ते झाले.
	मौना अरे सम्मति	मौन ए अर्धी संमति छे.	मौनोता अर्धोसम्मोतिर लोक्खन.	मौन म्हणजे अर्धी संमती.
	अवना यशस्सु अवना तले केडिसिदे.	सफळताथी एनुं माथुं फरी गयुं छे.	साफोल्यो तार माथा खाराप कोरे दियेछे.	यशाने त्याचे डोके फिरवले आहे.

कोविड-19 और मेरा अनुभव

यूं तो एक बैंकर को आए दिन नए-नए अनुभव होते रहते हैं, कुछ मीठे तो कुछ कड़वे. परन्तु कोरोना त्रासदी की इस घड़ी में एक घटना मेरे अंतरमन को छू गई जो मुझे हमेशा याद रहेगी. हुआ कुछ यूं कि-

एक नौजवान शाखा में व्यक्तिगत ऋण के लिए आवेदन करने आया. चूँकि मैं ऋण विभाग में कार्यरत हूँ इसलिए उसे मेरे पास भेज दिया गया. देखने में वह सभ्य और अच्छे घर का लड़का लग रहा था. मैंने उसका आवेदन लिया और पूछा कि उसे यह ऋण क्यों चाहिए. उसने बताया कि कोरोना के कारण उसका वेतन आधा कर दिया गया है और उसके घर में उसके अतिरिक्त और कोई आमदनी का जरिया नहीं है. उसने बताया कि उसके घर में सिर्फ उसके माता-पिता और एक छोटा भाई है जो अभी पढ़ाई कर रहा है. मैंने उससे आवेदन ले लिया और उसे 3-4 दिन बाद आने को कहा. मैंने अपनी सहकर्मी से कहा आज कल कोरोना की आड़ में हर कोई कुछ न कुछ बहाना बनाकर ऋण लेने चला आता है.

चूंकि वह हमारी शाखा में 3 सालों से खाताधारक था और उसका वेतन इसी खाते में जमा होता था अतः मैंने उसका ऋण प्रोसेस करना शुरु किया. अगले दिन मैं ऋण की प्रक्रिया के चलते उसका पता सत्यापित करने उसके घर चली गई परन्तु उसने मुझे अन्दर नहीं आने दिया. मेरे बार- बार पूछने पर उसने बताया कि दरअसल उसके माता - पिता दोनों बीमार हैं और कोरोना से ग्रस्त भी. उसने आगे बताया कि सरकारी अस्पताल उन्हें भर्ती नहीं कर रहे हैं और निजी अस्पताल में इलाज करवाने जितने उसके पास पैसे नहीं हैं. उसने यह भी बताया कि पिछले कुछ दिनों में उनके इलाज पर काफी पैसा खर्च हो गया जिसके लिए उसने अपनी सारी बचत लगा दी. उसने यह भी बताया कि मैंने इनके इलाज के लिए अपनी कार भी बेच दी है. उसने बड़ी आशा भरी नजर से मुझे देखा और कहा कि अगर आप मेरा ऋण हेतु आवेदन स्वीकृत करती हैं तो मैं अपने पिताजी का अच्छा इलाज करवा सकता हूँ अन्यथा मुझे पिताजी के रिटायरमेंट फण्ड से पैसे निकालने पड़ेंगे जो मैं नहीं चाहता. उस नवयुवक ने यह भी आश्वासन दिया कि वह ऋण समय रहते चुकता कर देगा. उस नौजवान की बातें सुनकर मेरी आँखें भर आईं. उस युवक के मन में अपने माता- पिता के लिए इतना प्रेम देखकर मेरा मन प्रफ्फुल्लित हो रहा था.

अतः उसके घर से वापस आकर मैंने तुरंत उसका आवेदन बैंक के नियमानुसार प्रोसेस किया एवं संस्तुति के साथ शाखा प्रबंधक को भेज दिया. आवेदन बैंक के व्यक्तिगत ऋण के मापदंडों पर सही बैठा, अतः शाखा प्रबंधक ने ऋण स्वीकृत कर दिया.

अगले दिन जब उस युवक को बैंक में बुलाकर, दस्तावेज हस्ताक्षर करवाए और ऋण की राशि दी, तब उस युवक ने सधन्यवाद कहा - बैंक की यह मदद मैं कभी नहीं भूलूंगा और आपके पैसे समय से चुकाउँगा.

उसकी बात सुनकर मुझे अहसास हुआ कि हम बैंकर भी किसी के दुःख में साथी बन सकते हैं और किसी की मदद का जरिया भी. आज उस ऋण को दिए 4 महीने हो गए और उस युवक ने अपने वायदे अनुसार चारों किस्तें समय पर भरी जबकि बैंक ने ऋणकर्त्ताओं को किस्त न भरने की छूट भी दी है.

ऐसे लोग और ऐसी घटनाएं हमेशा के लिए यादगार बन जाती हैं.

❑❑❑

- रैना मराठे
प्रबन्धक
मुख्य शाखा, गुड़गाँव

बक्सा दहेज का

शंकर को रास्ता देखते हुए आज कई दिन बीत गए. सुबह हो या दोपहर या फिर संध्या का पहर हो, सम्मतपुर गांव की गली में पैंतराबाजी चलती ही रहती है. चलना और पैंतराबाजी में व्यापक अन्तर होता है. चलना हमेशा लक्ष्य के अनुरूप होता है, लेकिन पैंतराबाजी का कोई लक्ष्य नहीं होता. इसमें गांव के कई निकम्मे और ठलुए भी शामिल होकर इसे आगे बढ़ाने में सहायता करते रहते हैं. गांवों में व्याप्त इस प्रकार के क्रियाकलाप ग्रामीण सामाजिक जीवन के अभिन्न अंग होते हैं.

वाहनों के कल-पुर्जों की तरह पढ़ाई के भी कल-पुर्जे होते हैं. हम जानते हैं कि जब वाहनों के कल-पुर्जे खराब हो जाते हैं तो उसे या तो बदल दिया जाता है या फिर मैकेनिक ही ठीक कर देता है. शंकर की स्थिति कुछ ऐसी ही थी. 10वीं कक्षा की पढ़ाई के कल-पुर्जे इस कदर खराब हो चुके थे कि उसे बदलते-बदलते विद्यार्थी रूपी यह वाहन ही लगभग नया सा लगने लगा था. तथापि बड़ी मशक्कत के बाद शंकर 10वीं और 12वीं की बोर्ड परीक्षा उत्तीर्ण कर सका. ऐसे में उसके जीवन नैया के भावी भविष्य का अंदाजा भली भांति लगाया जा सकता है. आनन-फानन में अब बस एक ही विकल्प रह गया था कि किसी तरह शंकर की शादी कहीं लग जाए.

सम्मतपुर में खरीफ की फसलें कट जाने के पश्चात रबी की फसलें भी पकने वाली थीं. मटर, चने और सरसों के पौधों पर फलियां लद चुकी थी और इस प्रकार कटाई का समय नजदीक आ रहा था. कई गांवों के रास्ते मुख्य सड़क से इस प्रकार जुड़े होते हैं कि रबी फसलों के कटने से पूर्व गांव के घरों तक का रास्ता ही नहीं बन पाता, जिससे कोई भारी भरकम सामान किसी वाहन से घर तक पहुंचाया जा सके. रबी फसलों की कटाई के पश्चात ही यहां रास्ते बन पाते हैं.

बहरहाल, शंकर की शादी जगतडीह गांव के एक भूमिहीन परिवार की कन्या से लग गई. हर तरफ खुशहाली का वातावरण था. शंकर के पिता चोटीचन्द शर्मा का ध्यान अब अपने बेटे की पढ़ाई से विस्थापित होकर शंकर की शादी पर केंद्रित हो चुका था. जैसा कि लोगों के मन में अक्सर विचार आने लगते हैं, चोटीचन्द शर्मा का मन भी अब स्थिर नहीं रहा. वे दहेज के रूप में ढेर सारी राशि और कीमती वस्तुओं की प्राप्ति के आकलन में दिन रात व्यस्त रहने लगे. उधर शंकर के मन में भी नई नवेली दुल्हन के ख्वाब अपने उफान पर थे. इसके अतिरिक्त कहीं न कहीं उसके मन में भी शादी में ढेर सारे सामान मिलने को लेकर उम्मीदें जुड़ गई थीं.

कन्या पक्ष भी कम समझदार नहीं था. कुछ मामूली राशि और सस्ती परंतु लुभावनी वस्तुओं के साथ ही दहेज का अध्याय समाप्त मान लिया और इस प्रकार शादी के पश्चात कन्या घर आ गई. परंतु विषाद इस बात का रहा कि न तो अनुमानित वस्तुओं से संग्रहित बक्सा ही आया और न ही नाउम्मीदी की कोई सूचना ही वर पक्ष को दी गई.

शादी के थोड़े दिनों बाद ही पिता और पुत्र दोनों एकांत में बैठे हुए इस विषय को लेकर घोर चिंतन और चर्चा में लग जाते हैं.

(अब तो रबी की फसलें भी कट चुकी हैं, गांव के रास्ते भी बन चुके हैं, लेकिन पिता-पुत्र की दिमागी फसल अभी भी लहलहा रही थी और पकने का नाम ही नहीं ले रही थी)

पिता (चोटीचन्द शर्मा) - विवाह हुए कई सप्ताह गुजर गए, लेकिन अभी तक बक्सा नहीं आया. जगतडीह की दूरी भी कोई ज्यादा नहीं, बस वही कोई 4 या 5 मील. त्रिवेणी जी हमारे साथ भी कहीं धोखा तो नहीं कर गए.

पुत्र - मुझे बहुत चिंता हो रही है. अब तो शादी के दिन व्यतीत होने के साथ-साथ रिश्ता भी पुराना होने लगा है. अभी कुछ और समय तक यदि बक्सा नहीं आता है तो फिर अंततः उम्मीद छोड़नी ही पड़ेगी. **वास्तव में हमारे आने वाले सामान का दूरी से कोई लेना-देना नहीं है. दूरी तो केवल मन की बात है. मुझे आशंका हो रही है कि कहीं त्रिवेणी जी का मन हमारे बक्से से हटकर काफी दूर तो नहीं चला गया.**

पिता - तुम्हारा भी ध्यान तो अब इस तरफ कम ही रहता है. कभी अपने गांव की पगडंडियों की तरफ भी देख लिया करो. क्या पता त्रिवेणी जी रास्ता भटक गए हों. मुझे यकीन है कि एक दिन वह बक्सा जरूर आएगा.

पुत्र - मैं हर रोज तीनों पहर बाट निहारता रहता हूं, लेकिन इस तरह के सामान सहित कोई व्यक्ति कभी नहीं दिखता. आखिर हम कब तक हवा में इस तरह की तलवारबाजी करते रहेंगे.

पिता – चलो कुछ और दिन इंतजार कर लेते हैं. नहीं तो, किसी दिन एक चिट्ठी भेजकर उन्हें उनके वादों की याद दिलाते हैं.

पुत्र – ''**कागज के पन्नों पर पड़े शब्द उतनी अधिक तीव्रता से चोट** नहीं करते जितनी कि वाणी रूपी वाणों के प्रहार''. बेहतर होगा यदि आप किसी दिन जगतडीह हो आएं. आव-भाव सत्कार तो होगा ही, ये भी हो सकता है कि अपना बक्सा तैयार हो और आपके साथ ही आ जाए.

पिता – शंकर, **तुम्हारी बात तो मुझे भी जंच रही है, लेकिन ईमानदारी भी तो कोई चीज होती है.** त्रिवेणी जी अपने वादों के प्रति अब ईमानदार नहीं रहे. लगता है उन्हें अब ईमानदारी की शिक्षा देनी ही पड़ेगी.

पुत्र – शाम होने वाली है, मैं आज थोड़ा नहर पार की सड़क से हो आता हूं. यदि त्रिवेणी जी बक्सा लेकर आ रहे होंगे तो मैं उनकी थोड़ी मदद भी कर दूंगा.

तभी दूर से ही, गांव के रास्ते आता हुआ एक वृद्ध व्यक्ति दिखाई देने लगता है, जो चाल-ढाल में लगभग त्रिवेणी जी की तरह ही है. पिता को सूचना मिलते ही घर पर त्रिवेणी जी के स्वागत और उनके जलपान की तैयारी के आदेश दे दिए जाते हैं. शंकर जल्दी से गली का रास्ता पकड़ कर त्रिवेणी जी के रास्ते की दिशा में चल पड़ता है. पास पहुंचने पर त्रिवेणी जी के साथ कोई वाहन अथवा भारी भरकम सामान न देखकर वह हताश मन से उन्हें प्रणाम करता है. त्रिवेणी जी की पीठ पर एक छोटी सी गठरी पायी गई, जो घर आने पर 2 किलो नया गुड़, 2 फूलगोवी और लगभग 2 किलो चूड़े के रूप में प्रकट हुई.

हाय! ये तो महाअनर्थ हो गया.

मन को ढाढ़स बंधाते हुए पिता चोटीचन्द शर्मा ने पुत्र से कहा, ''बेटा मैं तो तुम्हारे ब्याह से बहुत दुखी हो गया. हम दोनों को ठग लिया गया है. काश! हमने शत्रुध्न जी की कन्या से ब्याह तय कर लिया होता तो आज हमारी ये दुर्दशा नहीं होती.''

इंसान की उम्मीदें जल्दी नहीं जातीं. मानव जीवन की यह बहुत बड़ी विडंबना है कि जीवन के अंतिम पहर में भी वह यह कहते हुए सुना गया है कि ''**बस एक बार मुझे उठ खड़े होने दो, फिर सब कुछ ठीक कर दूंगा.**'' ऐसे में चलते-फिरते शंकर नामक इस युवा जीव की उम्मीदें भला कैसे मात खा सकतीं थीं.

इस उम्मीद के साथ की त्रिवेणी जी शायद अगली बार बक्सा लेकर आएं, शंकर के पिता ने त्रिवेणी जी से कड़े लफ़्ज़े में पूछ डाला 'त्रिवेणी जी, आप को कुछ याद है'?

त्रिवेणी जी – मुझे सब कुछ याद है.

पिता – तो फिर बताइए कि क्या याद है?

त्रिवेणी जी – यही कि मेरी बेटी की शादी आपके पुत्र शंकर से हुई है और इस प्रकार मेरे और आपके परिवार का जीवन भर का रिश्ता है.

पिता – मेरा मतलब यह नहीं था.

त्रिवेणी जी – तो फिर अपना मतलब बताएं. मुझे तो इसका मतलब सिर्फ यही लगा था.

पिता – आप समझे नहीं या जानबूझ कर समझना नहीं चाहते. बताइए कि हमारे बक्से का क्या हुआ?

त्रिवेणी जी – कौन सा बक्सा?

''पिता मानो प्रेमचंद का उपन्यास 'गोदान' के नायक 'होरी' की भांति, जोकि पूरे जीवन एक गाय की आश लगाए दुनिया से चल बसा था, त्रिवेणी जी के इस प्रत्युत्तर को सुनते ही किवाड़ रहित चौखट वाले दरवाजे के पीछे पछाड़ खाकर गिर पड़ा. पिता की स्थिति ऐसी हो चुकी थी, मानो माउंट एवरेस्ट की शिखर पर अभी-अभी पहुंचे पर्वतारोही को किसी ने इस प्रकार उठाकर फेंका हो कि आधार भूमि का भी कहीं अता-पता नहीं हो.''

त्रिवेणी जी – मैंने तो शादी के समय ही सब कुछ दे दिया था, जो दे सकता था. अब मेरे पास है ही क्या, जो मैं आपको दे पाऊँगा, सिवाए अपनी सद्भावना, सहानुभूति और सलाह रूपी संपत्ति के.

पिता – तो क्या मैं अब यह मान लूँ कि बक्सा कभी नहीं आएगा?

त्रिवेणी जी – जी नहीं! मैंने ऐसा कुछ नहीं कहा है. चोटीचंद जी, आज आपके घर में मेरा जो कुछ भी अंश दिख रहा है, वह वही तो है. बस कमी आपकी रही कि आपने कभी उसे महसूस नहीं किया.

(पिता और पुत्र दोनों ही त्रिवेणी जी की बातों का तात्पर्य समझ चुके थे)

मानव जीवन की असीमित और अपरिमित दौड़ में जब मनुष्य लालचवश स्वत्व को भूलकर परतत्व में समाहित होने लग जाता है और गगनचुम्बी आकांक्षाएं रखने लगता है तो यह आवश्यक नहीं कि उसे वह साकार ही कर पाए. वह अक्सर निराशाओं की चोट खा धरा पर धराशायी होकर रह जाता है. ❑❑❑

– जय प्रकाश तिवारी
प्रबंधक
प्रधान कार्यालय, बड़ौदा

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकें

नराकास, जोधपुर

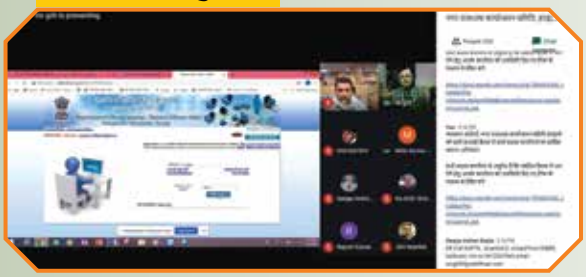

नराकास, धमतरी

नराकास, राजनांदगांव

नराकास, राजकोट

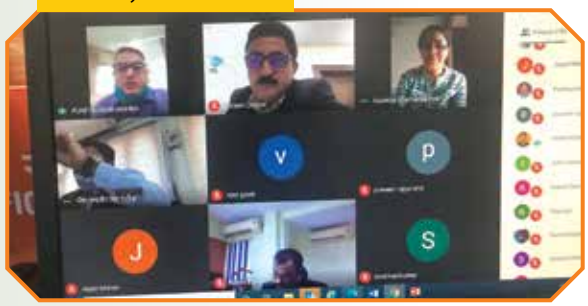

नराकास, बालोद

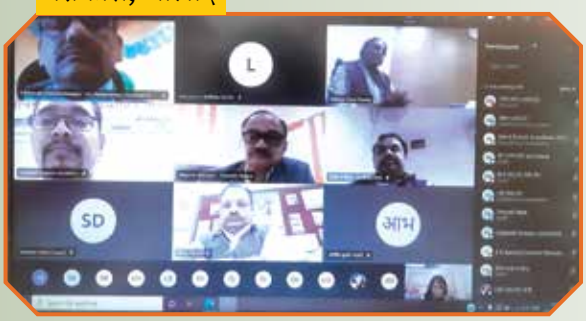

नराकास, रायबरेली

नराकास, हल्द्वानी

नराकास, मंझनपुर

नराकास, अलीराजपुर

नराकास, बेंगलूरु

पुरस्कार एवं सम्मान

बैंक नराकास, बड़ौदा का वार्षिक पुरस्कार वितरण समारोह

बैंक ऑफ़ बड़ौदा, प्रधान कार्यालय, बड़ौदा के संयोजन में कार्यरत बैंक नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, बड़ौदा के वार्षिक राजभाषा समारोह का आयोजन दिनांक 23 दिसंबर, 2020 को किया गया. कार्यक्रम के दौरान समिति द्वारा आयोजित अंतर बैंक राजभाषा शील्ड प्रतियोगिता के विजेता कार्यालयों तथा समिति के तत्त्वावधान में आयोजित प्रतियोगिताओं में विजेता रहे प्रतिभागियों को पुरस्कृत किया गया.

अंचल कार्यालय, कोलकाता को नराकास का पुरस्कार

बैंक नराकास, कोलकाता द्वारा 15 अक्तूबर 2020 को अंचल कार्यालय, कोलकाता को वर्ष 2018-19 हेतु श्रेष्ठ राजभाषा कार्यान्वयन हेतु प्रथम पुरस्कार प्राप्त हुआ.

क्षेत्रीय कार्यालय, एर्णाकुलम को नराकास का सम्मान

नराकास बैंक, कोच्चि द्वारा 'राजभाषा शील्ड पुरस्कार' के तहत वर्ष 2019-20 के लिए राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में श्रेष्ठ कार्यनिष्पादन हेतु क्षेत्रीय कार्यालय, एर्णाकुलम को द्वितीय पुरस्कार से सम्मनित किया गया. श्री के वेंकटेसन, अंचल प्रमुख, एर्णाकुलम एवं श्री जॉन ए एब्रहाम, सदस्य सचिव, नराकास बैंक, कोच्चि से पुरस्कार प्राप्त करते हुए क्षेत्रीय प्रमुख (एर्णाकुलम क्षेत्र) श्री बाबु रवि शंकर.

अंचल कार्यालय, मुंबई को नराकास का पुरस्कार

बैंक नराकास, मुंबई की राजभाषा शील्ड योजना 2019-20 के अंतर्गत अंचल कार्यालय, मुंबई को राष्ट्रीयकृत बैंक श्रेणी में प्रोत्साहन पुरस्कार प्राप्त हुआ. 16 दिसंबर 2020 को सम्पन्न हुई समिति की बैठक में उप निदेशक, भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग डॉ. सुष्मिता भट्टाचार्य ने अंचल को राजभाषा शील्ड व प्रमाणपत्र प्रदान किए.

क्षेत्रीय कार्यालय, मुजफ्फरपुर को नराकास का सम्मान

राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्यनिष्पादन करने हेतु क्षेत्रीय कार्यालय, मुजफ्फरपुर को नराकास, मुजफ्फरपुर से तृतीय पुरस्कार प्राप्त हुआ. बैंक की ओर से उक्त पुरस्कार राजभाषा अधिकारी श्री कामाख्या पाण्डेय ने ग्रहण किया.

क्षेत्रीय कार्यालय, नासिक को नराकास का सम्मान

नराकास, नासिक द्वारा क्षेत्रीय कार्यालय, नासिक को वर्ष 2019-20 हेतु सर्वोकृष्ट राजभाषा कार्यान्वयन हेतु तृतीय पुरस्कार एवं सर्वोत्कृष्ट गृहपत्रिका में द्वितीय पुरस्कार प्राप्त हुए. इन पुरस्कारों को श्री राकेश कुमार उप महाप्रबंधक (नेटवर्क 1), श्री अनिल बड़जात्या क्षेत्रीय प्रमुख, श्री सुरेश खैरनार, उप क्षेत्रीय प्रमुख एवं श्री सुशांत गणवीर प्रबंधक (राजभाषा) ने प्राप्त किया.

रायपुर क्षेत्र द्वारा हिन्दी दिवस पुरस्कार वितरण समारोह का आयोजन

क्षेत्रीय कार्यालय, रायपुर द्वारा हिन्दी दिवस 2020 के अवसर पर स्टाफ सदस्यों हेतु विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया था. इसी क्रम में 23 नवंबर 2020 को हिन्दी दिवस पुरस्कार वितरण समारोह का आयोजन किया गया. पुरस्कार वितरण क्षेत्रीय प्रमुख श्री सत्यरंजन महापात्र के करकमलों द्वारा किया गया.

दुर्ग क्षेत्र द्वारा मासिक राजभाषा उन्नायक पुरस्कार समारोह आयोजित

राजभाषा के क्षेत्र में विभागों द्वारा किए जा रहे कार्यों के लिए अक्टूबर 2020 माह हेतु मासिक राजभाषा उन्नायक पुरस्कार क्षेत्रीय प्रबन्धक श्री अरविंद काटकर द्वारा दिनांक 03.11.2020 को प्राथमिकता क्षेत्र विभाग के श्री पृयेश कुमार को प्रदान किया गया.

बड़ौदा अंचल की पत्रिका को सम्मान

बैंक की 'बड़ौदा राजभाषा पुरस्कार योजना: 2019-20' के अंतर्गत पत्रिकाओं की श्रेणी में बड़ौदा अंचल की पत्रिका 'बड़ौदा दर्पण' को तृतीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया. बड़ौदा अंचल के महाप्रबंधक श्री ए. कुमार खोसला ने यह पुरस्कार मुख्य महाप्रबंधक, कृषि, वित्तीय समावेशन एवं आर-सेटी श्री रोहित आई पटेल के कर-कमलों से प्राप्त किया.

इंदौर क्षेत्र की देवास शाखा को नराकास का सम्मान

दिनांक 24 दिसंबर 2020 को आयोजित नराकास, देवास की वार्षिक समीक्षा बैठक में इंदौर क्षेत्र की देवास शाखा को वित्तीय वर्ष 2019-20 में राजभाषा के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्यनिष्पादन करने हेतु द्वितीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया. उक्त पुरस्कार देवास शाखा प्रमुख श्री राकेश त्रिपाठी ने प्राप्त किया.

भरूच क्षेत्र मॉडल हिन्दी शाखा द्वारा मूल्यवान ग्राहक को सम्मान

शाखा के व्यवसाय वृद्धि में सहयोग हेतु मॉडल हिन्दी शाखा सेंटर पॉइंट, भरूच के शाखा प्रमुख श्री रोहित वैश्य द्वारा दिनांक 10 दिसंबर 2020 को शाखा के मूल्यवान ग्राहक को सम्मानित किया गया.

बैंक नराकास, जोधपुर द्वारा मीरा भाषा सम्मान प्राप्त

नराकास (बैंक), जोधपुर द्वारा दिनांक 21 दिसंबर 2020 को डॉ. नीना छिब्बर को लघुकथा विधा में 'मीरा भाषा सम्मान' से सम्मानित करते हुए समिति के अध्यक्ष श्री सुरेश चंद्र बुंटोलिया व उपाध्यक्ष श्री आर एल चौहान.

जबलपुर क्षेत्र द्वारा राजभाषा महाकौशल पुरस्कार समारोह

क्षेत्रीय कार्यालय, जबलपुर में अक्टूबर 2020 माह हेतु उत्कृष्ट राजभाषा कार्यान्वयन हेतु क्षेत्रीय प्रमुख श्री मदन पाल सिंह द्वारा विजेता प्रतिभागियों को राजभाषा महाकौशल रोलिंग ट्रॉफी एवं प्रशस्ति-पत्र प्रदान कर सम्मानित किया गया.

भावनगर क्षेत्र द्वारा ऑनलाइन प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता विजेता सम्मानित

भावनगर क्षेत्र द्वारा दिनांक 17 अक्तूबर 2020 को आयोजित अपनी भाषा अपनी बात - ग्राहक संवाद बुकलेट पर आधारित ऑनलाइन क्विज में विजेताओं को क्षेत्रीय प्रमुख, भावनगर क्षेत्र श्री एस एस अय्यर एवं उप क्षेत्रीय प्रमुख श्री विशाल कुमार जैन द्वारा सम्मानित किया गया.

क्षेत्रीय कार्यालय, नवसारी को ईमेल प्रतियोगिता सम्मान

बड़ौदा अंचल द्वारा हिन्दी दिवस के अवसर पर आयोजित हिन्दी में ईमेल भेजो प्रतियोगिता में नवसारी क्षेत्र को प्रथम स्थान प्राप्त हुआ. क्षेत्रीय प्रमुख श्री मनोज गुप्ता एवं उप क्षेत्रीय प्रबंधक श्री सी चक्रवर्ती ने क्षेत्र की राजभाषा अधिकारी सुश्री शालिनी सिंह को प्रशस्ति-पत्र प्रदान किया.

राजभाषा-वाक प्रतियोगिता की विजेता सम्मानित

नराकास, बिलासपुर के तत्वावधान में दिनांक 26 अक्तूबर 2020 को आयोजित तात्कालिक राजभाषा वाक प्रतियोगिता में बिलासपुर क्षेत्र की मुंगेली रोड शाखा से सुश्री आकांक्षा खालको को द्वितीय पुरस्कार प्राप्त हुआ.

आणंद नराकास की 9 वीं छमाही बैठक का आयोजन

'गीत-ग़ज़ल एवं हास्य की सुहानी शाम' कार्यक्रम का आयोजन

बैंक द्वारा 03 नवंबर 2020 को डिजिटल माध्यम से मुंबई स्थित स्टूडियो के जरिए 'गीत-ग़ज़ल एवं हास्य की सुहानी शाम' का आयोजन किया गया. इस कार्यक्रम में श्री राजेश रेड्डी, डॉ. अनंत श्रीमाली, डॉ. रजनीकांत मिश्र, श्री शेखर अस्तित्व, सुश्री पूनम खत्री एवं श्री राजीव निगम जैसे मशहूर फनकार, ग़ज़लकार एवं हास्य कलाकारों ने अपनी प्रस्तुति दी. इस कार्यक्रम को हमारे बैंक के यूट्यूब चैनल एवं फेसबुक पेज आदि पर लाइव प्रसारित किया गया.

क्षेत्रीय भाषा प्रशिक्षण कार्यक्रम

बेंगलूरु अंचल

अंचल कार्यालय, बेंगलूरु द्वारा 11 दिसंबर 2020 को अंचल की सभी शाखाओं और विजया टावर के सभी कन्नडेतर स्टाफ सदस्यों के लिए क्षेत्रीय भाषा कन्नड़ में प्रशिक्षण कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया.

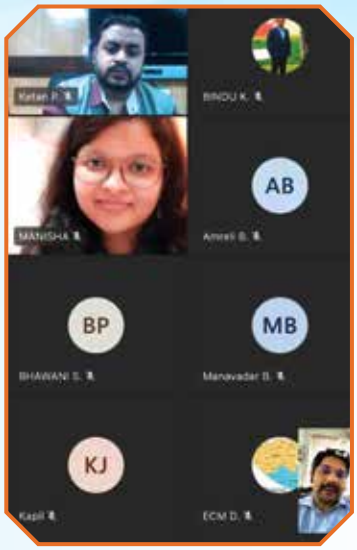

जूनागढ़ क्षेत्र

जूनागढ़ क्षेत्र द्वारा 28 दिसंबर 2020 से क्षेत्रीय भाषा (गुजराती) प्रशिक्षण पाठ्यक्रम के दूसरे बैच का शुभारंभ किया गया.

भुवनेश्वर क्षेत्र

क्षेत्रीय कार्यालय, भुवनेश्वर द्वारा 24 दिसंबर 2020 को क्षेत्रीय भाषा (ओड़िया) प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया. उक्त प्रशिक्षण में मुख्य प्रबंधक श्री मानस गौरव महाराणा ने सत्र लिया.

राजकोट क्षेत्र

राजकोट क्षेत्र द्वारा क्षेत्रीय भाषा प्रशिक्षण के अंतर्गत 'गुजराती भाषा प्रशिक्षण' के दूसरे बैच का शुभारंभ 29 दिसंबर 2020 को किया गया.

कोलकाता मेट्रो क्षेत्र

क्षेत्रीय कार्यालय, कोलकाता मेट्रो द्वारा 05 दिसम्बर, 2020 को क्षेत्रीय भाषा 'बांग्ला' प्रशिक्षण कार्यक्रम के द्वितीय बैच का शुभारंभ किया गया. कार्यक्रम का उद्घाटन उप क्षेत्रीय प्रमुख श्री शंकर कुमार झा ने किया.

भावनगर क्षेत्र-I एवं भावनगर क्षेत्र-II

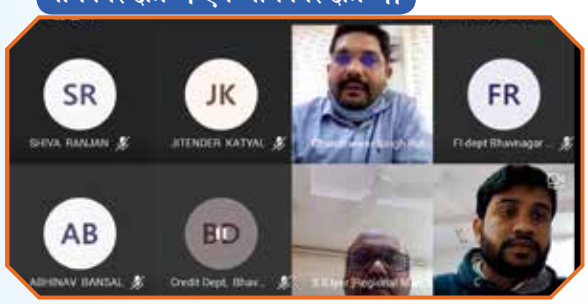

भावनगर क्षेत्र-I एवं भावनगर क्षेत्र-II द्वारा संयुक्त क्षेत्रीय भाषा प्रशिक्षण कार्यक्रम (गुजराती भाषा) का शुभारंभ 31 दिसंबर 2020 को किया गया. इस कार्यक्रम की अध्यक्षता क्षेत्रीय प्रमुख, भावनगर क्षेत्र-I, श्री एस. एस. अय्यर ने की. इस अवसर पर भावनगर क्षेत्र- II के उप क्षेत्रीय प्रमुख श्री विनोद ठाकुर भी उपस्थित रहे.

दक्षिण भारत की स्थापत्य कला

दक्षिण भारत, भारत का एक अखंड हिस्सा है जिसे देश में ही नहीं विदेशों में भी ख्याति तथा पहचान प्राप्त हुई है. अपनी स्थापत्य कला एवं संस्कृति के माध्यम से दक्षिण भारत की स्थापत्य-कला की विशेषताओं तथा इसके विकास के साथ इसके चरमोत्कर्ष तक की यात्रा को जानने से पहले स्थापत्य-कला के बारे में जानना आवश्यक है. वास्तु का अर्थ होता है रहने हेतु भवन. इस प्रकार वास्तुकला अथवा स्थापत्य कला का अर्थ है भवन निर्माण की कला. दक्षिण भारत की स्थापत्य कला के वर्तमान स्वरूप को जानने हेतु हमें दक्षिण भारत के इतिहास को जानना होगा. इससे हम दक्षिण भारत की वर्तमान स्थापत्य कला के स्वरूप को सरलता से समझ पाएंगे. दक्षिण भारत पर कई वंशों ने राज किया है और इस कारण यहाँ की स्थापत्य-कला में प्रादेशिक भिन्नता भी देखने को मिलती है. हम भारत के दक्षिणी भाग में स्थापत्य-कला की विशेषताओं पर एक सरसरी निगाह डालते हुये उनके ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य को भी जानेंगे. दक्षिण भारत के विभिन्न राज्यों के स्थापत्य शिल्प को हम निम्नलिखित बिन्दुओं के माध्यम से समझेंगे :-

तमिलनाडु की स्थापत्य-कला

जैसा कि हम पहले ही जान चुके हैं कि भारत के दक्षिणी भाग में जो स्थापत्य-कला दिखती है उसमें प्रादेशिक विभिन्नता देखने को मिलती है. हम शुरुआत करते हैं दक्षिण भारत के राज्य तमिलनाडु से. तमिलनाडु में स्थापत्य-कला की जो छाप देखने को मिलती है वह मुख्य रूप से द्रविड़ स्थापत्य-कला का उदाहरण है. आरंभ में 7वीं से 8वीं शताब्दी के मध्य तमिलनाडु में पल्लव शासकों द्वारा द्रविड़ कला का विकास किया गया. महाबलीपुरम तथा कांचीपुरम के शैल्यकृत मंदिरों में इसकी छाप मिलती है. इसी शैली को और अधिक परिष्कृत कर के चोल शासकों द्वारा विभिन्न मंदिरों का निर्माण किया गया. चोल शासकों द्वारा निर्मित मंदिरों में तंजौर का बृहदेश्वर मंदिर प्रमुख है. इस स्थापत्य कला के अनुरूप हुये निर्माणों की विशेषताओं को निम्न बिन्दुओं के माध्यम से समझ सकते हैं :-

- सीढ़ीदार एवं पिरामिडनुमा मंदिर का शीर्ष भाग
- इस कला के अनुरूप निर्मित मंदिरों की एक मुख्य विशेषता उनमें स्थित जलाशय भी हैं.
- एक अन्य विशेषता जो हमें सरलता से दिख जाती है वह है मंदिर के गर्भ-गृहों के बाहर भयानक दिखने वाली द्वारपालों की आकृतियाँ.
- इस कला के अनुरूप निर्मित मंदिरों के चारों तरफ चारदीवारी का निर्माण अनिवार्य रूप से होता है.

कर्नाटक राज्य की स्थापत्य-कला

अब हम बात करते हैं स्थापत्य कला की दृष्टि से दक्षिण भारत के केंद्र रहे कर्नाटक राज्य की. दक्षिण भारत की स्थापत्य-कला की दृष्टि से कर्नाटक हमेशा से केंद्र बिन्दु रहा है. कर्नाटक से मूलतः दो स्थापत्य शैलियों का विकास हुआ एक तो मंदिर स्थापत्य की बेसर शैली तथा दूसरी होयसल शैली. आरंभ करते हैं बेसर शैली से. इस शैली का विकास चालुक्यकालीन एवं होयसलकालीन शैलियों तथा अन्य शैलियों के संकरण एवं समावेशन से हुआ. विरूपाक्ष मंदिर, पापनाथ मंदिर तथा एहोल का दुर्गमंदिर इसके मुख्य उदाहरण हैं. इस शैली की विशेषताओं को निम्न बिन्दुओं के माध्यम से समझ सकते हैं:-

- इस शैली के अंतर्गत निर्मित मंदिरों के मुख्य पूजा स्थल के बाहरी दीवारों पर अलंकरण देखने को मिलता है.
- इस शैली के अंतर्गत निर्मित मंदिरों की प्रमुख विशेषता है मंदिरों की दीवारों पर मानव आकृतियों तथा प्रेमी युगल आकृतियों का अंकन.

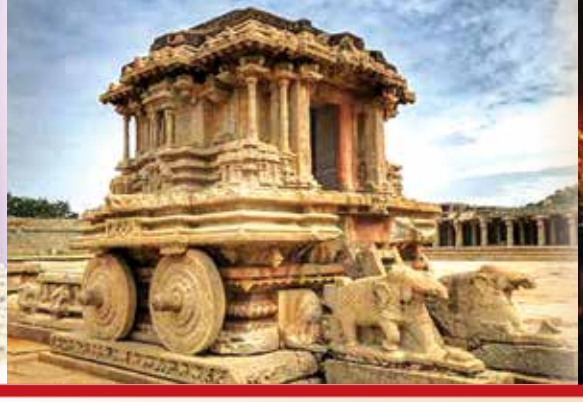

- इस शैली के मंदिरों में भारी मात्रा में सजावट देखने को मिलती है.
- मंदिरों की दीवारों पर हिन्दू पौराणिक आख्यानों से संबन्धित चित्र देखने को मिलते हैं.

होयसल शैली

अब हम बात करते हैं कर्नाटक में ही विकसित हुई होयसल शैली की. चोल और पांड्यों का शासन समाप्त होने के बाद जो वंश उभरा वह था होयसल वंश. चोलों एवं पांड्यों के बाद होयसल शासक दक्षिण भारत में स्थापत्य कला के प्रमुख संरक्षक के रूप में उभरे. इनके द्वारा निर्मित मंदिरों में बेलूर, हेलेसिड, तथा सोमनाथपुर के मंदिर उल्लेखनीय हैं. इनके द्वारा विकसित शैली की कुछ मुख्य विशेषताएँ इस प्रकार हैं:-

- मंदिरों के निर्माण में तारकीय योजना को अपनाया जाना.
- मंदिरों के प्रवेश द्वार के रूप में मकर तोरणों का निर्माण.
- पौराणिक महिला आकृति शालमंजिका /मदनीका का अंकन.

मदुरै शैली

मदुरै दक्षिण भारत के तमिलनाडु राज्य के मुख्य नगरों में से एक है. यह भारतीय प्रायद्वीप के प्राचीनतम शहरों में से भी एक है. इस शहर को अपने प्राचीन मंदिरों के लिये जाना जाता है. यह वैगई नदी के किनारे स्थित है. लगभग 2500 वर्ष पुराना यह स्थान तमिलनाडु राज्य का एक महत्वपूर्ण सांस्कृतिक और व्यावसायिक केंद्र है. इस शहर में स्थित विश्व-प्रसिद्ध मीनाक्षी मंदिर अपने ऊंचे गोपुरम और दुर्लभ मूर्तिशिल्प के कारण श्रद्धालुओं को अपनी तरफ आकर्षित करता है.

विजयनगर साम्राज्य के पतन के पश्चात 16वीं से 18वीं शताब्दी के मध्य दक्षिण भारत में नायक शासकों का शासन रहा. इनके द्वारा जिस स्थापत्य शैली का निर्माण किया गया उसे मदुरै शैली के नाम से जाना गया. मदुरै का मीनाक्षी मंदिर इसका प्रमुख उदाहरण है. इस स्थापत्य शैली की विशेषताओं को निम्न रूप में देख सकते हैं:-

- इस शैली में निर्मित मंदिरों में लंबे-लंबे गलियारों का निर्माण किया गया.
- इस शैली के अंतर्गत निर्मित मंदिरों की मुख्य विशेषता मंदिरों के निर्माण में सौ अथवा हजार स्तंभों वाले मंडपों की उपस्थिति है.
- इस शैली द्वारा निर्मित मंदिरों के निर्माण में चमकीले पत्थरों, पशुओं, देवताओं तथा राक्षसों की मूर्तियों का विशेष रूप से प्रयोग किया गया है.

बदामी गुफा मंदिर, गुरुवायूर मंदिर, इस्कॉन मंदिर, जगन्नाथ मंदिर, लेपक्षी मंदिर, लिंगराज मंदिर, मीनाक्षी मंदिर, रामेश्वरम, तिरुपति तिरुमाला बालाजी, कूदल नगर, सबरीमाला मंदिर, तिरुपति तिरुमाला बालाजी, तिरुपुन्द्रम मंदिर, कर्तिकेय आदि दक्षिण भारतीय मंदिर राज्यों की वास्तुशिल्प प्रतिभा का सार है. दक्षिण भारत में मंदिर न केवल स्थापत्य बुद्धि का प्रतीक हैं, बल्कि वे समृद्ध परंपरा और संस्कृति का जीवंत प्रतिनिधित्व करते हैं. दक्षिण भारत के मंदिर भवन जैसे कि द्रविड़ियन, होलीसला, पांड्या और चालुक्य शैली का निर्माण अगमा और शिल्पा शास्त्रों के अनुसार किया गया है. इस प्रकार दक्षिण भारत को स्थापत्य कला के दृष्टिकोण से सम्पन्न बनाने में इसकी विशिष्ट भौगोलिक स्थिति, स्थानीय परम्पराओं तथा सामग्री की उपलब्धता की महत्वपूर्ण भूमिका रही. ❑❑❑

– रामानुज शर्मा
उप महाप्रबन्धक
चेन्नै मेट्रो क्षेत्र

विमर्श

ऑनलाइन शिक्षा: फायदे और नुकसान

ज्ञान प्राप्ति के लिए किया गया निवेश सर्वाधिक ब्याज देता है.

बेंजामिन फ्रैंकलिन

शिक्षा मनुष्य के विकास और समाज की प्रगति में विशेष भूमिका निभाती है. यह सतत् चलने वाली प्रक्रिया है. मौजूदा दौर में शिक्षा का ऑनलाइन माध्यम लोकप्रिय हुआ है. ऑनलाइन शिक्षा पद्धति में विभिन्न संचार माध्यमों के जरिए शिक्षकों और विद्यार्थियों के बीच विचारों के आदान-प्रदान की राह सुलभ हुई है. शिक्षा का ई-लर्निंग माध्यम दूरस्थ शिक्षा का एक रूप है जहां शिक्षक के पास ट्यूटर की भूमिका कम और विद्यार्थियों का योगदान अधिक होता है. मौजूदा दौर में कोरोना वायरस की वजह से बच्चों की ऑनलाइन कक्षाएँ चल रही हैं. लॉकडाउन के कारण बच्चों की पढ़ाई प्रभावित न हो इसके लिए उनकी पढ़ाई ऑनलाइन जारी रखी गई. लेकिन हर सिक्के के दो पहलू होते हैं. हालांकि, बच्चे ऑनलाइन कक्षा में शामिल हो रहे हैं और ये कक्षाएं फायदेमंद साबित हो रही हैं तो वहीं इसके कुछ नुकसान भी सामने आ रहे हैं. आइए जानते हैं ऑनलाइन कक्षा से होने वाले फायदे और नुकसान के बारे में.

ऑनलाइन शिक्षा के फायदे

1. **सुलभता :** ऑनलाइन शिक्षा वर्चुअल वर्ल्ड में हर समय कहीं से भी सुलभता से प्राप्त की जा सकती है. यह न केवल पुस्तकों और अन्य संसाधनों तक सीमित है बल्कि इसके माध्यम से शिक्षकों के व्याख्यान (ऑडियो और वीडियो सहित) भी उपलब्ध रहते हैं. यही नहीं इसके द्वारा ग्रामीण इलाकों में दूरस्थ शिक्षा को प्रोत्साहन मिला है. यह जरूरतमंद विद्यार्थियों को भी ऑनलाइन पाठ्यक्रम की सुविधा प्रदान करता है. जो विद्यार्थी नियमित स्कूल नहीं जा पाते वे इस ऑनलाइन शिक्षा प्रणाली की सुविधा लेकर अपनी शिक्षा पूरी कर सकते हैं.

2. **दिव्यांगों के लिए वरदान :** समाज में दिव्यांगों को विशेष दर्जा प्रदान किया गया है. ऐसे बच्चे स्कूल जाने में असमर्थ होते हैं या फिर बड़ी कठिनाई से स्कूल जा पाते हैं. ऐसे बच्चों के लिए ऑनलाइन शिक्षा वरदान साबित हो रही है. इन विशेष बच्चों को घर बैठे आसानी से शिक्षा मिल पा रही है तथा घर वालों को भी रोजाना अपने बच्चे को स्कूल तक छोड़ने और लाने की परेशानी से मुक्ति मिल गयी है.

3. **शिक्षकों और छात्रों के लिए एक नया अवसर :** हम सभी को समय के साथ चलना चाहिए. आज का युग तकनीक का है. हर क्षेत्र में तकनीक अहम भूमिका निभा रही है. शिक्षा का क्षेत्र तकनीक से अछूता नहीं है. पहले सिर्फ बड़े शहरों के बड़े शिक्षण संस्थानों में ही तकनीक का प्रयोग किया जाता था पर अब तकनीकी शिक्षा का प्रयोग ग्रामीण क्षेत्रों में भी होने लगा है. इस तकनीक ने शिक्षकों और छात्रों को सीखने का नया अवसर प्रदान किया है. ग्रामीण शिक्षक और छात्र भी नयी तकनीक से परिचित हो पा रहे हैं. छोटे-छोटे बच्चे भी आज वर्ड फ़ाइल, पीडीएफ़ फ़ाइल, जेपीजी इमेज, गूगल मीट, एमएस टीम्स आदि से परिचित हो रहे हैं तथा तेजी से कंप्यूटर सीख रहे हैं.

ऑनलाइन शिक्षा के नुकसान :

1. **शिक्षा की गुणवत्ता में कमी :** यह ऑनलाइन शिक्षा का सबसे बड़ा नुकसान है. इसे हम निम्नलिखित अंतर से समझ सकते हैं :

	ऑफलाइन शिक्षा	ऑनलाइन शिक्षा
1	नियमित कक्षाएँ होती हैं.	कक्षाओं में अनियमितता देखी गयी है.
2	छात्र क्लास के दौरान शिक्षक से अपने प्रश्न पूछ पाते हैं.	ज्यादातर शिक्षक प्रश्न पूछने का मौका नहीं देते और बच्चे प्रश्न पूछने से हिचकते भी हैं.
3	छात्र शिक्षक को ठीक से सुन पाते हैं और शिक्षक की बात को समझ पाते हैं.	कभी-कभी तकनीकी समस्या से छात्र अपने शिक्षक की बात को ठीक से सुन नहीं पाते. अतः शिक्षक क्या पढ़ा रहे हैं उसे छात्र ठीक से समझ नहीं पाते.
4	ब्लैकबोर्ड/व्हाइटबोर्ड का स्क्रीन बड़ा होता है. छात्र सामने बैठे होते हैं उन्हें सब कुछ ठीक से दिखाई देता है अतः उन्हें ठीक से समझ में आता है.	मोबाइल/टैबलेट/लैपटाप/पीसी का स्क्रीन छोटा होता है अतः कई बार विद्यार्थी, ठीक से देख नहीं पाते और उन्हें समझ नहीं आता की शिक्षक क्या पढ़ा रहे हैं.
5	पढ़ाई के अतिरिक्त किए जाने वाले सभी क्रियाकलापों को छात्र कर पाते हैं. इन क्रियाकलापों से छात्रों का बौद्धिक और तार्किक विकास होता हैं.	पढ़ाई के अतिरिक्त किए जाने वाले सभी क्रियाकलापों जैसे खेल-कूद, व्यायाम, योगा, नृत्य, गाना, प्रतियोगिताओं में भाग लेना आदि से छात्र वंचित रह जाते हैं.
6	ऑफलाइन कक्षा के दौरान एक शिक्षक सभी छात्रों की निगरानी कर पाते हैं. यदि कोई छात्र पढ़ाई पर ध्यान न दे रहा हो या क्लास के दौरान किसी और छात्र से बातचीत/लड़ाई या सोने में लगा हो तो शिक्षक उस छात्र पर आवश्यक कार्रवाई कर सकते हैं.	ऑनलाइन शिक्षा में एक शिक्षक अपने छात्रों पर निगरानी नहीं कर पाते. विद्यार्थी शिक्षक की बात सुन रहा है या नहीं सुन रहा या फिर ऑनलाइन होते हुए भी किसी और से बातचीत करने में या फिर सोने में लगा हुआ है; इस बात का पता नहीं चल पाता.
7	शिक्षक द्वारा दिए गए होम वर्क बच्चे करके आते हैं. क्योंकि होम वर्क न करने पर दंडित और शर्मिंदा होने का भय बना रहता है. होम वर्क करने पर छात्र बेहतर ढंग से शिक्षित हो पाते हैं.	शिक्षक होम वर्क तो देते हैं पर छात्रों को करने का अधिक दबाव नहीं होता. होम वर्क न करने पर छात्र की शिक्षा की गुणवत्ता में कमी रह सकती है.
8	ऑनलाइन शिक्षा में छात्र ध्यान केन्द्रित करके पढ़ाई करते हैं. शिक्षक द्वारा दंडित होने के भय के कारण छात्र मन लगाकर पढ़ाई करते हैं. शिक्षक भी कक्षा में ध्यान से पढ़ाते हैं.	ऑनलाइन शिक्षा में विद्यार्थी ध्यान केन्द्रित करके पढ़ाई नहीं करते. मोबाइल देखते समय उनका ध्यान कहीं और भी भटक जाता है. क्योंकि उन्हें शिक्षक का कोई भय नहीं होता. यहाँ तक कि शिक्षक भी जल्द से जल्द क्लास खत्म करना चाहते हैं ऐसे में न शिक्षक ठीक से पढ़ा पाता है और न छात्र ठीक से पढ़ पाते हैं.

2. **गरीबों के लिए अवहनीय :** देश में आज भी बड़ी संख्या के लोग गरीबी रेखा के नीचे रहते हैं. ऐसे लोगों के लिए महंगे मोबाइल / टैबलेट / लैपटाप और इंटरनेट रीचार्ज खरीद पाना बहुत मुश्किल है. ये लोग मुश्किल से दिन भर का खाना पीना जुटा पाते हैं. इन लोगों के लिए ऑनलाइन शिक्षा को वहन कर पाना मुश्किल है.

3. **अनुशासनहीनता और स्वास्थ्य :** ऑफलाइन शिक्षा में स्कूल का एक तय समय होता है. उदाहरण के लिए सुबह 9 बजे से 3 बजे तक. इससे छात्रों में अनुशासन बना रहता है. उन्हें हर रोज समय पर सुबह नाश्ता करना है, समय पर स्कूल पहुँच जाना है, समय पर लंच करना तथा फिर स्कूल की छुट्टी

के बाद समय पर घर आ जाना. ऑनलाइन शिक्षा में छात्र अनुशासनविहीन हो जाते हैं. ऑनलाइन क्लास का हर रोज एक तय समय नहीं होता. ऑनलाइन शिक्षा में पूरे दिन छात्र घर पर होते हैं अतः उनकी शारीरिक गतिविधियाँ पूरी तरह रुक जाती हैं. जिसका उनके शरीर पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है और वे अक्सर बीमार पड़ सकते हैं. इसके अलावा मोबाइल या लैपटाप को अधिक समय तक देखते रहने की वजह से उनकी आँखें भी खराब हो सकती हैं.

4. **स्कूल में अध्ययन (एक व्यक्तित्व का विकास) :** ऑफलाइन शिक्षा प्रणाली में वास्तविक कक्षा में जो उत्साह का वातावरण होता है, वह ऑनलाइन शिक्षा में नहीं होता. शिक्षा सिर्फ एक पुस्तक तक ही सीमित नहीं है. स्कूल में शिक्षा लेने से छात्र के व्यक्तित्व का विकास होता है. ऑफलाइन शिक्षा से छात्रों का मानसिक, बौद्धिक, तार्किक आदि क्षमताओं का विकास होता है. ऑफलाइन शिक्षा में छात्र विभिन्न राज्य के छात्रों और शिक्षकों से घुल मिल जाते हैं जिससे वे विभिन्न भाषाओं और संस्कृतियों से परिचित हो पाते हैं. विभिन्न प्रकार के छात्र अलग-अलग चीजें सीख पाते हैं.

5. **समावेशी शिक्षा (Inclusive Education) का अभाव :** भारत सरकार द्वारा चलाए जा रहे 'सर्वशिक्षा अभियान' के अंतर्गत 'समावेशी शिक्षा' एक महत्वपूर्ण अंग है. समावेशी शिक्षा के अंतर्गत दिव्यांग छात्रों को सामान्य छात्रों के साथ पढ़ने का अधिकार प्रदान किया गया है. आमतौर पर दिव्यांग छात्रों के लिए 'विशेष बच्चों के लिए विद्यालय' (School for special children) होता है. दिव्यांग बच्चों को अलग से शिक्षा देना उचित नहीं जान पड़ता. समावेशी शिक्षा में सभी बच्चे एक साथ पढ़ाई करते हैं. जहाँ सामान्य बच्चे दिव्यांग बच्चों की मदद करते हैं. ऑनलाइन शिक्षा में समावेशी शिक्षा को शामिल कर पाना बेहद मुश्किल जान पड़ता है.

निष्कर्ष : यह जरूरी है कि हमें जमाने के साथ-साथ चलना चाहिए पर उससे भी ज्यादा यह जरूरी है कि हमें मिलने वाली शिक्षा बेहतर गुणवत्ता की हो. ऑनलाइन शिक्षा प्रणाली के फायदे और नुकसान को देखते हुए ऐसा लगता है कि शिक्षा ऑफलाइन ही होनी चाहिए. बहुत विपरीत परिस्थितियों (जैसे कोरोना महामारी) में ऑनलाइन पढ़ाई की जा सकती है. छात्रों के सर्वांगीण विकास के लिए ऑफलाइन शिक्षा बेहतर है. दिव्यांग छात्रों के लिए ऑनलाइन शिक्षा एक बेहतर विकल्प अवश्य है. आज पूरी दुनिया इंटरनेट के माध्यम से जुड़ गयी है. मान लीजिए इंटरनेट न होता और कोरोना काल आ गया होता तो फिर कैसे पढ़ाई होती? संभव है कि शिक्षा पूरी तरह से रुक गयी होती. भला है तकनीक का कि इस कोरोना काल में भी छात्र पढ़ाई कर पा रहे हैं. आज ऑनलाइन पढ़ाई करने वाले हर वक्त मोबाइल से चिपके हुए रहते हैं. डर तो इस बात का है कि कहीं कोरोना काल के बाद भी लोग ऑनलाइन पढ़ाई ही न करते रहें.

अगर शिक्षा पूरी तरह ऑनलाइन हो गयी तो छात्र 'स्कूल टाइम की मस्ती' से वंचित हो जाएँगे. ❑❑❑

– श्रेया समीर वाचासुंदर
व्यवसाय सहयोगी
पणजी शाखा

अपने ज्ञान को परखिए उत्तर: –							
1.	ख	6.	क	11.	ग	16.	ग
2.	क	7.	घ	12.	घ	17.	ख
3.	ग	8.	ग	13.	घ	18.	क
4.	ख	9.	ख	14.	ग	19.	घ
5.	घ	10.	घ	15.	क	20.	ख

बैंकिंग शब्द-मंजूषा

'A' Shares मताधिकार रहित शेयर

किसी कंपनी के ऐसे साधारण शेयर, जो समान्यतः मतदान का अधिकार प्रदान नहीं करते. मताधिकार रहित शेयर किसी कंपनी द्वारा तब जारी किए जाते हैं, जब वह किसी निश्चित लाभांश का वादा किए बिना और कंपनी पर अपना नियंत्रण कम किए बिना अतिरिक्त पूँजी जुटाना चाहती है. किन्तु ऐसे शेयर संस्थागत निवेशकों के बीच लोकप्रिय नहीं होते.

Account debtor देनदार खाते

कोई व्यक्ति अथवा संगठन, जो किसी खाते, संविदागत अधिकार अथवा सामान्य अमूर्त वस्तुओं के संबंध में भुगतान करने हेतु बाध्य होता है.

Bailor अमानतकर्ता / उपनिधाता

अमानतकर्ता / उपनिधाता वह व्यक्ति है जो अन्य व्यक्ति के पास किसी विशिष्ट प्रयोजन के लिए माल अमानत के रूप में रखता है (भारतीय संविदा अधिनियम, 1872 की धारा 148).

Beneficiary हिताधिकारी / लाभार्थी

हिताधिकारी वह व्यक्ति है, जो किसी लिखत, विप्रेषण अथवा किसी संविदा आदि के संदर्भ में वित्तीय लाभ प्राप्त करने का हकदार हो, ऋणों के संवितरण के मामले में ऋणकर्ता हिताधिकारी होगा.

Chasing the market बाजार-अनुसरण

बाजार में तेजी के दौर को देखते हुए अपेक्षाकृत ऊँची दर पर प्रतिभूतियों की खरीद, अथवा जब बाजार में गिरावट का दौर हो तब निचली दर पर प्रतिभूतियों को बेचने की प्रवृत्ति बाजार-अनुसरण कहलाती है. दूसरे शब्दों में, बाजार के रुख के अनुसार चलना ही इस संकल्पना का अभिप्रेत है.

Companion Bond सहयोगी बांड

संपार्श्विक जमानत की एक ऐसी श्रेणी, जिसकी मूल राशि पहले ही अदा कर दी जाती है और वह भी उस स्थिति में जब ब्याज-दरों में गिरावट के कारण निहित जमानत-राशि का पूर्वभुगतान कर दिया जाता है. ब्याज-दरों में जब वृद्धि का रुख होता है, तब मूलराशि के पूर्वभुगतान में गिरावट का रुख पाया जाता है. ऐसे में जारी किए गए सहयोगी बांड से सीएमओ के पूर्वभुगतान के अधिकांश जोखिम को टाला जा सकता है.

Contrarion विपरीत मार्गी

निवेश की ऐसी प्रवृत्ति जिसमें निवेशक ऐसी आस्तियों को खरीदने में रुचि रखता है जिनका निष्पादन अच्छा नहीं रहा है या ऐसी आस्तियों को बेचना चाहता है जो बाजार में अच्छा प्रतिफल दे रही होती हैं. इनमे से पहली प्रवृत्ति बाजारी गतिविधियों के सोचे-समझे चक्र के अध्ययन के आधार पर लिए गए निर्णय को दर्शाती है, अर्थात् निवेशक की ऐसी मानसिकता जो यह मानकर चलती है कि आज जिन आस्तियों के दाम कम हुए हैं, कल बाजार की स्थितियाँ बदलने के साथ उनके दाम में बढ़ोतरी निश्चित रूप से होनी है. उसी तरह से आज जिनके दाम बढ़ रहे हैं, उनमें कल की तारीख में गिरावट दर्ज होनी ही है.

Dark Money अवैध राशि

विदेशों में अर्जित अवैध राशि, जो वैध/कानूनी तरीके से देश में लाई जाती है. अकसर विदेशों में गैरकानूनी ढंग से अर्जित की गई राशि को कानूनी जामा पहनाने के लिए उसे विदेशी प्रत्यक्ष निवेश का रूप दे दिया जाता है. इस तरह का निवेश देश की अर्थव्यवस्था के लिए आगे चलकर घातक भी साबित हो सकता है क्योंकि यदि अचानक इस अवैध राशि को फिर से देश से बाहर ले जाया जाता है तो देश का आर्थिक संतुलन बिगड़ सकता है. अतएव प्रत्येक देश इस जरिए से आनेवाली राशि पर लगाम लगाने के लिए चौकन्ना रहता है.

Dirty Float परोक्षतः प्रतिबंधित मुद्रा विनिमय

ऐसी अस्थिर मुद्रा, जिसके मूल्य का निर्धारण न केवल मुक्त बाजार की माँग व आपूर्ति से जुड़े दबावों से होता है, बल्कि केन्द्रीय बैंक के हस्तक्षेप से भी जिसके मूल्य का निर्धारण किया जाता है.

Futures भावी सौदे

विनिर्दिष्ट परिणाम के वित्तीय लिखत, करेंसी या पण्य की पहले से सहमत मूल्य पर भविष्य में निर्धारित तारीख को बिक्री/खरीदने की संविदाएँ भावी सौदे कहलाती हैं. बचाव-व्यवस्था (हेजिंग) में अक्सर भावी सौदे का उपयोग किया जाता है. भविष्य के लिए विकल्प के विपरीत वायदा-संविदा दोनों पार्टियों को लेनदेन पूरा करने को बाध्य करती है. वायदा-संविदा भावी सौदे के समान है, इनमें मुख्य अंतर यह है कि भावी सौदे के अंतर्गत लेनदेन लगभग विनिमय द्वारा किया जाता है, जबकि वायदा-संविदा के अंतर्गत लेनदेन काउंटर पर किया जाता है.

(बैंकिंग पारिभाषिक कोश, भारतीय रिज़र्व बैंक से साभार)

भारतीय कला एवं संस्कृति का मौजूदा स्वरूप

आज वैज्ञानिक प्रगति व देश में संचार माध्यमों के बढ़ते उपयोगों के कारण हमारी भारतीय संस्कृति परिवर्तन के गहरे संक्रमण काल से गुजर रही है. संचार माध्यमों में बढ़ते विज्ञापनों के शोरगुल के कारण, देश में पश्चिम की भोगवादी संस्कृति का चलन बढ़ रहा है. पहले लोग कम आमदनी के बाद भी कम-से-कम साधनों के साथ, संयुक्त परिवारों में बड़े-बूढ़ों के साथ रहकर बेहद खुश थे, जबकि आज अत्यधिक आमदनी के बाद अधिक से अधिक सुख-सुविधापूर्ण साधनों के साथ, एकल परिवार में रहकर भी खुश नहीं हैं. पहले बच्चे बड़ों को साष्टाँग प्रणाम कर उनका आशीर्वाद प्राप्त करते थे, किन्तु यह वक्त के साथ पूरी तरह बदल गया. लोगों का यह 'प्रणाम' पहले ठेहुंना तक झुककर, फिर दोनों हाथों से 'नमस्कार' के रूप में बदला, किन्तु अब इसने 'हलो' व 'हाय' का रूप ले लिया है.

पारंपरिक सोच रखने वाले व्यक्तियों के लिए ये सभी तथ्य भारतीय संस्कृति के अवमूल्यन के परिचायक हो सकते हैं किन्तु बहुत से अन्य लोगों का यह स्पष्ट मत है कि यह सामाजिक विकास का ही एक रूप है. हमारी भारतीय संस्कृति अध्यात्म के साथ जुड़ी हुई एक आत्मपरक संस्कृति है जो हमारे हृदय से जुड़ी हुई है. इसलिए बच्चे भले ही आज बड़ों को साष्टांग दण्डवत् कर प्रणाम न करते हों, किन्तु अब भी उनके मन में और हृदय में बड़ों के लिए वही आदर-सत्कार व सम्मान के भाव मौजूद है. आज दीवाली पर भले ही हम मिट्टी के दीयों के स्थान पर बिजली के रंग-बिरंगे बल्बों, झालरों का उपयोग करते हों पर हमारे अन्दर इन दीवाली, होली, गणेश-चतुर्थी, जन्माष्टमी जैसे त्यौहारों को मनाने का जोश, जुनुन व श्रद्धा का भाव वही है. आज भी हमारे देश में स्वछंद प्रेम-सम्बन्धों को घृणा की दृष्टि से देखा जाता है और लोगों की तयशुदा विवाह में गहरी आस्था है. यही वजह है कि हमारे देश में तलाक की दर संयुक्त राज्य अमेरिका के 50% की तुलना में मात्र 1.1% ही है. यह सब कुछ इसी बात को इंगित करते हैं कि वैज्ञानिक व सामाजिक विकास के फलस्वरूप भले ही हमारी संस्कृति का बाह्य स्वरूप कुछ बदल गया हो किन्तु अब भी यह हमारे भीतर मूल रूप में उसी तरह मौजूद है और लोगों में अपनी इस भारतीय संस्कृति के प्रति आस्था व श्रद्धा का भाव आज भी अधिक गहरे रूप में उसी तरह मौजूद हैं.

इस तरह हम कह सकते हैं कि भारतीय संस्कृति की जड़े बहुत गहरी है. यह संस्कारों के रूप में हमें अपने परिवार, समाज, जाति व समूह द्वारा पीढ़ी दर पीढ़ी विरासत में प्राप्त हुई हैं. यही हमारा आंतरिक व्यक्तित्व, गुण, आचार-विचार, सोच व दृष्टिकोण है. चूँकि 'कला' में भी एक कलाकार अपनी सोच व दृष्टिकोण को ही विस्तृत स्वरूप प्रदान करता है, इसलिए हमारी भारतीय कलाएं यथा लेखन व काव्य-कला, संगीत व नृत्य-कला, शिल्प-कला व चित्रकला और अभिनय-कला आदि भी, भारतीय संस्कृति की तरह मूलत: अध्यात्म के साथ गहरे तौर पर जुड़ी हुई हैं. इसलिए यह सभी हमें अधिक धर्मनिष्ठा, कर्मनिष्ठा, सत्यनिष्ठा जैसे नैतिक गुणों को अपनाने हेतु अभिप्रेरित करती है और इसके साथ ही, चूँकि हमारी ये सभी कलाएं हृदय व आत्मा पर केन्द्रित हैं इसलिए यह हमें अधिक सुकुन व आनन्द भी प्रदान करती हैं.

अगर हम अपने देश के लेखन व काव्यकला की चर्चा करें तो हम पाएंगे कि आज हमारे देश का अधिकांश लेखन व काव्य रचनाएं देश की प्रमुख समस्या बेरोजगारी, भ्रष्टाचार, आतंकवाद, धर्मनिरपेक्षता आदि पर ही केन्द्रित हैं और यह हमें इससे उबरने हेतु नैतिकता का सन्देश भी देती हैं. इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों के बढ़ते उपयोग के फलस्वरूप आज लोगों की रचनाएं पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशन के साथ ही, ट्विटर, फेसबुक, वाट्स-ऐप आदि माध्यम से भी अधिक से अधिक लोगों तक पहुँच रही हैं और उन्हें इन समस्याओं से लड़ने हेतु नैतिकता का सन्देश प्रदान कर रही हैं. टीवी चैनेलों में भी हमारे लेखक व कविगण संक्षिप्त किन्तु प्रभावशाली शब्दों से निर्मित वक्तव्यों, व्यंग्यों व कविताओं द्वारा लोगों को इन समस्याओं पर विचार करने के लिए अभिप्रेरित कर रहे हैं. इस तरह आज हमारा लेखन व काव्य-कला समाज के प्रति अपने उत्तरदायित्वों का भी बखूबी निर्वाह कर रहे हैं.

अभिनय वह कला है जिसमें एक कलाकार कहानी व इतिहास के पात्रों को अपने अभिनय से जीवंत बना देता है.

आज फिल्मों व टी.वी. सीरियलों में विभिन्न धार्मिक प्रसंगों के जीवन्त अभिनय कला के प्रदर्शन से हमारे देश की सांस्कृतिक विरासत रामायण, गीता, महाभारत जैसे महाकाव्य जन-जन के बीच बहुत ही लोकप्रिय बन गए हैं. यही नहीं आज विभिन्न राजनैतिक, सामाजिक, पारिवारिक समस्याओं को भी अभिनय कला के माध्यम से हमारी फिल्मों में खूबसूरती से चित्रित किया जा रहा है तथा ऐतिहासिक महापुरूषों पर भी फिल्में व टीवी सीरियल्स निर्मित हो रही हैं, जो लोगों को देश-भक्ति व देश प्रेम का पाठ पढ़ाते हुए, उन्हें देश के लिए कुछ करने हेतु अभिप्रेरित कर रही हैं.

संगीत व नृत्य कला के महत्व को वैदिक काल से ही हमारे ऋषि मुनियों ने समझ लिया था. इसलिए वे अपनी सभी वैदिक ऋचाओं और धार्मिक ग्रंथों महाभारत, गीता, रामायण आदि को काव्य में लेकर आए. तत्पश्चात् उन्होंने इन काव्यों को संगीत के सुरों में न केवल लोगों को गाकर सुनाया, बल्कि नृत्य की विभिन्न शैलियों को निर्मित कर, इन्हें नृत्य के रूप में लोगों के सामने प्रस्तुत भी किया. इन सबके फलस्वरूप ये सभी वैदिक ऋचाएं, रामायण, गीता आदि हमारी स्मृति में इतने गहरे तक बैठ गए हैं कि आज इतनी पीढ़ियों के गुजर जाने के बाद भी हम अपनी इन अमूल्य धरोहरों को अब तक सुरक्षित रख पाएं हैं.

आज विज्ञान में हुई तरक्की के फलस्वरूप कम्प्यूटर नेटवर्क, यू-ट्यूब, फिल्मों, टीवी चैनेलों आदि के कारण, संगीत व नृत्य की कला घर-घर में पहुँच गई है. प्रारंभ से ही हमारे देश में संगीत व नृत्य विविध रूपों में जैसे कर्नाटक संगीत, उत्तर भारतीय संगीत, भरतनाट्यम नृत्य, कुचीपुड़ी नृत्य आदि रूपों में विद्यमान हैं. आज हमारे देश के संगीत व नृत्य के कलाकार इन सभी शैलियों को आपस में खूबसूरती के साथ मिलाकर, आधुनिक वाद्य-यंत्रों आदि की मदद से, इन्हें अत्यधिक मनोहारी रूप में लोगों के सामने प्रस्तुत कर रहे हैं. टीवी चैनेलों में आयोजित संगीत व नृत्य से सम्बन्धित कार्यक्रम व प्रतियोगिताओं ने भी लोगों को संगीत व नृत्य के प्रति बहुत आकर्षित किया है.

संगीत व नृत्य कार्यक्रमों के माध्यम से हमारे कलाकार आज लोगों को देश, परिवार, समाज आदि के नाम पर कुछ गूढ़ संदेश भी प्रदान कर रहे हैं, जो लोगों को बहुत अधिक प्रभावित कर रहे हैं. यही नहीं हमारे देश की संगीत व नृत्य की सभी शैलियां ऋषि-मुनियों के गूढ़ ज्ञान से निकली होने के कारण अध्यात्म से गहरे तौर पर जुड़ी हुई हैं. इसलिए यह सभी को असीम आनन्द व सुख की भी अनुभूति प्रदान कर रही हैं. इसी वजह से आज हमारे देश की यह संगीत व नृत्य कलाएं हमारे अपने देश में ही नहीं अपितु विदेशों में भी बहुत ही लोकप्रिय बनी हुई हैं.

शिल्प कला व चित्रकला दोनों ही भारत की अति प्राचीन कलाएं हैं. भीमबेटका, मोहनजोदड़ो, अजंता-एलोरा तथा देश के प्राचीन मंदिरों में बने चित्रों, शिल्पों से यह बात स्वत: ही स्पष्ट हैं. इस तरह हमारे देश की इस शिल्पकला व चित्रकला ने हमारे लोगों की संस्कृति व श्रद्धा के भाव को अधिक मजबूती प्रदान करने में सहायता प्रदान की.

आज हमारे शिल्पकार व चित्रकार धार्मिक मूर्तियों व चित्रों को तो बना ही रहे है किन्तु इसके साथ ही वे कला के अन्तरगत कुछ उत्कृष्ट अभिनव प्रयोग भी कर रहे हैं. ओडिशा के कलाकार श्री सुदर्शन पटनायक समुद्री रेत पर तरह-तरह की आकृतियां बनाकर जहां पूरे देश में मशहूर हो गए हैं वहीं सेंट स्टीफन कॉलेज के चित्रकला शिक्षक श्री बच्चनसिंह चौहान ने चावल के छोटे-छोटे दानों में विभिन्न देवी-देवताओं और महापुरूषों के चित्र बनाकर सबको चौका दिया है. यही नहीं आज इस चित्रकला में कार्टून की कला भी जुड़ गई हैं और आज हमारे देश के बहुत से लोग श्री आर.के. लक्ष्मण जैसे कार्टूनिस्टों द्वारा बनाए गए चुटीलें व प्रभावशाली कार्टूनों पर पूरी तरह फिदा भी हैं. इसी प्रकार आज हमारे देश के प्रसिद्ध चित्रकार श्री एम.एफ. हुसैन की बनाई गई पेन्टिंगस देश-विदेश में लाखों-करोड़ों डालर में बिक रही हैं. यह सब कुछ निश्चित ही हमारे देश में आज शिल्प-कला व चित्रकला के उत्कृष्ट स्वरूप को व उसके उज्जवल भविष्य को ही अभिव्यक्त करती हैं.

सारांशत: हमारी भारतीय संस्कृति वैदिक ऋषियों के धर्म-निष्ठ, कर्म-निष्ठ व सत्य-निष्ठ आचरणों से निर्मित वह

संस्कृति है जो हमें अपने पुरखों से पीढ़ी-दर-पीढ़ी, आचारों, विचारों व संस्कारों के माध्यम से विरासत में प्राप्त हुई हैं. इसके फलस्वरूप हमारा दृष्टिकोण अधिक गहरे में आध्यात्मिक है और इसी आध्यात्मिक सोच से निर्मित हमारी विभिन्न कलाएं जैसे संगीत कला, नृत्य कला, काव्य कला आदि हमारे हृदय को छूती हैं और ये हमें अधिक सुकुन प्रदान करती हैं. यही वजह है कि पश्चिम के डिस्को-डांस, पॉप-संगीत आदि, पानी के बुलबुलों की भांति कुछ समय के लिए ही हमारे भारतीय समाज में आकर्षण का केन्द्र बन पाए और सदा से ही हम भारतीयों को प्रमाणिक रूप में अपनी शास्त्रीय धुनों पर निर्मित गाने ही अधिक मधुर प्रतीत हो रहे हैं. इस तरह आज हमारी भारतीय कला व संस्कृति आध्यात्म के साथ गहराई से जुड़कर लोगों को आत्मिक सुख व संतोष प्रदान करने के साथ ही, विश्व भर के लोगों को सत्य व अहिंसा का पाठ भी पढ़ा रही है. ❑❑❑

– श्रीनिवास कृष्णन
प्रबन्धक, मुख्य शाखा
एम.जी. मार्ग, पोरबन्दर

प्रतियोगिताएं

भोपाल अंचल

अंचल कार्यालय, भोपाल द्वारा दिनांक 02 नवंबर 2020 को श्री सत्यसाई महिला महाविद्यालय, भोपाल में निबंध लेखन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया. उक्त प्रतियोगिता में 47 छात्राओं ने प्रतिभागिता की.

नागपुर क्षेत्र

नागपुर क्षेत्र में क्षेत्रीय भाषाओं को बढ़ावा देने हेतु 'अपनी भाषा अपनी बात' – ग्राहक-बैंकर संवाद संबंधी संकलन पर ऑनलाइन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें क्षेत्रीय प्रबंधक श्री संजीव सिंह ने पुरस्कार प्रदान किए.

बैंक नराकास, दिल्ली

बैंक नराकास, दिल्ली के तत्वावधान में नई दिल्ली अंचल द्वारा दिनांक 16 अक्टूबर, 2020 को सदस्य बैंकों के प्रतिभागियों के लिए हिन्दी मुहावरे एवं लोकोक्ति प्रतियोगिता का आयोजन किया गया. प्रतियोगिता का शुभारंभ अंचल प्रमुख श्रीमती सम्मिता सचदेव के मार्गदर्शी संबोधन से हुआ.

मुंबई अंचल

अंचल कार्यालय, मुंबई द्वारा 27 नवंबर 2020 को गैर-मराठी स्टाफ सदस्यों के लिए 'अपनी भाषा-अपनी बात' – ग्राहक-बैंकर संवाद संबंधी संकलन – मराठी संस्करण' के आधार पर ऑनलाइन प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता का आयोजन किया गया. इस प्रतियोगिता का उद्घाटन अंचल प्रमुख श्री मधुर कुमार ने किया.

बरेली क्षेत्र

क्षेत्रीय कार्यालय, बरेली शहर द्वारा 01 दिसंबर 2020 से दिनांक 10 दिसंबर 2020 तक समस्त विभागों के लिए 'हिन्दी ई-मेल प्रतियोगिता' का आयोजन किया गया है. मानव संसाधन प्रबंधन विभाग ने सर्वाधिक ई-मेल प्राप्त कर प्रथम स्थान प्राप्त किया. क्षेत्रीय प्रमुख श्री अतुल कुमार बंसल ने अनुपम मिश्र एवं मा.सं.प्र. की टीम को पुरस्कृत किया.

अपने ज्ञान को परखिए

1. हाल ही में किस भारतीय को ग्लोबल विजनरी ऑफ सस्टेनेबल बिजनेस एंड पीस पुरस्कार से सम्मानित किया है?
   (क) मुकेश अंबानी (ख) रतन टाटा
   (ग) अज़ीम प्रेमजी (घ) दिलीप संघवी
2. रेलवे बोर्ड के नए चेयरमैन और CEO के रूप में किसे नियुक्त किया गया है?
   (क) सुनीत शर्मा (ख) राघव प्रसाद
   (ग) सुखदेव सिंह (घ) दिनेश कृपाल
3. किस भारतीय क्रिकेटर को हाल ही में आईसीसी स्पिरिट ऑफ क्रिकेट अवार्ड ऑफ द डिकेड (ICC Spirit of Cricket Award of the Decade) मिला है?
   (क) विराट कोहली (ख) रवीन्द्र जडेजा
   (ग) महेन्द्र सिंह धोनी (घ) शिखर धवन
4. प्रतिवर्ष 23 दिसम्बर को किस व्यक्ति के जन्मदिवस पर 'राष्ट्रीय किसान दिवस' मनाया जाता है?
   (क) महेंद्र सिंह टिकैत (ख) चौधरी चरण सिंह
   (ग) चौधरी अनंत सिंह (घ) जसवंत सिंह वर्मा
5. 'ऐस अगेन्स्ट ओड्स' किस खिलाड़ी की आत्मकथा है?
   (क) विश्वनाथन आनंद (ख) अभिनव बिंद्रा
   (ग) साइना नहवाल (घ) सानिया मिर्ज़ा
6. सबसे पुरानी भारतीय दवा आयुर्वेद का वर्णन किस वेद में किया गया है?
   (क) अथर्ववेद (ख) ऋग्वेद
   (ग) यजुर्वेद (घ) सामवेद
7. किस राज्य की सरकार ने हाल ही में, सरकारी कर्मचारियों के जीन्स टी-शर्ट पहनने पर रोक लगाई है?
   (क) गुजरात (ख) तमिलनाडु
   (ग) राजस्थान (घ) महाराष्ट्र
8. ऊन का सबसे ज्यादा उत्पादन करने वाला देश कौन सा है?
   (क) इंडिया (ख) इंग्लैंड
   (ग) ऑस्ट्रेलिया (घ) अमेरिका
9. किस शहर को भारत का कैथेड्रल कहा जाता है?
   (क) बनारस (ख) भुवनेश्वर
   (ग) कांचीपुरम (घ) मदुरै
10. कैम्ब्रिज डिक्शनरी ने किस शब्द को वर्ड ऑफ द ईयर 2020 के लिए चुना है?
    (क) लॉकडाउन (ख) वेक्सिन
    (ग) आइसोलेशन (घ) क्वारंटाइन
11. किस पहली भारतीय वेब सीरीज ने इंटरनेशनल एमी अवार्ड जीता है?
    (क) द फेमिली मेन (ख) मिर्ज़ापुर
    (ग) दिल्ली क्राइम (घ) क्रिमिनल जस्टिस
12. निम्नलिखित में से किस देश का पासपोर्ट दुनिया का सबसे शक्तिशाली पासपोर्ट है?
    (क) सिंगापुर (ख) यूके
    (ग) यूएसए (घ) जापान
13. हाल ही में, किस देश ने प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी को लीजन ऑफ़ मेरिट (Legion of Merit) अवार्ड से सम्मानित किया है?
    (क) जापान (ख) फ्रांस
    (ग) इजराइल (घ) अमेरिका
14. निम्नलिखित में से किसे वोडाफोन-आइडिया ने अपना ब्रांड नेम रखा है?
    (क) वोआई (Vo-i) (ख) वोडाआई (Voda-i)
    (ग) वीआई (Vi) (घ) वो-आईडी (Vo-Id)
15. पीएम मोदी ने हाल ही में, किस राज्य में दुनिया के सबसे बड़े 'हाईब्रिड नवीकरणीय ऊर्जा पार्क' का शिलान्यास किया है?
    (क) गुजरात (ख) राजस्थान
    (ग) महाराष्ट्र (घ) पश्चिम बंगाल
16. चुनाव आयोग ने हाल ही में, किसे पंजाब का स्टेट आइकॉन नियुक्त किया है?
    (क) विराट कोहली (ख) स्मृति मंधाना
    (ग) सोनू सूद (घ) वरुण धवन
17. विटामिन-सी का रासायनिक नाम क्या है?
    (क) रेटिनॉल (ख) एस्कोर्बिक एसिड
    (ग) थियामिन (घ) फोलिक एसिड
18. इनमें से कौन सी कश्मीरी भाषा की लिपि है?
    (क) शारदा लिपि (ख) नागरी लिपि
    (ग) ब्राह्मी लिपि (घ) गुरुमुखी लिपि
19. ऋग्वेद में सबसे पवित्र नदी किसे माना गया है?
    (क) नर्मदा नदी (ख) गंगा नदी
    (ग) जमुना नदी (घ) सरस्वती नदी
20. हाल ही में, किस राज्य में दुनिया की पहली 'ट्राम लाइब्रेरी' शुरू हुई है?
    (क) हिमाचल प्रदेश (ख) पश्चिम बंगाल
    (ग) झारखंड (घ) उत्तर प्रदेश

(उत्तर के लिए पृष्ठ संख्या 40 देखें)

''कार्पोरेट चाणक्य''

कार्पोरेट चाणक्य, हर व्यक्ति के लिए पढ़ने योग्य एक उपयोगी पुस्तक है, जीवन में आगे बढ़ने और कॉर्पोरेट जगत में सफल होने के लिए उत्तम मार्गदर्शक है और प्राचीन भारत की प्रबंधन बुद्धिमत्ता को आधुनिक रूप में हमारे सामने दर्शाती है. इस पुस्तक के लेखक डॉ. राधाकृष्णन पिल्लई हैं. उनके द्वारा लिखी गई यह पुस्तक व्यावसायिक एवं व्यक्तिगत जीवन में सफल बनने में अत्यंत महत्वपूर्ण साबित हुई. लेखक ने अपने जीवन के अनुभव को पुस्तक की रचना के माध्यम से समाज के साथ साझा किया है. पुस्तक के लेखक डॉ. राधाकृष्णन पिल्लई 'चाणक्य इंस्टीट्यूट ऑफ पब्लिक लीडरशिप' के संस्थापक निदेशक हैं.

इस पुस्तक में लेखक ने ई.पू. चौथी शताब्दी में चंद्रगुप्त मौर्य के दरबार में रहे मंत्री चाणक्य के विचारों को आज के आधुनिक समाज पर प्रतिबिंबित किया है. चाणक्य उस समय के प्रसिद्ध राजनीतिज्ञ, अर्थशास्त्री थे और असाधारण बुद्धिमत्ता वाले व्यक्तित्व थे. उन्होंने 'अर्थशास्त्र' पुस्तक लिखा है, जो चाणक्य नीति से जाना जाता है. इसमें प्रस्तुत किए गए विचार और नीति आज की आधुनिक व्यावसायिक दुनिया में बेहद उपयुक्त हैं. चाणक्य के सिद्धांत किसी छोटे या बड़े व्यवसायी, उद्यमी और श्रमिक वर्ग द्वारा भी अपनाए जा सकते हैं. डॉ. राधाकृष्णन पिल्लई ने इस पुस्तक में तीन महत्वपूर्ण विषयों पर प्रकाश डाला है 1. नेतृत्व 2. प्रबंधन और 3. प्रशिक्षण, जो किसी भी व्यवसाय, उद्यम, कंपनी या कार्यालय के लिए अत्यावश्यक है.

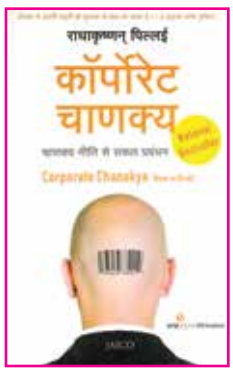

अब हम देखते हैं कि लेखक ने किस तरह इन उपर्युक्त विषयों पर विस्तृत विवरण प्रस्तुत किया है.

नेतृत्व : लेखक ने पुस्तक में कॉर्पोरेट स्तर पर नेतृत्व के गुण और विशेषताओं का उल्लेख किया है, जैसे कि लीडर की ताकत, उत्तरदायित्व, निर्णय लेने की क्षमता, अपने कार्यालय तथा कर्मचारियों का प्रबंधन एवं नियंत्रण, गोपनीयता को बनाए रखने की रीति, अवसरों का सदुपयोग करना, समय पर उचित परामर्श देना आदि. लीडर बनना या शीर्ष स्थान प्राप्त करना मुश्किल तो है, परंतु वहां बने रहना और भी मुश्किल और प्रतिस्पार्धात्मक है. लीडर को काम, क्रोध, लोभ, अभिमान, अहंकार, अति उत्साह जैसे नकारात्मक विचारों से बचना है.

प्रबंधन : कॉर्पोरेट चाणक्य का दूसरा महत्वपूर्ण विषय है - प्रबंधन. लेखक ने इस बारे में कर्मचारी प्रबंधन जैसे कि योग्य प्रबंधकों का चयन, पद का निर्धारण, कर्मचारियों की समस्याओं का समाधान, कर्मचारियों की सुरक्षा पर जोर, उत्तम कार्यनिष्पादन करने वालों को पुरस्कृत करना आदि का उल्लेख किया है. इसके साथ साथ वित्त संबंधी पहल जैसे कि सही लेखा-जोखा, आंतरिक लेखा पद्धति, बजट बनाना, संकट के समय में राजकोष (आधुनिक काल के बैंक) की देख-रेख, समय पर करों का भुगतान, संपत्ति निर्माण के लिए धन, आदि. यह उल्लेखनीय बात है कि लेखक ने उपर्युक्त प्रत्येक विषय के संबंध में चाणक्य द्वारा लिखित अर्थशास्त्र की नीतियों और स्रोतों का संदर्भ दर्शाया है.

चाणक्य ने कहा है 'आओ, हम दोनों एक किले का निर्माण करें.' कोई भी लीडर भले ही व्यक्तिगत तौर पर जितना भी प्रतिभावान और सक्षम हो, परंतु एक कुशल टीम के बिना वह अपने लक्ष्यों को प्राप्त नहीं कर सकता. इसीलिए विभिन्न उतार-चढ़ाव के बावजूद विविध लक्ष्यों को हासिल करने के लिए सामूहिक कार्य की भावना होना अत्यावश्यक है. सफलता पाने के लिए एकजुट होकर कार्य करना होगा. प्रबंधन में 'समय प्रबंधन' अत्यावश्यक है. लेखक का कहना है कि चाणक्य की शताब्दियों पुरानी कृति 'अर्थशास्त्र' आज भी अर्थपूर्ण है.

प्रशिक्षण : लेखक ने अपनी पुस्तक में तीसरे सिद्धांत पर प्रकाश डाला है, वह है प्रशिक्षण. यदि बच्चों का विषय लेते हैं तो, उनके लिए मात्र डिग्री पर्याप्त नहीं है परंतु बाह्य जगत का व्यावहारिक ज्ञान पाना भी आवश्यक है. उदाहरण के लिए आज हम अपने आसपास देखते हैं कि कुछ विद्यार्थी ऐसे होते हैं, जो पढ़ाई के विषय का अच्छा ज्ञान रखते हैं, लेकिन व्यावहारिक ज्ञान कुछ भी नहीं, परंतु कर्मचारियों की स्थिति ऐसी नहीं होनी चाहिए. चाणक्य ने कहा था विज्ञान का ज्ञान प्राप्त कर व्यावहारिकता में शून्य अनुभव रखनेवाला व्यक्ति संगठन के दायित्वों के निर्वाह में अक्षम होगा. अत: कर्मचारियों को प्रशिक्षण प्रदान करने से उन्हें सक्षम कर्मचारी बना सकते हैं. यह जानकारी सैकड़ों वर्ष पहले ही दी गई थी.

पुस्तक को पढ़ने के पश्चात ऐसा लगता है कि प्राचीन काल में चाणक्य जैसे महान बुद्धिमान द्वारा रचित नीतियां आज के आधुनिक समय में प्रबंधन लीडरों के लिए अत्यंत लाभदायक हैं. इस पुस्तक में लेखक ने हर पृष्ठ में चाणक्य नीतियों का उल्लेख किया है.

मेरे व्यक्तिगत विचार से यह पुस्तक बेहद प्रयोजनकारी है. पूरी पुस्तक चाणक्य की सार्थक नीतियों और स्रोतों से भरी हुई है जो आज के आधुनिक समाज का दर्पण है. इस पुस्तक की रचना में लेखक का प्रयास अत्यंत सफलदायक है. यह पढ़ने योग्य है और इसमें उल्लिखित बातें समझने योग्य हैं.

– कल्पना बाई एच ए
प्रबंधक
क्षेत्रीय कार्यालय, मैसूरु

विविध आयोजन

नागपुर क्षेत्र की त्रैमासिक पत्रिका का विमोचन

03 अक्तूबर 2020 को क्षेत्र की प्रथम त्रैमासिक पत्रिका 'संतरानगरी – वृत्तांत ज़ीरो माइल से' का विमोचन अंचल प्रमुख ने किया. इस अवसर पर क्षेत्रीय प्रबंधक, उप क्षेत्रीय प्रबंधक तथा कार्यालय के सभी स्टाफ उपस्थित थे.

क्षेत्रीय कार्यालय, दुर्ग द्वारा पुरस्कार वितरण समारोह का आयोजन

क्षेत्रीय कार्यालय, दुर्ग द्वारा हिन्दी माह के दौरान आयोजित प्रतियोगिता के पुरस्कार विजेताओं के लिए पुरस्कार वितरण समारोह का आयोजन 03 अक्तूबर 2020 को किया गया. क्षेत्रीय प्रबन्धक श्री अरविंद काटकर एवं उप क्षेत्रीय प्रबन्धक श्री अमित बेनर्जी ने प्रतियोगिताओं के प्रतिभागियों को पुरस्कृत किया गया.

जबलपुर क्षेत्र में पुरस्कार वितरण समारोह का आयोजन

जबलपुर क्षेत्र में 13 अक्तूबर 2020 को क्षेत्रीय प्रमुख श्री मदन पाल सिंह की अध्यक्षता में हिन्दी दिवस के दौरान आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कृत किया गया. इस अवसर पर क्षेत्र के उप क्षेत्रीय प्रमुख श्री राजीव कुमार, मुख्य प्रबन्धक एवं कार्यालय के सभी स्टाफ सदस्य तथा विजेता प्रतिभागी उपस्थित रहे.

मुजफ्फरपुर क्षेत्र द्वारा राजभाषा परिचर्चा कार्यक्रम आयोजित

क्षेत्रीय कार्यालय, मुजफ्फरपुर द्वारा 25 नवंबर 2020 को क्षेत्रीय प्रमुख श्री बाणीब्रत बिश्वास की अध्यक्षता में राजभाषा परिचर्चा कार्यक्रम का आयोजन किया गया. इस अवसर पर उप क्षेत्रीय प्रमुख श्री सी.बी.पी. वर्मा भी उपस्थित रहे.

बड़ौदा अंचल की पत्रिका का विमोचन

बड़ौदा अंचल की पत्रिका 'बड़ौदा दर्पण' के सितम्बर 2020 अंक का विमोचन महाप्रबंधक श्री ए. कुमार खोसला द्वारा 27 अक्तूबर 2020 को किया गया. इस अवसर पर उप अंचल प्रमुख श्री पी. एस. नेगी तथा अन्य कार्यपालकगण एवं स्टाफ सदस्यगण उपस्थित रहे.

एर्णाकुलम, अंचल की पत्रिका का विमोचन

एर्णाकुलम, अंचल की पत्रिका 'हरितम' के प्रवेशांक का विमोचन अंचल प्रमुख श्री के वेंकटेसन द्वारा 20 नवंबर 2020 को किया गया. इस अवसर पर उप अंचल प्रमुख श्री जियाद रहमान, क्षेत्रीय प्रमुख, एर्णाकुलम क्षेत्र श्री बाबु रवि शंकर, क्षेत्रीय प्रमुख,त्रिश्शूर क्षेत्र श्री जी गोपकुमार, उप क्षेत्रीय प्रमुख, एर्णाकुलम क्षेत्र श्री टोनि एम वेम्पिल्ली, उप क्षेत्रीय प्रमुख त्रिश्शूर क्षेत्र श्रीमति लक्ष्मी आनंद उपस्थित रहे.

औरंगाबाद क्षेत्र में राजभाषा डेस्क प्रशिक्षण का आयोजन

21 दिसंबर 2020 को क्षेत्रीय कार्यालय, औरंगाबाद में प्रमुख विभागों में राजभाषा हिंदी के प्रभावी प्रयोग के लिए डेस्क प्रशिक्षण दिया गया.

बड़ौदा मेधावी विद्यार्थी सम्मान

28 अक्तूबर 2020 को क्षेत्रीय कार्यालय, आणंद द्वारा बैंक की 'बड़ौदा मेधावी विद्यार्थी सम्मान योजना' के अंतर्गत वर्ष 2018-19 एवं 2019-20 हेतु सरदार पटेल विश्वविद्यालय के मेधावी विद्यार्थियों को सम्मानित किया गया. इस अवसर पर विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग के सहायक आचार्य डॉ. अनिला मिश्रा एवं आणंद क्षेत्र के क्षेत्रीय प्रमुख श्री अरविंद विमल एवं उप क्षेत्रीय प्रमुख श्री एस. पी. शारदा उपस्थित रहे.

हिन्दी माह समापन समारोह

दिनांक 22 अक्तूबर 2020 को, क्षेत्रीय कार्यालय, कोयम्बत्तूर द्वारा ''हिन्दी माह-सितंबर 2020'' का समापन समारोह मनाया गया. कार्यक्रम की अध्यक्षता क्षेत्रीय प्रमुख श्री के.आर. कगदाल ने की. इस दौरान सहायक महाप्रबंधक (प्रमुख, एसएमई, कोयम्बत्तूर) श्री पद्मनाभ अय्यर भी मौजूद रहे.

प्राज्ञ और प्रबोध परीक्षाओं हेतु रेफ्रेशर कोर्स

दिनांक 23 नवंबर 2020 क्षेत्रीय कार्यालय, मदुरै द्वारा हिन्दी शिक्षण योजना के अंतर्गत संचालित बैंकिंग प्राज्ञ और प्रबोध परीक्षाओं हेतु स्टाफ सदस्यों के लिए रेफ्रेशर कोर्स का आयोजन किया गया. इस दौरान पुस्तकों के पाठों से संभावित प्रश्नों समेत वाइवा (मौखिक) परीक्षा की भी तैयारी करवाई गई.

अंचल कार्यालय, अहमदाबाद द्वारा अखिल भारतीय वेबिनार का आयोजन

अंचल कार्यालय, अहमदाबाद द्वारा 01 अक्तूबर 2020 को बैंक में 'मानव संसाधन प्रबन्धन के आयाम -वर्तमान व भविष्य' विषय पर अखिल भारतीय वेबिनार का आयोजन किया गया. कार्यक्रम की अध्यक्षता उप महाप्रबंधक श्री मोतीलाल मीणा ने की. इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में महाप्रबन्धक (मां.सं.प्र.) श्री प्रकाशवीर राठी तथा विशेष अतिथि सहायक महाप्रबंधक (राजभाषा एवं संसदीय समिति) सुश्री पारूल मशर, उपस्थित रहीं तथा अतिथि वक्ता के रूप में सेवानिवृत्त महाप्रबन्धक (मा.स.प्र.) श्री कमलेश पटेल उपस्थित रहे. सहायक महाप्रबंधक (मा.सं.प्र.) श्री अरूण कुमार ने सभी उपस्थितों का आभार व्यक्त किया गया.

राजकीय प्रयोजनों में राजभाषा हिंदी के प्रचार प्रसार हेतु गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग की पहल

राजभाषा संकल्प 1968 के अनुसार हमें हिन्दी के प्रचार एवं विकास की गति को और तीव्र करना है. एक अधिक गहन एवं व्यापक कार्यक्रम तैयार उसका कार्यान्वयन करना है. भारत सरकार की राजभाषा नीति प्रेरणा, प्रोत्साहन एवं सद्भावना पर आधारित है. इसी संदर्भ में माननीय प्रधानमंत्री जी द्वारा स्मृति विज्ञान (Mnemonics) से प्रभावित होकर राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय ने राजभाषा हिंदी के सफल कार्यान्वयन के लिए नीचे दिए गए 12 'प्र' की रूपरेखा बनाई है:-

1) प्रेरणा (Inspiration and Motivation)
2) प्रोत्साहन (Encouragement)
3) प्रेम (Love and Affection)
4) प्राइज अर्थात् पुरस्कार (Rewards)
5) प्रशिक्षण (Training)
6) प्रयोग (Usage)
7) प्रचार (Advocacy)
8) प्रसार (Transmission)
9) प्रशासन एवं प्रबंधन (Administration and Management)
10) प्रमोशन (पदोन्नति) (Promotion)
11) प्रतिबद्धता (Commitment)
12) प्रयास (Efforts)

हिन्दी के संवर्धन के लिए अंतिम दो 'प्र' प्रतिबद्धता और प्रयास पर विशेष बल देने की महती आवश्यकता है.

- संवैधानिक दायित्वों को पूर्ण करते हुए राजभाषा हिंदी को और अधिक सरल, सहज, सुगम एवं सुबोध बनाने के लिए राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय दृढ़ संकल्प और निरंतर प्रयासरत है. विभाग का मानना है कि राजकीय प्रयोजनों में हिंदी की गति को तीव्र करने के लिए यह एक आवश्यक परिस्थिति (Necessary Condition) है. इस दिशा में और गति देने के लिए मंत्रालय / विभाग/ सरकारी उपक्रम/ राष्ट्रीयकृत बैंक के शीर्ष नेतृत्व (माननीय मंत्री महोदय, सचिव, अध्यक्ष और महाप्रबंधक) की प्रतिबद्धता और प्रयास पर्याप्त परिस्थिति (Sufficient Condition) है.

- हाल में ही 02-05 नवंबर 2020 को संपन्न भारत सरकार की केंद्रीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति (COLIC) की बैठक में यह निष्कर्ष निकल कर आया कि यदि शीर्ष नेतृत्व हिंदी के प्रगामी/ उत्तरोत्तर ही नहीं अपितु अधिकतम प्रयोग के लिए स्वयं मूल कार्य हिंदी में करे जिसके लिए राजभाषा नियम, 1976 का नियम 12 भी इंगित करता है, इससे हिंदी के लिए एक अनुकूल और उत्साहवर्धक वातावरण बनेगा और बीच-बीच में हिंदी के कार्यान्वयन की निगरानी (monitoring) भी की जाए तब हिंदी की विकास यात्रा और तीव्र होगी. हमारी संसदीय राजभाषा समिति ने भी हमें इस दिशा में उपयुक्त सुझाव और दिशानिर्देश देने की वकालत की है.

- उपरोक्त के आलोक में राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय आपसे आग्रह करता है:

क. हर माह में एक बार अध्यक्ष अपनी अध्यक्षता में जब वरिष्ठ अधिकारियों की बैठक करते हैं तब इसमें हिंदी में काम-काज की प्रगति और राजभाषा नियमों के कार्यान्वयन का मद भी अवश्य रखें और चर्चा करें.

ख. अपने विभाग/ संस्थान में अपने प्रशासनिक प्रमुख को ही हिंदी कार्यान्वयन का उत्तरदायित्व दें और हर तिमाही में उनकी अध्यक्षता में विभागीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति (OLIC) की बैठक करें.

प्रधानमंत्री जी के 'आत्मनिर्भर भारत' स्थानीय के लिए मुखर हों (Self Reliant India- Be vocal for Local) के अभियान को आगे बढ़ाते हुए राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय भारत में सीडैक, पुणे के सौजन्य से निर्मित स्मृति आधारित अनुवाद टूल 'कंठस्थ' का विस्तार कर रहा है जिससे अनुवाद के क्षेत्र में समय की बचत करने के साथ-साथ एकरूपता और उत्कृष्टता भी सुनिश्चित हो. किसी विभाग/ संस्थान में अपने अधिकारियों को 'कंठस्थ' का प्रशिक्षण देने के लिए इच्छुक कर्मचारी प्रशिक्षण पा सकते हैं.

चित्र बोलता है

1
कोविड में सभी तन्हा हैं, मजदूर की है अपनी अलग कहानी.
बच्चे हैं प्यारे, मोबाइल भी है प्यारा,
सब संग चले घर वापिस, यही है ज़िन्दगानी.

– सरगुणम दण्डपानी
वरिष्ठ प्रबंधक, सरकारी संपर्क विभाग, नई दिल्ली

2
उम्मीदों का दीया जलाए,
हौसलों से चलता जाए,
रास्ता लंबा सही पर
साथ चलने का सकून तो आए.

– प्रखर कुमार
वरिष्ठ प्रबंधक (विपणन)
बड़ौदा कॉर्पोरेट सेंटर, मुंबई

3
कलेजे के टुकड़े हैं कंधो का बोझ कैसे लगे
उज्जवल हो भविष्य इनका, पांव में कांटा न चुभे
राह की हर कठिनाई मुस्कुराकर लगाए जो गले
हाथों में वक्त का आईना, दर्पण लिए एक पिता चले

– शिवेता पंडित
नारवाल, जम्मू, जम्मू एवं कश्मीर

4
हाथों में तकनीक लिए, कंधों पर बचपन उठाया है.
परिस्थितयों ने फिर इंसान को,
राहों का मुसाफिर बनाया है ।

– शिखा श्रीवास
अधिकारी, गाडरवारा शाखा (म.प्र.)

5
कांधे पर बच्चे, दिल में है प्यार.
इस वैश्विक महामारी में, अपनों का है साथ.

– युक्ता चौधरी
वरिष्ठ प्रबंधक, सरकारी संपर्क विभाग, नई दिल्ली

6
ज़िम्मेदारी और मजबूरी का बोझ उठाए कांधों पर,
मंजिल दूर सही पर रुकना न तू सही मगर.

– अपूर्व माथुर
मुख्य प्रबन्धक (विपणन),
बड़ौदा कॉर्पोरेट सेंटर, मुंबई

7
लेकर कंधों पर भारत का भविष्य,
निकला हूं मंज़िल की ओर.
कहीं भटक न जाऊं रास्ता,
इसलिए देख रहा हूं जीपीएस की ओर.

– अभिषेक जैन
प्रबंधक, बड़ौदा सन टावर, मुंबई

8
भोला सा मन मेरा ये सोचता है,
पिता मेरा फोन में क्या खोजता है.
पिता तुम्हारे साथ खेलने को दिल मेरा करता है,
फोन की जगह मैं ले लूं ऐसा क्यू लगता है.

– चांदनी नीमा
अधिकारी, पुणे जिला क्षेत्रीय कार्यालय

9
निकल पड़ा हूँ राह पर बोझ उठाए परिवार का
खोज रहा हूँ भविष्य अपना पता नहीं रोजगार का

– अनुराग आनंद
प्रबंधक, क्षेत्रीय कार्यालय, खेड़ा

10
सूने मन में बूने सपना, अपने दो-दो लाल.
कंधे पर एक बैठा मुन्ना, एक गोद में प्यार.
मुन्ने को भी दुनिया दिखती, नया नया संसार.
दोनों के मन एक ही बातें, पिता पुत्र दिलहार.

– प्रवीण कुमार झा,
नोएडा, उत्तर प्रदेश

प्रथम तीन विजेताओं को पुरस्कार स्वरूप रू. 500 के गिफ्ट कार्ड / राशि दी जा रही है

'चित्र बोलता है' के स्थायी स्तंभ के अंतर्गत जुलाई-सितंबर, 2020 अंक में प्रकाशित चित्र पर पाठकों से काफी उत्साहवर्धक प्रतिक्रयाएं/रचनाएं प्राप्त हुई हैं. पाठकों से अनुरोध है कि इस शृंखला में प्रकाशित इस चित्र पर आधारित अपने विचार पद्य के रूप में हमें अधिकतम चार पंक्तियों में लिख कर भेजें. श्रेष्ठ तीन रचनाओं को पुरस्कृत (प्रत्येक को रू. 500/-) किया जाएगा और उन्हें हम 'अक्षय्यम्' के आगामी अंक में भी प्रकाशित करेंगे. पाठक अपने विचार हमें डाक से या ई-मेल पर अपने व्यक्तिगत विवरण और स्वरचित घोषणा सहित 30 अप्रैल 2021 तक भेज सकते हैं.

बड़ौदा राजभाषा पुरस्कार : शील्ड वितरण समारोह

वित्तीय वर्ष 2019–20 के दौरान राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में श्रेष्ठ कार्यनिष्पादन करने वाले कॉर्पोरेट / प्रधान कार्यालय के विभागों, अंचल कार्यालयों, क्षेत्रीय कार्यालयों, बड़ौदा अकादमियों, अंचलों की श्रेष्ठ पत्रिकाओं, बैंक के संयोजन में कार्यरत नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों को बड़ौदा राजभाषा शील्ड प्रदान किए गए. हम विभिन्न श्रेणियों में प्रदत्त पुरस्कारों की झलकियां पत्रिका के पाठकों के लिए प्रस्तुत कर रहे हैं.

कार्यपालक निदेशक श्री अजय के. खुराना से पुरस्कार ग्रहण करते हुए महाप्रबंधक श्री सुधाकर डी. नायक एवं सुविधा प्रबंधन की टीम.

पुरस्कार ग्रहण करते हुए क्षेत्रीय प्रमुख, बड़ौदा जिला क्षेत्र, श्री संजीव आनंद

कार्यपालक निदेशक श्री अजय के. खुराना से पुरस्कार ग्रहण करते हुए मुख्य महाप्रबंधक (मार्केटिंग एवं ब्रांडिंग) श्री पुरुषोत्तम तथा टीम मार्केटिंग.

पुरस्कार ग्रहण करते हुए महाप्रबंधक, वित्तीय समावेशन विभाग, प्र.का., बड़ौदा श्री एम वी मुरलीकृष्ण

पुरस्कार ग्रहण करते हुए करेंसी चेस्ट विभाग, प्र.का., बड़ौदा के मुख्य प्रबंधक श्री मनोज कुमार

पुरस्कार ग्रहण करते हुए बड़ौदा अकादमी, बड़ौदा के मुख्य प्रबंधक श्री गौतम कुमार

पुरस्कार ग्रहण करते हुए अंचल प्रमुख, बड़ौदा अंचल श्री ए कुमार खोसला

बना दे चितेरे

बना दे चितेरे,
मेरे लिए एक चित्र बना दे।
पहले सागर आँक
विस्तीर्ण प्रगाढ़ नीला,
ऊपर हलचल से भरा,
पवन के थपेड़ों से आहत,
शत-शत तरंगों से उद्वेलित,
फेनोर्मियों से टूटा हुआ,
किन्तु प्रत्येक टूटन में
अपार शोभा लिये हुए,
चंचल उत्कृष्ट,
-जैसे जीवन।
हाँ, पहले सागर आँक
नीचे अगाध, अथाह,
असंख्य दबावों, तनावों,
खींचों और मरोड़ों को
अपनी द्रव एकरूपता में समेटे हुए,
असंख्य गतियों और प्रवाहों को
अपने अखण्ड स्थैर्य में समाहित किये हुए
स्वायत्त,
अचंचल
-जैसे जीवन....

सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय'